जैन विश्व भारती

मंत्री प्रतिवेदन

2015-16

जैन विश्व भारती

पोस्ट : ताडबूं - 341306, जिला : नागौर (राजस्थान)

फोन : + 91-1581-226080/224671, फैक्स : 227280

ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com ■ वेबसाईट : www.jvbharati.org

JPC - jaipur@jpcindia.com

आचार्यश्री महाश्रमण

अर्हम्

जैन विश्व भारती एक गौरवशाली संस्था है। उसके द्वारा जैन विद्या, शिक्षा, साहित्य, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान जैसी विभिन्न महत्वपूर्ण गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी और परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी का महनीय मार्गदर्शन इस संस्था को प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय उसके साथ जुड़ा हुआ है। लाडनूं स्थित जैन विश्व भारती परिसर मुनिवृन्द, समणीवृन्द और मुमुक्षुवृन्द का भी आवास स्थल बना हुआ है।

तेरापंथ समाज मानों इस माने भी भाग्यशाली है कि उसके पास इतनी बड़ी संस्था है। यह संस्था आध्यात्मिक आरोहण करती रहे तथा समाज को आध्यात्मिक पोषण देती रहे। शुभाशंसा।

गुवाहाटी (असम) **आचार्य महाश्रमण**

2 सितम्बर, 2016

पर्युषण एवं संवत्सरी महापर्व के अवसर पर
सभी को सहृदय क्षमायाचना

खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु में।
मेत्ती में सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई।।

जैन विश्व भारती

पोस्ट : लाडनूं– 341306, जिला नागौर (राजस्थान)
संपर्क सूत्र : 01581–226025 / 226080 / 224671
E-mail : jainvishvabharati@yahoo.com

जैन विश्व भारती की 45वीं वार्षिक साधारण सभा की सूचना

मान्यवर,

सादर जय जिनेन्द्र,

जैन विश्व भारती की 45वीं वार्षिक साधारण सभा शनिवार दिनांक 24 सितम्बर 2016 को मध्याह्न 2.00 बजे आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास स्थल, धारापुर, गुवाहाटी (असम) में होगी, जिसमें निम्नलिखित विषयों पर विचार किया जाएगा–

1. जैन विश्व भारती की 44वीं वार्षिक साधारण सभा की कार्यवाही का पठन और स्वीकृति।
2. जैन विश्व भारती के वर्ष 2015–16 के मंत्री के वार्षिक प्रतिवेदन पर विचार एवं स्वीकृति।
3. जैन विश्व भारती के दिनांक 01 अप्रैल 2015 से 31 मार्च 2016 तक के हिसाब परिक्षक द्वारा अंकेक्षित आय–व्यय लेखा एवं संतुलन पत्र का प्रस्तुतीकरण तथा स्वीकृति।
4. आगामी दो वर्षों के लिए जैन विश्व भारती के अध्यक्ष, मुख्य न्यासी एवं सात न्यासीगण तथा बोर्ड ऑफ आरबीट्रेटर के तीन सदस्यों का चुनाव।
5. आगामी एक वर्ष हेतु अंकेक्षक की नियुक्ति।
6. आए हुए प्रस्तावों एवं सुझावों पर विचार।
7. विविध– अध्यक्ष महोदय की अनुमति से।

जैन विश्व भारती की वार्षिक साधारण सभा में सभी सदस्यों की उपस्थिति सादर प्रार्थित है। कोरम के अभाव में स्थगित सभा उसी दिन और उसी स्थान पर आधा घण्टे पश्चात् आयोजित होगी।

भवदीय

अरविन्द गोठी
मंत्री

दिनांक : 02 सितम्बर 2016

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष और मंत्री एवं उनके कार्यकाल

अध्यक्ष

क्र. सं.	नाम	कार्यकाल
1.	श्री मोहनलाल बांठिया	1970–72
2.	श्री खेमचन्द सेठिया	1972–76, 1984–90
3.	श्री सूरजमल गोठी	1976–79
4.	श्री श्रीचन्द रामपुरिया	1979–81
5.	श्री बिहारीलाल जैन	1981–84
6.	श्री गुलाबचन्द चिण्डालिया	1990–92, 1997–2000
7.	श्री श्रीचन्द बैंगानी	1992–1994
8.	श्री धरमचन्द चौपड़ा	1994–1996
9.	श्री चैनरूप भंसाली	1996–1997
10.	श्री मूलचन्द बोथरा	2000–2002
11.	श्री बुधमल दूगड़	2002–2004
12.	श्री सिद्धराज भंडारी	2004–2006
13.	श्री सुरेन्द्र कुमार चोरड़िया	2006–2012
14.	श्री ताराचन्द रामपुरिया	2012–2014
15.	श्री धरमचन्द लुंकड़	2014–2016

मंत्री

क्र. सं.	नाम	कार्यकाल
1.	श्री सूरजमल गोठी	1970–72
2.	श्री महावीरराज गेलड़ा	1972–73
3.	श्री सम्पतराज भूतोड़िया	1973–77
4.	श्री श्रीचन्द बैंगानी	1977–80, 1983–92
5.	श्री श्रीचन्द सुराणा	1980–81
6.	श्री शंकरलाल मेहता	1981–83
7.	श्री झूमरमल बैंगानी	1992–94
8.	श्री ताराचन्द रामपुरिया	1994–96, 1997–2000
9.	श्री हनुमानमल चिण्डालिया	1996–1997
10.	श्री गुलाबचन्द चिण्डालिया	2000–2002
11.	श्री भागचन्द बरड़िया	2002–2004
12.	श्री नरेन्द्र छाजेड़	2004–2006
13.	श्री भीखमचन्द पुगलिया	2006–2010
14.	श्री जितेन्द्र नाहटा	2010–2012
15.	श्री बंशीलाल बैद	2012–2014
16.	श्री अरविन्द गोठी	2014–2016

जैन विश्व भारती

(सत्र 2014–2016)

कुलपति

श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी	दिल्ली

संचालिका समिति

पदाधिकारी

क्रम सं.	नाम	स्थान	पद
1.	श्री धरमचन्द लुंकड़	चेन्नई	अध्यक्ष
2.	श्री ताराचन्द रामपुरिया	लाडनूं	निवर्तमान अध्यक्ष
3.	श्री मनोज कुमार लुनिया	शिलौंग	वरिष्ठ उपाध्यक्ष
4.	श्री जे. गौतमचन्द सेठिया	चेन्नई	उपाध्यक्ष
5.	श्री जीवनमल जैन (मालू)	बंगाईगांव	उपाध्यक्ष
6.	श्री मदनचन्द दूगड़ 'जौहरी'	मुम्बई	उपाध्यक्ष
7.	श्री संजय खटेड़	दिल्ली	उपाध्यक्ष
8.	श्री अरविन्द गोठी	दिल्ली	मंत्री
9.	श्री गौरव जैन मांडोत	जयपुर	संयुक्त मंत्री
10.	श्री राजेश एम. जैन (मरलेचा)	चेन्नई	संयुक्त मंत्री
11.	श्री प्रमोद बैद	कोलकाता	कोषाध्यक्ष

संचालिका समिति सदस्य

क्रम सं.	नाम	स्थान
1.	श्री अभिषेक कोठारी	फरीदाबाद
2.	श्री अनिल धाकड़	मुम्बई
3.	श्री अशोक जैन	पुणे
4.	श्री बी. केवलचन्द मांडोत	चेन्नई
5.	श्री बाबूलाल गोलछा	गाजियाबाद
6.	श्री बाबूलाल सेखानी	अहमदाबाद
7.	श्री बजरंग कुमार सेठिया	सिलीगुड़ी
8.	श्री दानमल पोरवाल	भिलाई
9.	श्री दीपचन्द नाहर	बैंगलोर
10.	श्री जी. सुकनराज परमार	चेन्नई
11.	श्री गणपतराज डागा	चेन्नई
12.	श्री घीसूलाल बोहरा	चेन्नई
13.	श्री इन्दर कुमार बैंगानी	दिल्ली
14.	श्री जे. भैरूलाल जैन	चेन्नई
15.	श्री जसराज बुरड़	अहमदाबाद
16.	श्री जसराज मालू	दिल्ली
17.	श्री जेसराज सेखानी	दिल्ली
18.	श्री जेठमल मेहता	दिल्ली
19.	श्री कैलाश डागा	जयपुर
20.	श्री कमलसिंह खटेड़	दिल्ली
21.	श्री कुलदीप प्रकाश बैद	मुम्बई
22.	श्री लक्ष्मीपत दुधेड़िया	बैंगलोर
23.	श्री एम.महावीरचन्द राठौड़	चेन्नई
24.	श्री मांगीलाल छाजेड़	मुम्बई
25.	श्री मनोहरलाल हिरण	चेन्नई
26.	श्री नरेन्द्र बरमेचा	दिल्ली
27.	श्री पी. मोहन जैन (गादिया)	बैंगलोर
28.	श्री पांची जैन	दिल्ली
29.	श्री प्रमोद जैन	बरवाला
30.	श्री प्रवीण बरड़िया	लाडनूं
31.	श्री राजकुमार सुराणा	सिकन्दराबाद
32.	श्री राजेन्द्र प्रेमचन्द घोड़ावत	माधव नगर
33.	श्री राजेश कोठारी	चेन्नई
34.	श्री राजकरण बैद	चेन्नई
35.	श्री राकेश एस. कठोतिया	मुम्बई
36.	श्री रमेश कुमार पटावरी	इरोड़
37.	श्री रणजीत कुमार मालू	गुवाहाटी
38.	श्री सलिल लोढ़ा	मुम्बई
39.	श्री संजय भंसाली	सूरत
40.	श्री संजय कोठारी	रायपुर
41.	श्री शान्तिलाल गोलछा	जयपुर
42.	श्री सुनील एस. कच्छारा	डोम्बीवली
43.	श्रीमती सूरज बरड़िया	कोलकाता
44.	श्री सुरेन्द्र जैन (एडवोकेट)	भिवानी
45.	श्री सुरेशचन्द गोयल	कोलकाता
46.	श्री सुशील कुमार कुहाड़	दिल्ली
47.	श्री टी. अमरचन्द जैन	चेन्नई
48.	श्री वी. प्रेमराज जैन	बैंगलोर
49.	श्री विजयचन्द घोड़ावत	जयसिंगपुर
50.	श्री विमलचन्द रूणवाल	जयसिंगपुर
51.	श्री विमल कटारिया	बैंगलोर

न्यास मण्डल

क्रम सं.	नाम	स्थान	पद
1.	श्री पी. प्यारेलाल पितलिया	चेन्नई	मुख्य न्यासी
2.	श्री बी. रमेशचन्द बोहरा	चेन्नई	न्यासी
3.	श्री भागचन्द बरड़िया	लाडनूं	न्यासी
4.	श्री भंवरलाल कर्णावट	मुम्बई	न्यासी
5.	श्री भेरचन्द गोगड़	पाली–मारवाड़	न्यासी
6.	श्री ख्यालीलाल एम. तातेड़	मुम्बई	न्यासी
7.	श्री मूलचन्द नाहर	बैंगलोर	न्यासी
8.	श्री पुखराज बड़ोला	चेन्नई	न्यासी

पंच मण्डल

क्रम सं.	नाम	स्थान
1.	श्री बी. जुगराज नाहर	चेन्नई
2.	श्री भूरामल श्यामसुखा	इन्दौर
3.	श्री रूपचन्द दूगड़	मुम्बई

वित्त सलाहकार

क्रम सं.	नाम	स्थान
1.	श्री राजेश कोठारी	चेन्नई

परामर्शक मण्डल

क्रम सं.	नाम	स्थान
1.	श्री देवराज नाहर	बैंगलोर
2.	श्री दिलीप सुराणा	बैंगलोर
3.	श्री गौतमचन्द समदड़िया	चेन्नई
4.	श्री एन. तेजराज जैन (पुनमिया)	चेन्नई
5.	श्री रणजीतसिंह कोठारी	कोलकाता
6.	श्री एस. प्रसन्न जैन	दिल्ली
7.	श्री सुरेन्द्र कुमार चोरड़िया	कोलकाता
8.	श्री विमल भंडारी	मुम्बई

उपसमिति / विभाग

शिक्षा विभाग

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री मनोज कुमार लुनिया	राष्ट्रीय संयोजक
2.	श्री टी. अमरचन्द लुंकड़	राष्ट्रीय सह–संयोजक

शोध विभाग

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री मनोज कुमार लुनिया	संयोजक

साहित्य विभाग

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री मदनचन्द दूगड़ 'जौहरी'	राष्ट्रीय संयोजक
2.	श्री मांगीलाल छाजेड़	राष्ट्रीय सह–संयोजक

समण संस्कृति संकाय

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री मालचन्द बेगानी	विभागाध्यक्ष
2.	श्री निलेश कुमार बैद	निदेशक

जीवन विज्ञान विभाग

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री ख्यालीलाल एम. तातेड़	चेयरमैन
2.	श्री सुरेश कोठारी	राष्ट्रीय संयोजक

प्रेक्षा फाउण्डेशन

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री बी. रमेशचन्द बोहरा	चेयरमैन
2.	श्री राजेन्द्र मोदी	राष्ट्रीय संयोजक

मीडिया एवं प्रचार–प्रसार विभाग

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री महावीर भभूतमल सेमलानी	राष्ट्रीय संयोजक
2.	श्री संजयकुमार पारसमल वेदमेहता	राष्ट्रीय सह–संयोजक

वित्त विभाग

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री प्रमोद बैद	राष्ट्रीय संयोजक
2.	श्री राजेश कोठारी	राष्ट्रीय सह–संयोजक

जैन विश्व भारती, अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री राकेश बोहरा	अन्तर्राष्ट्रीय संयोजक

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री रणजीतसिंह कोठारी	चेयरमैन

महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री गौरव जैन माण्डोत	संयुक्त संयोजक
2.	श्री पन्नालाल पुगलिया	संयुक्त संयोजक

पुरस्कार चयन समिति

क्रम सं.	नाम	पद
1.	श्री जे. गौतमचन्द सेठिया	सदस्य
2.	श्री बी. रमेशचन्द बोहरा	सदस्य
3.	श्री गौरव जैन माण्डोत	सदस्य
4.	श्री धरमचन्द लुंकड़	पदेन सदस्य
5.	श्री अरविन्द गोठी	पदेन सदस्य

अध्यक्ष की कलम से

परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी, मातृहृदया साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी, आदरास्पद मुख्यनियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी, आदरास्पद 'मुख्य मुनि' मुनिश्री महावीरकुमारजी स्वामी, आदरास्पद 'साध्वीवर्या' साध्वीश्री संबुद्धयशाजी एवं समस्त चारित्रात्माओं को सादर सभक्ति वंदना।

जैन विश्व भारती की वार्षिक गतिविधियों का मंत्री प्रतिवेदन आप सबके हाथ में है। मंत्री महोदय ने टीम भावना को उजागर करने की दृष्टि से मंत्री प्रतिवेदन में पूरी टीम के द्वारा वर्ष भर में किये गये कार्यों का लेखा–जोखा प्रत्येक विभाग/प्रवृत्ति के अनुसार उसी संबंधित अधिकारी के नाम से प्रस्तुत किया है। इससे मंत्री महोदय का उदार एवं व्यापक दृष्टिकोण तो परिलक्षित होता ही है साथ ही टीम में कार्य करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपने दायित्व के कुशलतापूर्वक निर्वहन का सात्विक गौरव अनुभव होता है।

जो कार्य हुआ वह पूज्यप्रवर के पावन आशीर्वाद, चारित्रात्माओं का सतत आध्यात्मिक मार्गदर्शन, पूरी टीम का श्रम और संपूर्ण समाज के सहयोग से हो पाया है। मंत्री प्रतिवेदन में संपूर्ण वर्ष भर में संपादित कार्यों का लेखा–जोखा आपके सम्मुख है। कार्यकाल के द्वितीय वर्ष की संपन्नता के अवसर पर मैं जैन विश्व भारती की गतिविधियों व संपादित कार्यों की चर्चा न करता हुआ जिनके आशीर्वाद एवं पावन पथदर्शन से तथा जिनके सहयोग व सहभागिता से यह विकास यात्रा संपन्न हो रही है, उन सभी के प्रति कृतज्ञता व आभार के भाव व्यक्त करना चाहूंगा।

मैं सर्वप्रथम अनंत श्रद्धा सहित सादर कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रति, जिनका पावन आशीर्वाद और समय–समय पर पावन पथदर्शन मेरे लिए सतत ऊर्जा का स्रोत बना रहा।

मातृहृदया साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी, आदरास्पद 'मंत्री मुनि' मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी, आदरास्पद मुख्यनियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी, आदरास्पद 'मुख्य मुनि' मुनिश्री महावीरकुमारजी स्वामी एवं आदरास्पद 'साध्वीवर्या' साध्वीश्री संबुद्धयशाजी के प्रेरक मार्गदर्शन हेतु हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक आदरास्पद मुनिश्री कीर्तिकुमारजी, प्रेक्षाध्यान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कुमारश्रमणजी, जीवन विज्ञान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री योगेशकुमारजी के सतत महनीय मार्गदर्शन हेतु हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। जैन विश्व भारती संस्थान की पूर्व कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी एवं समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी के सतत प्रेरणादायी पथदर्शन हेतु हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। समस्त चारित्रात्माओं एवं समण–समणीवृंद के महनीय मार्गदर्शन हेतु कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं।

सभी सहयोगीगण का नामोल्लेख सहित आभार ज्ञापन मंत्री महोदय ने अपने मंत्री प्रतिवेदन में किया है। अतः मेरे साथ पूरी टीम का दायित्व है कि हम भी मंत्री महोदय के प्रति आभार ज्ञापित करें। मंत्री का पद संस्था का सबसे कार्यकारी पद होता है। संस्था के समस्त कार्यों का पर्यवेक्षण, व्यवस्था, समुचित क्रियान्विति आदि का दायित्व मंत्री का होता है। मंत्री श्री अरविन्द गोठी ने पूर्ण सजगता के साथ अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए संस्था के रोजमर्रा के कार्यों से मुझे निर्भार रखा, जिससे मैं संस्था के अन्य विकासमूलक कार्यों तथा योजनाओं को गति दे सका। मेरे अनन्य सहयोगी के रूप में संस्था की प्रत्येक गतिविधि पर अपनी सूक्ष्म दृष्टि रखते हुए विकास कार्य को गति प्रदान करने वाले जैन विश्व भारती के कर्मठ मंत्री श्री अरविन्द गोठी के प्रति मैं अपनी ओर से तथा पूरी टीम की ओर से विशेष रूप से आभार ज्ञापित करता हूं।

अन्य किसी का नामोल्लेख नहीं करता हुआ सभी पदाधिकारीगण, न्यासीगण, संचालिका समिति सदस्यगण, परामर्शकगण, पंचमण्डल सदस्यगण, पूर्व पदाधिकारीगण, विशेष आमंत्रित सदस्यगण, समस्त गतिविधियों/इकाईयों के राष्ट्रीय संयोजक, सह–संयोजक, चेयरमैन, विभागाध्यक्ष, निदेशक आदि के प्रति आदर सहित हार्दिक आभार ज्ञापित करता हूं, जिनके सहयोग, श्रम व सहभागिता से संस्था की गतिविधियों का विकास तथा विस्तार हुआ।

सभी अनुदानदाताओं के प्रति हार्दिक आभार, जिनके महत्वपूर्ण सहयोग से संस्था की विकास योजनाओं को गति प्राप्त हो सकी।

समस्त विभागों व इकाईयों में कार्यरत उन समस्त कर्मीगणों को साधुवाद, जिनके श्रम से संस्था ने विकास का नया सफर तय किया। उन सभी महानुभावों के प्रति आभार, जिनका ज्ञात–अज्ञात रूप से संस्था के विकास में सहयोग व सहभागिता प्राप्त हुई।

अंत में मैं पुनः सभी के प्रति आभार व धन्यवाद ज्ञापित करता हुआ संपूर्ण श्रावक–श्राविका समाज से सहृदय क्षमायाचना करता हूं। आप सभी का सहयोग जैन विश्व भारती को निरन्तर इसी प्रकार मिलता रहे, इसी मंगलभावना के साथ– **ओम अर्हम्।**

धमरचंद लुंकड़
अध्यक्ष

जैन विश्व भारती की 45वीं वार्षिक साधारण सभा पर प्रस्तुत प्रतिवेदन

आराध्य के श्रीचरणों में वंदन। परम श्रद्धेय महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के श्रीचरणों में भक्तिभरा वंदन। श्रद्धेया महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी, श्रद्धेया मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी, आदरास्पद 'मुख्य मुनि' मुनिश्री महावीरकुमारजी, आदरास्पद 'साध्वीवर्या' साध्वीश्री संबुद्धयशाजी एवं समस्त चारित्रात्माओं के श्रीचरणों में सविनय वंदन।

जैन विश्व भारती के सम्माननीय कुलपति श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी, सम्माननीय अध्यक्ष श्री धरमचंद लुंकड़, आदरणीय मुख्य न्यासी श्री प्यारेलाल पितलिया, सम्मानित पदाधिकारीगण, सम्मानित न्यासीगण, सम्मानित संचालिका समिति सदस्यगण एवं संस्था के सभी सम्मानित सदस्यगण को सादर जय जिनेन्द्र।

जैन विश्व भारती की 45वीं वार्षिक साधारण सभा पर आप सभी महानुभावों का स्वागत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने दिनांक 04 जून 2016 को असम के बरपथार नाम के छोटे से कस्बे में अप्रत्याशित घोषणाएं कर अपने कीर्तिमानों की प्रलम्ब श्रृंखला में दो अनुत्तर अवदान प्रदान किए। पूज्यप्रवर ने मुनि समुदाय में 'मुख्यमुनि' तथा साध्वी समुदाय में 'साध्वीवर्या' का पद सृजित कर तेरापंथ धर्मसंघ में नया इतिहास रचा है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हम परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा रचे गए इस स्वर्णिम इतिहास के साक्षी बने हैं। पूज्यप्रवर की इस दूरदर्शितापूर्ण घोषणा से चतुर्विध धर्मसंघ श्रद्धानत एवं कृतज्ञ है। मैं जैन विश्व भारती परिवार की ओर से 'मुख्यमुनि' पद पर प्रतिष्ठित आदरास्पद मुनिश्री महावीरकुमारजी एवं' साध्वीवर्या' पद पर प्रतिष्ठित आदरास्पद साध्वीश्री संबुद्धयशाजी के प्रति अनन्त आध्यात्मिक मंगलकामनाएं व्यक्त करता हूं।

जैन विश्व भारती: एक परिचय

गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के स्वप्नों की साकार प्रतिमान जैन विश्व भारती की स्थापना शिक्षा, शोध, साधना एवं सेवा के विशेष उद्देश्यों के साथ सन् 1970 में राजस्थान के नागौर जिले के लाडनूं नगर में हुई। प्राकृत एवं जैन दर्शन का उच्चस्तरीय अध्ययन व शोध संस्थान होने के अलावा इस संस्था ने अहिंसा प्रशिक्षण, जीवन विज्ञान व प्रेक्षाध्यान के अंतर्राष्ट्रीय केन्द्र के रूप में ख्याति अर्जित की है। जिस संस्था को गणाधिपति श्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने 'कामधेनु' के रूप में संकल्पित किया था तथा आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 'जय कुंजर' (विशालकाय हाथी) की उपमा से उपमित किया, उस जैन विश्व भारती ने लगभग साढ़े चार दशकों की कालयात्रा में जो उपलब्धियां अर्जित की हैं, वे निश्चित ही जैन विद्या विकास के क्षेत्र में मील की पत्थर हैं। इतिहास के पृष्ठों में इन्हें स्वर्णिम अक्षरों में अंकित किया जाएगा।

जैन विश्व भारती के संरक्षण में पल्लवित–पुष्पित जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) जैन विद्या एवं प्राच्य विद्या के विकास का समुन्नत केन्द्र है तथा संपूर्ण जैन समाज का गौरव व विद्या जगत् के लिए अमर अवदान है। जैन विश्व भारती के अन्तर्गत संचालित विमल विद्या विहार उच्च माध्यमिक विद्यालय, महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर एवं महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर से उत्तीर्ण होकर हजारों छात्र–छात्राएं नैतिक एवं आध्यात्मिक परिवेश में शिक्षा प्राप्त कर उच्च शिक्षा एवं सफल कैरियर के लिए तैयार हो रहे हैं। स्वस्थ समाज की संरचना हेतु 'जीवन विज्ञान' को आधुनिक शिक्षा प्रणाली के साथ समाविष्ट कर जैन विश्व भारती सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास की दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। 'समण संस्कृति संकाय' द्वारा जैन विद्या की शिक्षा के अन्तर्गत जैनत्व के संस्कारों के संरक्षण, आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा के विकास का अमूल्य कार्य हो रहा है।

'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला' द्वारा जन सामान्य की आरोग्य–सेवा में अपना योगदान दिया जा रहा है। संस्था द्वारा संचालित 'प्रेक्षाध्यान' की समस्त गतिविधियां– जिनके द्वारा न केवल भारत के अपितु समस्त विश्व के अनेक अध्यात्म–साधक लाभ प्राप्त कर आत्मिक शांति का अनुभव कर रहे हैं। साहित्य के अन्तर्गत लगभग 600 पुस्तकों का प्रकाशन जैन वाङ्मय के इतिहास में अभिवृद्धि का चिह्न बन गया है। संपूर्ण मूल आगमों के समीक्षात्मक संस्करण का

प्रकाशन वाचना प्रमुख गणाधिपति श्री तुलसी एवं मुख्य सम्पादक आचार्यश्री महाप्रज्ञजी तथा वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी के वे अमर सृजन हैं जो संभवतः शताब्दियों तक अपने ज्ञानालोक से संपूर्ण मानव जाति को भगवान महावीर के उन शाश्वत स्वरों का अवबोध प्रदान करते रहेंगे। इसी के साथ अधिकांश आगमों के सभाष्य (सटिप्पण) हिन्दी अनुवाद (संस्कृत छाया–रहित) का प्रकाशन कर संस्था ने जैन जगत की अपूर्व सेवा का लाभ प्राप्त किया है।

विभिन्न गतिविधियों के साथ–साथ सुरम्य हरीतिमा से सुशोभित परिसर का विकास जैन विश्व भारती के बाह्य सौन्दर्य की मुखर कहानी कह रहा है। रमणीय प्राकृतिक छटा, शुद्ध वातावरण, शांत परमाणु इस तपोभूमि की अनमोल धरोहर है।

जैन विश्व भारती के वर्तमान में 1 संस्थापक सदस्य, 30 विशिष्ट सदस्य एवं 1138 आजीवन सदस्य हैं। आलोच्य अवधि में 21 नये आजीवन सदस्य बने। जैन विश्व भारती, सेवा, साधना, साहित्य, शोध, समन्वय एवं संस्कृति के सप्तसकार रूपी उद्देश्यों के साथ निरन्तर विकास की ओर अग्रसर है। संस्था के वर्ष 2015–16 (आलोच्य अवधि 25 जुलाई 2015 से 13 अगस्त 2016 तक) की गतिविधियों एवं विकास कार्यों का विवरण प्रस्तुत है–

शिक्षा

जैन विश्व भारती की स्थापना जिन उद्देश्यों को लेकर हुई थी उनमें से एक मुख्य प्रवृत्ति है– शिक्षा। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु यहां प्राथमिक से विश्वविद्यालय स्तर तक की समस्त शैक्षणिक गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। जैन विश्व भारती के संरक्षण में 'जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)' तथा उसके अन्तर्गत 'आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय' एवं जैन विश्व भारती के अन्तर्गत 'विमल विद्या विहार सीनियर सैकण्डरी स्कूल', 'महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर' एवं 'महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर' संचालित हैं।

भावी पीढ़ी में संस्कारों के संरक्षण तथा आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा के विकास की दृष्टि से 'समण संस्कृति संकाय' के अंतर्गत जैन विद्या की शिक्षा प्रदान की जाती है।

मनुष्य के बौद्धिक विकास के साथ मानसिक, भावनात्मक और चारित्रिक विकास हेतु आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने 'जीवन विज्ञान' की परिकल्पना की। ध्यान, योग एवं शिक्षण–प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षा का यह क्रांतिकारी प्रयोग वर्तमान में परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के आध्यात्मिक दिशा–निर्देशन में जैन विश्व भारती के अंतर्गत 'जीवन विज्ञान विभाग' द्वारा साकार हो रहा है।

जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय)

प्राच्य विद्याओं के अध्ययन, अनुसंधान एवं शोध के साथ जैन दर्शन, अहिंसा, शांति, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान के प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से सन् 1991 में स्थापित यह संस्थान एक अनूठे विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ है। जैन विश्व भारती संस्थान अपने अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के महनीय मार्गदर्शन एवं मातृ संस्था जैन विश्व भारती के संरक्षण में शिक्षा, शोध, प्रशिक्षण एवं प्रसार कार्य के क्षेत्र में गति से प्रगति की ओर अग्रसर है। संस्थान की स्थापना के समय स्नातकोत्तर स्तर पर 4 पाठयक्रम चालू थे जो क्रमशः बढ़ते–बढ़ते आज नियमित स्तर पर 42 तथा पत्राचार स्तर पर 17 कुल 59 शैक्षिक (स्नातक, स्नातकोत्तर डिप्लोमा तथा प्रमाण पत्र के) पाठयक्रम चल रहे हैं, जिनमें हजारों की संख्या में विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत पत्राचार के माध्यम से विश्वविद्यालय वर्तमान में स्नातकोत्तर स्तर पर 6 विषयों में एम.ए./एम.एस.सी. का पाठयक्रम संचालित कर रहा है। इसके अतिरिक्त पत्राचार में 7 सर्टिफिकेट कोर्स भी संचालित हो रहे हैं।

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत बी.एड. एवं एम.एड. का नियमित पाठ्यक्रम संचालित है। पत्राचार के सभी पाठ्यक्रम वर्ष 2015–16 में देश के विभिन्न 22 शहरों में संपर्क कक्षा केन्द्रों के माध्यम से संचालित किये गए। शैक्षणिक सत्र 2015–16

में नियमित पाठ्यक्रम के अन्तर्गत 429 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी (बी.एड़ व एम.एड़ को छोड़कर, क्योंकि इनकी परीक्षाएं अभी नहीं हुई है) और उनका परीक्षा परिणाम 100 प्रतिशत रहा। पत्राचार पाठ्यक्रम की परीक्षायें अभी चल रही है। वर्तमान में शोध कार्यों में 119 शोधार्थी विभिन्न विभागों में अध्ययनरत हैं एवं इस सत्र में कुल 24 शोधार्थियों को पी–एच.डी. उपाधि प्रदान की गई। अब तक 260 शोधार्थी संस्थान से पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं।

लाडनूं नगर के आसपास के 4 गांवों में महिला शिक्षा के विकास की दिशा में 'आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना' का कार्य चल रहा है। इस परियोजना को आर्थिक सहयोग अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल से प्राप्त हो रहा है, जिसको National Institute of Open Schooling (NIOS) से मान्यता प्राप्त है। आचार्य महाप्रज्ञ महिला सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र 5 गांवों में चल रहा है।

संस्थान की इस वर्ष की विशिष्ट उपलब्धियां इस प्रकार है–

जैन विश्व भारती संस्थान के नवम् दीक्षान्त समारोह का आयोजन

जैन विश्व भारती संस्थान का नवम् दीक्षान्त समारोह एवं संस्थान के रजत जयन्ती वर्ष समारोह के 'विराटनगर चरण' संयुक्त रूप से संस्थान के अनुशास्ता परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास स्थल, विराटनगर (नेपाल) दिनांक 04 अक्टूबर 2015 को आयोजित किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में नेपाल सरकार के वित्त मंत्री श्री रामसरण महंत उपस्थित रहे। कार्यक्रम में लगभग 2059 विद्यार्थियों को पीएच. डी., स्नातकोतर, स्नातक उपाधियां प्रदान की गई। इस अवसर पर श्री एन. सुगालचंद जैन एवं न्यायाधीश श्री दलवीर भण्डारी को डी.लिट्. की मानद उपाधि प्रदान की गई।

मातृ संस्था जैन विश्व भारती द्वारा जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) की रजत जयन्ती वर्ष समारोह का वर्षव्यापी आयोजन

जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के ढाई दशको की सफल विकास यात्रा की परिसम्पन्नता पर गत वर्ष दिनांक 20 मार्च 2015 से 20 मार्च 2016 तक 'रजत जयन्ती वर्ष समारोह' का वर्षव्यापी कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसके अन्तर्गत देश–विदेश के विभिन्न क्षेत्रों में समारोह आयोजित किये गए। मातृ संस्था जैन विश्व भारती द्वारा इस आयोजन की संपूर्ण जिम्मेदारी ली गई। गत वर्ष विभिन्न क्षेत्रों यथा– लाडनूं, चेन्नई, बैंगलोर, गंगाशहर, टमकोर, जयपुर आदि में आयोजित कार्यक्रमों का विवरण गत मंत्री प्रतिवेदन में उल्लेखित किया जा चुका है। आयोजन की इसी श्रृंखला में आलोच्य अवधि में देश–विदेश के विभिन्न क्षेत्रों में 'रजत जयन्ती वर्ष समारोह' के चरणों का आयोजन किया गया, जिनका विवरण निम्न प्रकार है–

- **ओड़िशा चरण :** रजत जयन्ती समारोह के वर्षव्यापी आयोजन के क्रम में 'ओड़िशा चरण' का आयोजन दिनांक 25 अगस्त 2015 को केसिंगा कॉलेज एवं तेरापंथ भवन, केसिंगा (ओड़िशा) में दो सत्रों में जैन विश्व भारती संस्थान की तत्कालीन कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी, समणी निर्देशिका मंजुप्रज्ञाजी व समणी स्वर्णप्रज्ञाजी के सान्निध्य में हुआ। कार्यक्रम के प्रथम सत्र के अन्तर्गत प्रातः 11.00 बजे से केसिंगा महाविद्यालय में **'राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण'** विषय पर **'वृहद् छात्र सम्मेलन'** का आयोजन महाविद्यालय के प्राचार्य श्री प्रदीप कुमार रथ की अध्यक्षता में हुआ, जिसमें जैन विश्व भारती संस्थान की तत्कालीन कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थी। इस कार्यक्रम में लगभग 800–1000 विद्यार्थियों की उपस्थिति रही।

  द्वितीय सत्र का कार्यक्रम **'ओड़िशा स्तरीय प्रबुद्ध सम्मेलन'** के रूप में सायं 5.00 बजे से तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ, जिसका विषय था– **'शिक्षा में मानवीय मूल्यों का समावेश'**। इस कार्यक्रम में ओड़िशा के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 1200 लोगों की उपस्थिति रही।

  आयोजन हेतु ओड़िशा में प्रवासित साध्वी सम्यक्प्रभाजी एवं केसिंगा में विराजित समणी निर्देशिका मंजुप्रज्ञाजी व

समणी स्वर्णप्रज्ञाजी की पूरे क्षेत्र में विशेष प्रेरणा व मार्गदर्शन रहा, एतदर्थ उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता। कार्यक्रम को सफल बनाने में ओड़िशा प्रान्तीय श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री केवलचंद जैन, कोषाध्यक्ष श्री केशवनारायण जैन, ओड़िशा चरण के संयोजक श्री तुलसी जैन आदि का विशेष सहयोग व श्रम रहा, इस हेतु उनके प्रति हार्दिक आभार। ओड़िशा प्रान्तीय सभा, केसिंगा की सभी संघीय संस्थाओं व अन्य सामाजिक संस्थाओं के वरिष्ठ पदाधिकारीगण तथा कार्यकर्तागण का पूर्ण सहयोग व सक्रिय सहभागिता रही। सभी के प्रति आभार।

- **दिल्ली चरण** : दिनांक 30 अगस्त 2015 को सायं 5.30 बजे से **'दिल्ली चरण'** का आयोजन यमुना स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स, योजना विहार, दिल्ली में सफलतापूर्वक हुआ। जैन विश्व भारती संस्थान की तत्कालीन कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी के पावन सान्निध्य एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह–सरकार्यवाह डॉ. कृष्णगोपालजी की अध्यक्षता में आयोजित उक्त कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. हर्षवर्धनजी, विशिष्ट अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, दिल्ली के चेयरमैन प्रो. वेदप्रकाशजी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में विख्यात भजन सम्राट श्री अनूप जलोटा ने अपनी सुमधुर भजनों की प्रस्तुति देकर उपस्थित सभी लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इसके अतिरिक्त श्री रवि जैन द्वारा भी संगीतमय प्रस्तुतियां दी गई। जैन विश्व भारती संस्थान के प्रेक्षाध्यान, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विद्यार्थियों द्वारा प्रेक्षाध्यान एवं योग की अद्भूत व आश्चर्यजनक प्रस्तुतियां देखकर लोगों ने ओम अर्हम् की ध्वनि से यमुना स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स के विशाल प्रांगण को गुंजायमान कर दिया।

  दिल्ली में विराजित आदरास्पद **'मंत्री मुनि'** मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी की विशेष प्रेरणा एवं पावन पथदर्शन तथा वहां विराजित 'शासनश्री' मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन', 'शासनश्री' मुनिश्री किशनलालजी, साध्वीश्री संघमित्राजी, साध्वीश्री रविप्रभाजी आदि मुनिवृंद व साध्वीवृंद का प्रेरक मार्गदर्शन इस कार्यक्रम की सफलता में विशेष योगभूत बना, एतदर्थ सभी चारित्रात्माओं के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। कार्यक्रम की रूपरेखा से लेकर इसकी विभिन्न व्यवस्थाओं एवं कार्यक्रम को सफल बनाने में तेरापंथी सभा, दिल्ली के अध्यक्ष 'शासनसेवी' श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी एवं अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी श्री संपतमल नाहटा का समय–समय पर मार्गदर्शन व सहयोग रहा, एतदर्थ हार्दिक आभार। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथियों की सहभागिता, प्रेस कॉन्फ्रेंस के आयोजन आदि व्यवस्थाओं में श्री राजकुमार नाहटा के विशेष श्रम व सहयोग हेतु हार्दिक आभार। दिल्ली चरण के संयोजक श्री सुखराज सेठिया, जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष श्री संजय खटेड़, संचालिका समिति सदस्य श्री कमलसिंह खटेड़, श्री इन्दर बैंगानी, श्री पांची जैन, श्री नरेन्द्र बरमेचा, जैन विश्व भारती संस्थान के प्रबंध मंडल के सदस्य श्री बुधसिंह सेठिया तथा श्री राजकुमार नाहटा, श्री सुरेन्द्र जैन घोसल, श्री पदमचंद जैन, श्री नीतेश बैद आदि का उल्लेखनीय श्रम व सहयोग रहा, इस हेतु सभी के प्रति हार्दिक आभार।

- **सिरियारी चरण** : आचार्यश्री भिक्षु के 213वें चरमोत्सव पर भिक्षु चरमोत्सव तथा जैन विश्व भारती संस्थान के रजत जयन्ती समारोह के **'सिरियारी चरण'** का आयोजन जैन विश्व भारती एवं आचार्यश्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 26 सितम्बर 2015 को महाप्रज्ञ भवन, भिक्षु समवसरण, सिरियारी में हुआ। कार्यक्रम में जैन विश्व भारती संस्थान की तत्कालीन कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ। सम्मानित अतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उपमुख्य सचेतक श्री मदनसिंह राठौड़, पूर्व आयकर आयुक्त श्री डी.सी. सिंघल, मारवाड़ जंक्शन विधायक श्री केशाराम चौधरी, आचार्यश्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान, सिरियारी के अध्यक्ष श्री मूलचंद नाहर, सिरियारी ठाकुर श्री दिलीप सिंह, श्री देवराज नाहर आदि उपस्थित रहे। आयोजन को सफल बनाने में सिरियारी चरण के संयोजक एवं आचार्यश्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान के अध्यक्ष श्री मूलचंद नाहर सहित समस्त पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं का उल्लेखनीय श्रम व योगदान रहा, इस हेतु सभी के प्रति हार्दिक आभार।

- **मुंबई चरण** : दिनांक 11 अक्टूबर 2015 को सायं 7.00 बजे से **'मुंबई चरण'** का आयोजन बिड़ला मातोश्री सभागार, मरीन लाईन्स, मुंबई में सफलतापूर्वक आयोजित हुआ। जैन विश्व भारती संस्थान की तत्कालीन कुलपति समणी

चारित्रप्रज्ञाजी के पावन सान्निध्य एवं महाराष्ट्र सरकार के पूर्व मंत्री श्री गणेश नाईक की अध्यक्षता में आयोजित उक्त कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान सरकार की जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी, विशिष्ट अतिथि के रूप में लोढ़ा ग्रुप के संस्थापक व विधायक श्री मंगलप्रभात लोढ़ा की धर्मपत्नी, अतिथि विशेष के रूप में भारत जैन महामंडल के अध्यक्ष श्री रमेश कुमार धाकड़, भिक्षु भूमि केलवा के अध्यक्ष श्री सवाईलाल पोखरना, जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष श्री गुलाबचंद चिंडालिया एवं श्री राकेश कुमार कठोतिया, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बी. सी. जैन (भालावत), तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सलिल लोढ़ा आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम में छोटे परदे के रियलिटी शो **'इंडियाज गोट टैलेंट'** के विजेता **प्रिंस डांस ग्रुप** द्वारा नमस्कार महामंत्र एवं देशभक्ति से संबंधित अद्भुत, आश्चर्यजनक व मनमोहक नृत्य की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम के अन्तर्गत जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष श्री गुलाबचंद चिंडालिया को जैन विश्व भारती के सर्वोच्च सम्मान **'भारती भूषण'** से, श्री राकेश कठोतिया को **'विशिष्ट सेवा प्रदाता'** के रूप में तथा महाराष्ट्र सरकार के पूर्व मंत्री श्री गणेश नाईक द्वारा जैन विश्व भारती को उल्लेखनीय योगदान प्रदान करने पर स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में मुंबई चरण के संयोजक श्री शांतिलाल बरमेचा, जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष श्री मदनचंद दूगड़ 'जौहरी', श्री जीवनमल जैन (मालू), न्यासी श्री ख्यालीलाल तातेड़, श्री रमेशचंद बोहरा, संचालिका समिति सदस्य श्री मांगीलाल छाजेड़, श्री कुलदीप प्रकाश बैद आदि का उल्लेखनीय श्रम व सहयोग रहा, इस हेतु सभी के प्रति हार्दिक आभार।

- **कोलकाता चरण** : दिनांक 01 नवम्बर 2015 को प्रातः 9.30 बजे से **'कोलकाता चरण'** का आयोजन कला मंदिर, शेक्सपीयर सारणी, कोलकाता में सफलतापूर्वक आयोजित हुआ। आदरास्पद साध्वीश्री त्रिशलाकुमारीजी एवं जैन विश्व भारती संस्थान की तत्कालीन कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी के पावन सान्निध्य एवं पटना हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस आई. ए. अंसारी की अध्यक्षता में आयोजित उक्त कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में स्वामी शुद्धिनानंदजी महाराज, रामकृष्ण मिशन, कोलकाता, अतिथि विशेष के रूप में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्कालीन अध्यक्ष श्री कमल कुमार दूगड़, तेरापंथ विकास परिषद् के सदस्य एवं जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष श्री बुधमल दूगड़, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती कल्पना बैद, जय तुलसी फाउण्डेशन के तत्कालीन प्रबन्ध न्यासी श्री सुरेन्द्र कुमार दूगड़, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सलिल लोढ़ा, जैन विश्व भारती संस्थान के कुलाधिपति श्री बसंतराज भंडारी, जैन विश्व भारती के परामर्शक एवं पूर्व अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार चोरड़िया आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्तर्गत **हारमोनी ग्रुप, कोलकाता** के कलाकारों द्वारा देशभक्ति के गीतों पर आधारित कार्यक्रम **'वंदे मातरम'** की अद्भुत व मनमोहक नृत्य व संगीतमय प्रस्तुति विशेष आकर्षण का केन्द्र रही। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रखर वक्ता श्री प्रकाश चिंडालिया ने किया।

कार्यक्रम की आयोजना एवं विभिन्न व्यवस्थाओं के नियोजन में कोलकाता चरण के संयोजक एवं जैन विश्व भारती के कोषाध्यक्ष श्री प्रमोद बैद की अहम् भूमिका रही, इस हेतु उनके प्रति हार्दिक आभार। सभी संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं कार्यकर्ताओं का निष्ठापूर्ण श्रम व सहभागिता कार्यक्रम की सफलता में विशेष योगभूत बनी। सभी के प्रति हार्दिक आभार।

- **सूरत चरण** : दिनांक 10 जनवरी 2016 को सायं 5.00 बजे से **'सूरत चरण'** का आयोजन विराट चरण के रूप में तेरापंथ युवक परिषद्, सूरत के आयोजकत्व में पण्डित दीनदयाल उपाध्याय इण्डोर स्टेडियम, घोड़दौड़ रोड़, सूरत में सफलतापूर्वक आयोजित हुआ। सूरत में विराजित साध्वीश्री साधनाश्रीजी एवं जैन विश्व भारती संस्थान की तत्कालीन कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी के पावन सान्निध्य तथा जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्कालीन अध्यक्ष श्री कमल कुमार दूगड़ की अध्यक्षता में आयोजित उक्त कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय के कुलपति श्री दक्षेस भाई ठाकर व नवसारी के सांसद श्री सी. आर. पाटिल उपस्थित थे। अतिथि विशेष के रूप में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बी. सी. जैन भालावत, अखिल भारतीय

तेरापंथ महिला मण्डल की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती कल्पना बैद, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सलिल लोढ़ा, अमृतवाणी के अध्यक्ष श्री जेसराज सेखाणी, अणुव्रत विश्व भारती, राजसमंद के अध्यक्ष श्री निर्मल रांका, राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद के अध्यक्ष श्री उत्तमचंद पगारिया, पारमार्थिक शिक्षण संस्था, लाडनूं के अध्यक्ष श्री जसकरण चोपड़ा एवं तेरापंथ मानव हितकारी संघ, राणावास के अध्यक्ष श्री अमरचंद लुंकड़ उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त भी अनेक केन्द्रीय संस्थाओं के उच्चस्थ पदाधिकारीगण भी मौजूद थे। तेरापंथ युवक परिषद्, सूरत तथा तेरापंथ महिला मण्डल, सूरत के 150 भाई–बहिनों द्वारा सामूहिक रूप से सुमधुर संगान के साथ कार्यक्रम का मंगलाचरण सबके आकर्षण का केन्द्र था। इस अवसर पर युवक बिरादरी, मुंबई द्वारा भारत के 5000 वर्ष के स्वर्णिम इतिहास की कहानी संगीतमय नाट्य के रूप में प्रस्तुत की गई तथा सुविख्यात बांसुरी वादक श्री सुनील शर्मा, इन्दौर द्वारा दी गई विशेष प्रस्तुति ने उपस्थित समस्त महानुभावों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम की विभिन्न व्यवस्थाओं के संचालन में एवं इसे सफल बनाने में सूरत चरण के संयोजक श्री संजय भंसाली, तेरापंथ युवक परिषद्, सूरत के अध्यक्ष श्री रमेश बोथरा व उनकी पूरी टीम तथा जैन विश्व भारती के मीडिया एवं प्रचार–प्रसार विभाग के राष्ट्रीय संयोजक श्री महावीर सेमलानी आदि कार्यकर्ताओं का उल्लेखनीय श्रम व सहयोग

विदेशों में रजत जयन्ती समारोह के कार्यक्रम

क्र.सं.	दिनांक	स्थान	सान्निध्य	विशेष
01.	22 अगस्त 2015	बैंकॉक	समणी अक्षयप्रज्ञा एवं समणी विनयप्रज्ञा	उपस्थित जनसमुदाय संस्थान के एकेडमिक एवं शोध कार्य को देखकर आश्चर्यचकित हुए।
02.	29 अगस्त 2015	हांगकांग	समणी अक्षयप्रज्ञा एवं समणी विनयप्रज्ञा	संस्थान की डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म के माध्यम से जैन समाज को विश्वविद्यालय एवं पाठ्यक्रमों की जानकारी दी गई।
03.	07 सितम्बर 2015	सेक्रामेंटो	समणी अक्षयप्रज्ञा एवं समणी विनयप्रज्ञा	संस्थान की डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म के माध्यम से जैन समाज को विश्वविद्यालय एवं पाठ्यक्रमों की जानकारी दी गई।
04.	18 सितम्बर 2015	मेंचेस्टर	समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञा एवं समणी पुण्य प्रज्ञा	
05.	20 सितम्बर 2015	बर्मिंघम	समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञा एवं समणी पुण्य प्रज्ञा	
06.	28 सितम्बर 2015	लंदन	समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञा, समणी प्रतिभाप्रज्ञा, समणी पुण्यप्रज्ञा, समणी प्रणवप्रज्ञा	केनन हाई स्कूल के ऑडिटोरियम में आयोजित समारोह में जैन नेटवर्क के अध्यक्ष नट्टू भाई, महावीर फाउण्डेशन के अध्यक्ष विनोद कपासी, जैन प्रगति नवयुवक मण्डल के अध्यक्ष के. सी. जैन, डायवर्स एथिक्स के सचिव अतुल शाह, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष हसु भाई आदि अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।
07.	10–11 अक्टूबर 2015	ह्यूस्टन	समणी परिमलप्रज्ञा एवं समणी मर्यादाप्रज्ञा	जैन विश्व भारती के प्रेक्षा मेडिटेशन सेंटर में आयोजित इस कार्यक्रम में डॉक्यूमेंट्री फिल्म द्वारा संस्थान की जानकारी दी गई। समारोह में जैन विश्व भारती के ह्यूस्टन के अध्यक्ष स्वतंत्र जैन, सीमा जैन आदि उपस्थित थे।
08.	नवम्बर 2015	पूर्वकार्ता (इण्डोनेशिया)	समणी ज्योतिप्रज्ञा एवं समणी मानसप्रज्ञा	डॉक्यूमेंट्री फिल्म के माध्यम से संस्थान की गतिविधियों के बारे में अवगत करवाया। कार्यक्रम में सोशियल ग्रुप के मंत्री प्रकाश बम, चांदरतन दूगड़, मुकेश जैन आदि उपस्थित थे।

विदेशों में आयोजित रजत जयन्ती वर्ष समारोह के कार्यक्रमों में वहां प्रवासित समाज के विभिन्न महानुभावों एवं संस्थाओं के सहयोग व सहभागिता हेतु हार्दिक आभार।

रजत जयन्ती वर्ष समारोह : संयोजकीय दायित्व

क्र.सं.	चरण	दिनांक	संयोजक
01.	लाडनूं चरण	20–21 मार्च 2015	श्री भागचंद बरड़िया
02.	चेन्नई चरण	20 मई 2015	श्री पुखराज बड़ोला
03.	बैंगलोर चरण	06 जून 2015	श्री मूलचंद नाहर
04.	गंगाशहर चरण	03–04 जुलाई 2015	श्री लुणकरण छाजेड़
05.	टमकोर चरण	14 जुलाई 2015	श्री भीखमचंद नखत
06.	जयपुर चरण	24 जुलाई 2014	श्री गौरव जैन मांडोत श्री पन्नालाल पुगलिया
07.	ओड़िशा चरण	25 अगस्त 2015	श्री केवलचंद जैन
08.	दिल्ली चरण	30 अगस्त 2015	श्री सुखराज सेठिया
09	सिरियारी चरण	26 सितम्बर 2015	श्री मूलचंद नाहर
10.	विराटनगर चरण	04 अक्टूबर 2015	श्री राजकुमार गोलछा
11.	मुंबई चरण	11 अक्टूबर 2016	श्री शांतिलाल बरमेचा
12.	कोलकाता चरण	01 नवम्बर 2015	श्री प्रमोद बैद
13.	सूरत चरण : विराट चरण	10 जनवरी 2016	श्री संजय भंसाली

उक्त सभी संयोजकगणों की उल्लेखनीय सेवाओं एवं सहयोग हेतु हार्दिक आभार।

रजत जयन्ती वर्ष समारोह के वर्षव्यापी आयोजन की जिम्मेदारी मातृ संस्था द्वारा ग्रहण की गई थी। संस्थान के अनुशास्ता परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन आशीर्वाद, संस्थान की तत्कालीन कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी की पावन प्रेरणा, रजत जयंती समारोह समिति के मुख्य संयोजक श्री धरमचंद लुंकड़ के नेतृत्व में समारोह समिति की पूरी टीम के श्रम, सहयोग व सहभागिता एवं संपूर्ण समाज के सहयोग व सहभागिता तथा जैन विश्व भारती व जैन विश्व भारती संस्थान की टीम के निष्ठापूर्ण

श्रम से देश–विदेश में आयोजित यह समारोह अत्यन्त सफलता के साथ ऐतिहासिक बना। जैन विश्व भारती के पदाधिकारीगण, न्यासीगण, परामर्शकगण, संचालिका समिति सदस्यगण, विशेष आमंत्रित सदस्यगणों आदि की समय–समय पर विभिन्न स्थानों पर आयोजित कार्यक्रमों में सहभागिता एवं सहयोग आयोजन की सफलता में विशेष योगभूत बना। इन कार्यक्रमों के आयोजन से जैन विश्व भारती संस्थान की गतिविधियों का व्यापक स्तर पर प्रचार–प्रसार हुआ है। उक्त कार्यक्रमों में सहयोगी एवं सहभागी सभी महानुभावों एवं संस्थाओं के प्रति हार्दिक आभार। समाज के लोगों ने 'शिक्षा संपोषण योजना' के अन्तर्गत उदार सहयोग प्रदान कर संस्था को समृद्ध बनाया है, एतदर्थ सभी अनुदानदाताओं के प्रति हार्दिक आभार।

स्थापना दिवस समारोह का आयोजन

जैन विश्व भारती संस्थान के **'26वें स्थापना दिवस'** एवं **'रजत जयन्ती वर्ष के समापन समारोह'** का आयोजन दिनांक 20 मार्च 2016 को प्रातः 10.30 बजे सुधर्मा सभा, जैन विश्व भारती में आचार्यश्री महाश्रमणजी के विडियो विजुअल मंगल संदेश के प्रसारण के साथ अत्यन्त उत्साहपूर्ण वातावरण में हुआ। कार्यक्रम का प्रथम सत्र प्रातः 7.30 बजे से सुखदेव आश्रम, राहुगेट से **'सद्भावना रैली'** के रूप में आयोजित किया गया। इस रैली के माध्यम से नशामुक्ति, सद्भाव, पॉलिथिन की रोकथाम व जन स्वावलम्बन का संदेश दिया गया।

कार्यक्रम का द्वितीय सत्र परिसर स्थित सुधर्मा सभा में 'शासनश्री' मुनिश्री विमलकुमारजी एवं साध्वीश्री उज्ज्वलरेखाजी के पावन सान्निध्य तथा जैन विश्व भारती संस्थान की तत्कालीन कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी की अध्यक्षता में आयोजित उक्त कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान सरकार के सूचना आयुक्त श्री आशुतोष शर्मा तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में राजस्थान सरकार के मानवाधिकार आयोग के पूर्व अध्यक्ष श्री एच. आर. कुडी उपस्थित थे। रैवासा धाम, सीकर के पीठाधीश्वर जगद्गुरु डॉ. स्वामी राघवाचार्यजी महाराज, ख्वाजा साहब दरगाह, अजमेर के दरगाह कमेटी के अध्यक्ष श्री असरार अहमद खान की उपस्थिति कार्यक्रम की गरिमा को वृद्धिगत कर रही थी।

कार्यक्रम का तृतीय व समापन सत्र सांस्कृतिक कार्यक्रम के रूप में आयोजित हुआ। सायं 4.00 बजे से आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में जैन विश्व भारती संस्थान एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं ने वर्तमान सम–सामयिक समस्याओं एवं मूल्यपरक शिक्षा के द्वारा उनके समाधान से संबंधित संदेश प्रदान करने वाली मनमोहक प्रस्तुतियां दी। संस्थान के प्रेक्षाध्यान, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विद्यार्थियों द्वारा प्रेक्षाध्यान एवं योग की अद्भूत प्रस्तुतियां दी गई।

Third Indian Social Work Congress का आयोजन

संस्थान के समाज कार्य विभाग एवं राष्ट्रीय व्यावसायिक समाज कार्यकर्ता संघ, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में त्रिदिवसीय Third Indian Social Work Congress का आयोजन दिनांक 24–26 अक्टूबर 2015 को संस्थान के ऑडिटोरियम में किया गया। उद्घाटन समारोह की मुख्य अतिथि देश की प्रख्यात समाजसेविका रमन मैग्सेसे अवार्ड से पुरस्कृत अरूणा रॉय, मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. राजेश टण्डन, दिल्ली तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में राष्ट्रीय व्यावसायिक समाज कार्यकर्ता संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री संजय भट्ट थे। कार्यक्रम के समापन समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान लॉ कमीशन के पूर्व अध्यक्ष व राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री विनोदशंकर दवे थे। इस अवसर पर बिहार की आई.ए.एस. अधिकारी डॉ. रश्मि सिंह भी विशेष रूप से उपस्थित थी। इस आयोजन में 28 राज्यों के कुल 438 विद्वानों ने भाग लिया। तीन दिनों में कुल 18 सत्रों में आयोजित इस कांग्रेस में 61 संस्थानों के 246 विद्वानों ने पत्रवाचन किया।

अन्तर्राष्ट्रीय समर स्कूल कार्यक्रम का आयोजन

दिनांक 23 जुलाई से 12 अगस्त 2015 तक महादेवलाल सरावगी अनेकान्त शोधपीठ द्वारा समर स्कूल कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें यू.एस.ए., स्वीटजरलैण्ड एवं जर्मनी के 10 एवं भारत के 11 विद्यार्थियों ने भाग लेकर जैनदर्शन, जीवन विज्ञान, योग, अहिंसा एवं शांति, प्राकृत एवं संस्कृत भाषा आदि का अध्ययन किया।

अनेकान्त पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

जैन विश्व भारती संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग व महादेवलाल सरावगी अनेकांत शोधपीठ के संयुक्त तत्वावधान में आई.सी.एस.एस.आर., नई दिल्ली के सौजन्य से Anekant : A Dialogue of Human Concerns विषय पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 26–28 नवम्बर 2015 को संस्थान के ऑडिटोरियम में तत्कालीन कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी की अध्यक्षता में हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में विकास अध्ययन संस्थान, जयपुर के निदेशक प्रो. नरेश दाधीच उपस्थित थे।

जैन एवं बौद्ध धर्म विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन

दिनांक 11 दिसम्बर 2015 को जैन विश्व भारती संस्थान के जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग एवं इंडियन सोसायटी फॉर बुद्धिस्ट स्टडी के संयुक्त तत्वावधान में त्रिदिवसीय 15वीं जैन एवं बौद्ध धर्म विषयक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन लाडनूं में हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, गुजरात के कुलपति प्रो. अर्कनार्थ चौधरी उपस्थित थे। इस सम्मेलन में देश भर के 150 से अधिक विद्वानों ने पत्र वाचन किया।

लाडनूं हेरिटेज एवं सांस्कृतिक महोत्सव का आयोजन

दिनांक 12–14 दिसम्बर 2015 को संस्थान के तत्वावधान में लाडनूं हेरिटेज एवं सांस्कृतिक महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। महोत्सव में लाडनूं नगर में स्थित धरोहरों के प्रति सचेत एवं जागरूक होने का आह्वान किया गया।

विज्ञान एवं जैन दर्शन पर त्रिदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन

संस्थान के भगवान् महावीर इंटरनेशनल रिसर्च सेन्टर द्वारा दिनांक 08–10 जनवरी 2016 को आई.आई.टी., मुंबई में विज्ञान एवं जैन दर्शन पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मलेन का आयोजन आचार्यश्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती प्रो. मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी एवं भगवान् महावीर इंटरनेशनल रिसर्च सेन्टर की कार्यकारी निदेशिका समणी डॉ. चैतन्यप्रज्ञा के पावन सान्निध्य में हुआ। इस सम्मेलन में इंटरनेशनल कोर्ट ऑफ जस्टिस, नीदरलैण्ड के न्यायाधीश श्री दलवीरसिंह भण्डारी, भारत सरकार के विज्ञान एवं तकनीकी मंत्री डॉ. हर्षवर्द्धन, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री आदर्श गोयल, राजस्थान उच्च न्यायालय के उच्च न्यायाधीश श्री जसराज चौपड़ा, बिजनेस वर्ल्ड पत्रिका के ग्रुप चेयरमैन श्री अनुराग बत्रा, एनम सिक्योरिटीज के चेयरमैन श्री वल्लभ भंसाली, दलाई लामा फाउण्डेशन के सचिव राजीव मेहरोत्रा सहित देश के 25 से अधिक विश्वविद्यालयों के कुलपति व निदेशक उपस्थित थे। सम्मेलन में संस्थान के कुलाधिपति श्री बसंतराज भण्डारी, कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा, आई.सी.एस.जे.पी. के अध्यक्ष डॉ. के. पी. मिश्रा, आई.आई.टी. मुंबई के प्रोफेसर डी. पार्थपारथी, पेनसिल्वेनिया विश्वविद्यालय के डॉ. जेफ्री डी. लोग, क्योटो परफेक्चुअल विश्वविद्यालय (जापान) के प्रोफेसर काजूयुकी अकासाका और सहित बड़ी संख्या में वैज्ञानिक और विद्वान उपस्थित थे। सम्मेलन में सौ से अधिक विद्वानों ने पत्र वाचन किये। सम्मेलन में देश–विदेश के 650 संभागियों का पंजीयन हुआ। इस कार्यक्रम के आयोजन में प्रोफेसर मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी, मुनिश्री अभिजीतकुमारजी, मुनिश्री जागृतकुमारजी, समणी चैतन्यप्रज्ञाजी आदि के मार्गदर्शन हेतु हार्दिक कृतज्ञता।

मनोकायिक रोगों के प्रबन्धन में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा का योगदान पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन

जैन विश्व भारती संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के तत्वावधान में एवं भारत सरकार के आयुष विभाग के सौजन्य से दिनांक 20–22 फरवरी 2016 तक मनोकायिक रोगों के प्रबन्धन में योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा का योगदान विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन संस्थान के ऑडिटोरियम में किया गया। इस सेमिनार में केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर (गुजरात) के स्कूल ऑफ लाइफ साइंस के डीन प्रो. जे.पी.एन. मिश्रा, राजस्थान बटालियन एनसीसी के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल कुलसिंह शेखावत, दादूपंथ संप्रदाय के महामण्डलेश्वर स्वामी अर्जुनदास महाराज, जगतगुरु संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विनोद शास्त्री आदि सम्मिलित हुए।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

उपखण्ड प्रशासन, लाडनूं द्वारा जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में **'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह'** का कार्यक्रम दिनांक 21 जून 2016 को सुधर्मा सभा, जैन विश्व भारती, लाडनूं में अत्यन्त उत्साहपूर्ण वातावरण में हुआ। अनुशासितबद्ध होकर लाडनूं नगरवासियों एवं विशिष्टजनों द्वारा सामूहिक योगाभ्यास का कार्यक्रम सचमुच लाडनूं नगर के लिए एक ऐतिहासिक कार्यक्रम बन गया। इस कार्यक्रम में पुरुष एवं महिलाओं सहित लगभग 1000–1200 लोगों की उपस्थिति का अनुमान किया गया। कार्यक्रम में समस्त प्रशासनिक महकमा भी उपस्थित रहा। उपखण्ड प्रशासन, लाडनूं की सहभागिता हेतु आभार। आयोजन में नगर की विभिन्न संस्थाओं का सह–आयोजक के रूप में सहयोग प्राप्त हुआ। एतदर्थ सभी के प्रति हार्दिक आभार।

विविध ग्रीष्मकालीन कक्षाओं का आयोजन

माह मई एवं जून 2016 में कैरियर कॉउंसलिंग सेल के तत्वावधान में ग्रीष्मकालीन कक्षाओं का आयोजन किया गया। जिसमें हेयर एण्ड स्किन केयर, नृत्य, कुकिंग, योगा, स्पोर्टस, अंग्रेजी संभाषण, बेसिक कम्प्यूटर आदि विभिन्न प्रशिक्षण कक्षाओं का आयोजन किया गया। लाडनूं नगर एवं आस–पास के क्षेत्रों से संभागियों ने लाभ प्राप्त किया।

प्रतिदिन योग कक्षा का आयोजन

संस्थान द्वारा लाडनूं एवं आस–पास के क्षेत्रों के लिए प्रतिदिन प्रातःकाल योग कक्षा का संचालन जैन विश्व भारती परिसर स्थित आचार्य तुलसी अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र में किया जा रहा है। प्रशिक्षकगण की सेवाओं हेतु आभार।

संस्थान को 'बेस्ट डीम्ड यूनिवर्सिटी इन राजस्थान' का अवार्ड प्रदत्त

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में विख्यात एशिया एज्यूकेशन सम्मिट, नई दिल्ली द्वारा जैन विश्व भारती संस्थान को **'बेस्ट डीम्ड यूनिवर्सिटी इन राजस्थान'** का अवार्ड दिनांक 09 मार्च 2016 को दिल्ली में श्रीमती स्मृति जुबिन ईरानी, मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार एवं श्री मनीष सिसोदिया, उप मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार द्वारा एक विशेष समारोह में प्रदान किया गया। संस्थान की तत्कालीन कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी के कुशल निर्देशन में कार्यरत समस्त जैन विश्व भारती संस्थान परिवार को हार्दिक बधाई एवं साधुवाद।

संस्थान को मिली चार वर्षीय बी.ए.-बी.एड. एवं बी.एस.सी.-बी.एड. की मान्यता

भारत सरकार के राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली द्वारा जैन विश्व भारती संस्थान को चार वर्षीय कोर्स बी.ए.–बी.एड. एवं बी.एस.सी.–बी.एड. की मान्यता मिली है। इस चार वर्षीय कोर्स के लिए कुल 100 सीटें स्वीकृत की गई है। इस कार्य में तत्कालीन कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी एवं जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री धरमचंद लुंकड़ का उल्लेखनीय श्रम रहा।

सत्कार जलपान गृह का शुभारम्भ

दिनांक 09 सितम्बर 2015 को संस्थान परिसर में नवनिर्मित सत्कार जलपान गृह का शुभारम्भ हुआ। सत्कार जलपान गृह के नवनिर्मित भवन हेतु मातृ संस्था जैन विश्व भारती की प्रेरणा से श्री राकेश शुभकरण कठोतिया, लाडनूं–मुंबई (शुभकाम चेरिटेबल ट्रस्ट) का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ, इस हेतु उनके प्रति हार्दिक आभार। जलपान गृह के निर्माण से संस्थान की एक दीर्घकालीन अपेक्षा की पूर्ति हुई है।

भगवान महावीर इंटरनेशनल रिसर्च सेन्टर की गतिविधियों के लिए परिसर में अलग स्थान का आवंटन

जैन विश्व भारती संस्थान के अन्तर्गत संचालित भगवान् महावीर इंटरनेशनल रिसर्च सेन्टर की गतिविधियों के संचालन के लिए पूर्व में परिसर स्थित जीवन विज्ञान इंटरनेशनल ट्रेनिंग एण्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट का भवन एवं वर्तमान में परिसर स्थित अहिंसा भवन का प्रथम तल मातृ संस्था जैन विश्व भारती द्वारा उपयोगार्थ प्रदान किया गया है।

संस्थान के विभिन्न कार्यक्रम

क्र. सं.	विभाग	कार्यक्रम	तिथि
01.	योग एवं जीवन विज्ञान विभाग	▪ जीवन विज्ञान दिवस	24 नवम्बर 2015
		▪ त्रैमासिक योग प्रशिक्षक पाठ्यक्रम	जनवरी–मार्च 2016
		▪ युवा दिवस	12 जनवरी 2016
02.	समाज कार्य विभाग	▪ पॉलिथिन प्रतिबंध जागरूकता अभियान	01 फरवरी 2016
03.	प्राच्य विद्या एवं भाष्य विभाग	▪ भारतीय अभिलेख पाण्डुलिपि कार्यशाला	27–31 जुलाई 2015
		▪ संस्कृत दिवस	31 अगस्त 2015
		▪ प्राकृत शिक्षण कार्यशाला (जम्मू में आयोजित 120 प्रशिक्षणार्थी)	23 नवम्बर–02 दिसम्बर 2015
		▪ प्राकृत शिक्षण कार्यशाला (भुवनेश्वर में आयोजित)	30 नवम्बर–10 दिसम्बर 2015
04.	जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग एवं भगवान महावीर इंटरनेशनल रिसर्च सेन्टर	▪ त्रैमासिक प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम	अगस्त–अक्टूबर 2015
05.	अहिंसा एवं शांति विभाग	▪ अन्तर्राष्ट्रीय विश्व दार्शनिक दिवस	17 नवम्बर 2015
		▪ विश्व दर्शन दिवस	19 नवम्बर 2015
		▪ अहिंसा प्रशिक्षण शिविर	10 अक्टूबर 2015
		▪ अहिंसा प्रशिक्षण शिविर	09 फरवरी 2016
		▪ अहिंसा प्रशिक्षण शिविर	03 मार्च 2016
		▪ अहिंसा प्रशिक्षण शिविर	16 मार्च 2016
06.	शिक्षा विभाग	▪ शिक्षक दिवस	05 सितम्बर 2015
		▪ संवत्सरी एवं गणेश चतुर्थी पर्व	18 सितम्बर 2015
		▪ विद्यार्थी दिवस	15 अक्टूबर 2015
		▪ प्रसार भाषण	20 अक्टूबर 2015
		▪ नवरात्रा एवं दशहरा कार्यक्रम	21 अक्टूबर 2015
		▪ संविधान दिवस	27 नवम्बर 2015
		▪ शैक्षिक भ्रमण (पाबोलाव, डूंगर बालाजी आदि)	01 दिसम्बर 2015
		▪ सद्भावना दौड़	03 दिसम्बर 2015
		▪ मानवाधिकार दिवस	10 दिसम्बर 2015
		▪ युवा दिवस	12 जनवरी 2016
		▪ प्रसार भाषण माला	25 जनवरी 2016
		▪ अभिभावक शिक्षक सम्मेलन	09 फरवरी 2016
		▪ ई–लर्निंग कार्यशाला	11 फरवरी 2016
		▪ सृजन (सामाजिक समरसता कार्यक्रम)	24 फरवरी 2016
		▪ अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस	08 मार्च 2016
		▪ शोध प्रारूप : गुणात्मक एवं मात्रात्मक विषय पर राष्ट्रीय संवाद	02–03 अप्रैल 2016

07.	आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय	• प्रवेशोत्सव	30 जुलाई 2015
		• व्यक्तित्व विकास कार्यशाला	22–24 जुलाई 2015
		• स्वतंत्रता दिवस समारोह	15 अगस्त 2015
		• शिक्षक दिवस	05 सितम्बर 2015
		• कोर्स वर्क (पीएच.डी) विद्यार्थियों के लिए	09–23 अक्टूबर 2015
		• डांडिया प्रतियोगिता	20 अक्टूबर 2015
		• अन्तर्महाविद्यालय वाद–विवाद प्रतियोगिता	19 जनवरी 2016
		• अंतर्महाविद्यालय खेल प्रतियोगिता	26 फरवरी 2016
08.	कैरियर काउन्सलिंग एव आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय	• यूथ कैरियर फेयर	29 सितम्बर 2015
09.	दूरस्थ शिक्षा निदेशालय	• राष्ट्रीय कार्यशाला	27–28 अक्टूबर 2015
10.	अंग्रेजी विभाग	• अंग्रेजी भाषा कार्यशाला	28 सितम्बर 2015
11.	महादेवलाल सरावगी अनेकांत शोधपीठ	• आचार्य महाप्रज्ञ श्रुत संवर्धिनी व्याख्यानमाला	29 अक्टूबर 2015
		• स्व. पूनमचंद भूतोड़िया स्मृति व्याख्यानमाला (प्रो. एम. एल. कुमावत, कुलपति, सरदार पटेल पुलिस, सुरक्षा व सामाजिक न्याय विश्वविद्यालय, जोधपुर)	11 मार्च 2016
12.	एन.एस.एस., आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय	• युवा दिवस	28 सितम्बर 2015
13.	एन.एस.एस.	• स्वास्थ्य जांच शिविर	14 अक्टूबर 2015
		• सफाई अभियान एवं सामाजिक चेतना शिविर	13 जनवरी 2016
14.	भगवान महावीर इंटरनेशनल	• आचार्य महाप्रज्ञ अध्यात्म एवं रिसर्च सेन्टर विज्ञान व्याख्यानमाला (प्रो. के. पी. मिश्रा, इलाहाबाद)	29 फरवरी 2016
15.	अन्य	• वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता	दिसम्बर 2015
		• सांस्कृतिक प्रतियोगिता	दिसम्बर 2015
		• पूर्व छात्र सम्मेलन	16 जनवरी 2016
		• आचार्य महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस	03 मई 2016
		• आचार्य महाश्रमण जन्म दिवस	14 मई 2016

: प्रस्तुति :
प्रो. अनिल धर
कुलसचिव, जैन विश्व भारती संस्थान

प्रो. बच्छराज दूगड़ बने जैन विश्व भारती संस्थान के आठवें कुलपति

प्रो. बच्छराज दूगड़ ने जैन विश्व भारती संस्थान के आठवें कुलपति के रूप में दिनांक 30 अप्रैल 2016 को दायित्व ग्रहण किया। प्रो. दूगड़ संस्थान के स्थापनाकाल से ही इसके साथ सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। प्रो. दूगड़ ने वर्ष 1997–98 तक जैन विश्व भारती संस्थान के कुलसचिव पद को सुशोभित किया है। उन्होंने संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष एवं रिसर्च बोर्ड के निदेशक के पद पर अपनी सेवाएं प्रदान की है। प्रो. दूगड़ विगत 35 वर्षों से अहिंसा एवं शांति विषय की स्नातकोतर कक्षाओं को अध्यापन करवा रहे हैं। इनके मार्गदर्शन में 25 से अधिक शोधार्थी अपना शोध कार्य पूर्ण कर चुके हैं। विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनारों एवं कॉन्फ्रेंसों में अपनी सहभागिता दर्ज की है एवं 125 से अधिक शोध–पत्र उच्चस्तरीय जनरलों में प्रकाशित हुए हैं। प्रो. दूगड़ विभिन्न विश्वविद्यालयों की शिष्ट परिषद्, एकेडमिक काउंसिल एवं प्रबंधन मण्डल के सदस्य भी हैं। टीम वर्क में विश्वास रखने वाले प्रो. दूगड़ एक ऊर्जावान प्रशासक भी हैं। मातृ संस्था जैन विश्व भारती प्रो. दूगड़ के कुलपति के रूप में सफल कार्यकाल की मंगलकामना करती है।

समणी चारित्रप्रज्ञाजी का कुलपति के रूप में संस्थान के विकास में अप्रतिम योगदान

जैन विश्व भारती संस्थान की कुलपति के रूप में समणी चारित्रप्रज्ञाजी का लगभग साढ़े पांच वर्ष तक कुशल नेतृत्व प्राप्त हुआ। समणीजी के नेतृत्व में संस्थान ने विकास की नई उड़ान भरी। उनके कार्यकाल में संस्थान को राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा 'ए' ग्रेड का दर्जा प्राप्त हुआ। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा संस्थान को 'ए' श्रेणी में शामिल किया गया। संस्थान को भारत के 25 उच्चतर शिक्षण संस्थानों में 17वां स्थान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त हुआ। एशिया एज्यूकेशन सम्मिट द्वारा राजस्थान की बेस्ट डीम्ड यूनिवर्सिटी का अवार्ड प्रदान किया गया। अमेरिका स्थित जैन समुदाय की विश्वस्तरीय प्रमुख संस्था **'JAINA'** द्वारा प्रेसिडेंशियल अवार्ड प्रदान किया गया। ऐसी महत्वपूर्ण उपलब्धियां संस्थान के अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन आशीर्वाद से कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी के निष्ठापूर्ण श्रम और समर्पण भाव के कारण संस्थान के इतिहास में अंकित हुई। समणीजी के नेतृत्व में रजत जयन्ती समारोह का वर्षव्यापी कार्यक्रम संस्थान की विकास यात्रा का और एक साक्ष्य बना। जैन विश्व भारती संस्थान की सार्थक अनुगूंज देश–विदेश तक हुई। ऐसे गौरवशाली कार्यकाल से संस्थान को नई ऊंचाईयां प्रदान करने वाली कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता और उनके भावी आध्यात्मिक जीवन हेतु अनंत मंगलकामनाएं।

प्रो. समणी मल्लीप्रज्ञाजी का आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की प्राचार्या के रूप में उल्लेखनीय नेतृत्व

जैन विश्व भारती संस्थान के अन्तर्गत संचालित महत्वपूर्ण इकाई है– आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय। स्तरीय महिला शिक्षा के क्षेत्र में लाडनूं व आस–पास के पूरे क्षेत्र में इसका अपना एक विशेष स्थान है। प्रो. समणी मल्लीप्रज्ञाजी ने आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में जनवरी 2011 से जुलाई 2016 तक प्राचार्या के रूप में कुशल शैक्षणिक नेतृत्व प्रदान किया। उनके कार्यकाल के प्रारम्भ के साथ ही महाविद्यालय अपने नवनिर्मित तीन खण्डीय विशाल भवन में स्थानान्तरित हुआ तथा महाविद्यालय ने सभी क्षेत्रों में समन्वित रूप से विकास की ओर कदम बढ़ाये। शैक्षणिक क्षेत्र में अपनी विशेषज्ञता से डॉक्टरेट से प्रोफेसर तक का सफर तय करने वाली समणी मल्लीप्रज्ञाजी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता और उनके भावी आध्यात्मिक जीवन हेतु अनंत मंगलकामनाएं। नवनियुक्त प्राचार्य डॉ. जुगलकिशोर दाधीच के सफल कार्यकाल हेतु शुभकामनाएं।

कृतज्ञता/आभार

जैन विश्व भारती संस्थान के अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी का संस्थान को निरन्तर आध्यात्मिक संरक्षण प्राप्त हो रहा है। आचार्यप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। इस वर्ष परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मुनिश्री कुमारश्रमणजी को जैन विश्व भारती

संस्थान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक के रूप में नियुक्ति प्रदान करवाने की कृपा की है, एतदर्थ पूज्यप्रवर के अनुग्रह के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। जैन विश्व भारती संस्थान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कुमारश्रमणजी के महनीय मार्गदर्शन हेतु हार्दिक कृतज्ञता। संस्थान के विकास हेतु कुलाधिपति श्री बसंतराज भंडारी के कुशल परामर्श एवं सहयोग हेतु हार्दिक आभार। संस्थान के नव कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के सफल कार्यकाल हेतु अनंत मंगलकामनाएं। संस्थान के वित्त सलाहकार श्री प्रमोद बैद एवं पूर्व कुलपति के मुख्य सलाहकार श्री शांतिलाल गोलछा की सेवाओं हेतु हार्दिक आभार। शैक्षणिक गतिविधियों के साथ–साथ महाविद्यालय के प्राध्यापकों/समणीवृंद की संस्थान की विभिन्न गतिविधियों जैसे– व्याख्यान, पाठ लेखन, प्रशिक्षण कार्यक्रम, संपर्क कक्षाओं की आयोजना में सक्रिय सहभागिता रही। संस्थान को प्रदत्त अनुदान हेतु सभी सहयोगी महानुभावों एवं परिवारों के प्रति हार्दिक आभार। संस्थान के प्रबंध मंडल, शिष्ट परिषद् एवं वित्त समिति के सदस्यों की सेवाओं हेतु साधुवाद। सभी प्रशासनिक अधिकारीगण, प्राध्यापकगण एवं गैर–शैक्षणिक कर्मीगणों को कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद। संस्थान के विभिन्न आयोजनों एवं गतिविधियों में मातृ संस्था जैन विश्व भारती के कर्मीगणों के सहयोग हेतु धन्यवाद।

विमल विद्या विहार सीनियर सैकेण्डरी स्कूल

परमपूज्य आचार्यश्री तुलसी का निरंतर यह प्रयास एवं प्रेरणा रही कि जैन विश्व भारती में एक ऐसा विद्यालय स्थापित हो जहां विद्यार्थियों के शैक्षणिक ज्ञान के साथ–साथ चारित्रिक विकास पर भी पर्याप्त ध्यान दिया जाये। आचार्यश्री तुलसी की प्रेरणा से जैन विश्व भारती द्वारा अप्रैल सन् 1989 में विमल विद्या विहार के नाम से अंग्रेजी माध्यम के नगर के प्रथम प्राथमिक विद्यालय का प्रारंभ हुआ। इस विद्यालय में नर्सरी से बारहवीं कक्षा तक अंग्रेजी माध्यम से शिक्षण की व्यवस्था है तथा यह लाडनूं व आस–पास के क्षेत्रों का एकमात्र सी.बी.एस.ई. मान्यता प्राप्त विद्यालय है। विद्यालय तीन उच्च स्तरीय भवनों में संचालित है। गत शैक्षणिक सत्र के विद्यार्थियों की संख्या 1299 के स्थान पर इस शैक्षणिक सत्र में विद्यार्थियों की संख्या 1310 है।

विद्यालय द्वारा मेधावी एवं जरूरतमंद विद्यार्थियों में से लगभग 50 विद्यार्थियों को 20 प्रतिशत, 25 विद्यार्थियों को 25 प्रतिशत एवं 25 विद्यार्थियों को 100 प्रतिशत छात्रवृत्तियां प्रदान की जा रही है। विद्यालय को 7 मुमुक्षु बहिनों के अध्यापन का सौभाग्य भी प्राप्त हो रहा है।

विद्यार्थियों के आवागमन हेतु 5 बसों की सुव्यवस्था है। वर्तमान में लाडनूं एवं आसपास की लगभग 30 किलोमीटर की परिधि में विभिन्न क्षेत्रों के विद्यार्थी इस सुविधा से लाभान्वित हो रहे हैं। विद्यार्थियों की रचनात्मक एवं सृजनात्मक शक्ति, भाषा, लेखनी, कला एवं संगीत की विभिन्न कक्षाओं के साथ समय–समय पर विविध कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। विद्यार्थी प्राच्य कलाओं के साथ आधुनिक कार्यशैली में दक्ष एवं निपुण हों, इस उद्देश्य से कम्प्यूटर लैब, लैंग्वेज लैब, भौतिक एवं रासायनिक प्रयोगशाला की भी समीचीन व्यवस्था है। शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य संवर्द्धन हेतु विविध खेलकूद की समुचित व्यवस्था विद्यालय प्रांगण में है। शैक्षणिक सत्र 2015–16 की विद्यालय की विशिष्ट उपलब्धियां निम्न प्रकार है–

दो शैक्षणिक सत्रों का तुलनात्मक परीक्षा परिणाम

नर्सरी से कक्षा पांचवी तक –

शैक्षणिक सत्र	कुल विद्यार्थी	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	प्रतिशत
2014–15	681	681	–	100
2015–16	779	779	–	100

कक्षा 6 से 12 तक –

शैक्षणिक सत्र	कुल विद्यार्थी	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	प्रतिशत
2014–15	454	448	06	98.67
2015–16	520	517	03	99.42

- **उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम** : विद्यालय का सत्र 2015–16 का बोर्ड परीक्षाओं का परिणाम शत–प्रतिशत रहा एवं 10वीं बोर्ड में इस बार चार विद्यार्थियों ने शत–प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय को गौरवान्वित किया, इस हेतु विद्यालय के शिक्षकों को साधुवाद एवं विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना।
- **प्राईमरी सेक्शन का नवीन सत्र से जीवन विज्ञान भवन में शुभारम्भ** : दिनांक 01 जुलाई 2016 को विद्यालय के प्री–प्राईमरी सेक्शन का नये सत्र से जीवन विज्ञान भवन में शुभारम्भ हुआ। विद्यालय के प्री–प्राईमरी में कुल 14 वर्ग हैं, जिनमें 425 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। विशालाकार भवन के कारण विद्यालय की कक्षाओं हेतु हवादार, पर्याप्त रोशनी युक्त समुचित स्थान उपलब्ध हो गया है। इस नवीन सेक्शन में यथासंभव समस्त आधुनिक सुविधाएं सृजित करने का प्रयास किया गया है। इस अवसर पर विद्यालय के विशिष्ट सहयोगी श्री प्रकाशचंद बैद, लाडनूं–कोलकाता द्वारा विद्यालय भवन को वातानुकूलित करने की दृष्टि से दस एयर कंडीशन प्रदान करने की घोषणा की गई। एतदर्थ उनके प्रति हार्दिक आभार। जीवन विज्ञान भवन के अनुदानदाता श्री देवराज मूलचंद नाहर एवं श्री दिलीप सुराणा (माइक्रो लैब्स) द्वारा भवन को विद्यालय हेतु उपयोग किए जाने की सहर्ष अनुमति प्रदान की गई, एतदर्थ उनके प्रति हार्दिक आभार।
- **नये फर्नीचर की व्यवस्था** : विद्यालय की प्राइमरी कक्षाओं हेतु आधुनिक मॉड्यूलर फर्नीचर की व्यवस्था की गई एवं अन्य कक्षाओं हेतु भी सुंदर एवं उपयोगी फर्नीचर का व्यवस्थापन किया गया है।
- **विद्यालय में छात्राओं हेतु एन.सी.सी. विंग का प्रारम्भ एवं मान्यता प्राप्त** : विद्यालय में छात्राओं हेतु एन.सी.सी. के दल को राजस्थान बटालियन 93, जोधपुर के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त हुई एवं दिनांक 21 जून 2016 को इसका विधिवत् उद्घाटन किया गया। एन.सी.सी. के प्रशिक्षण कार्यक्रम हेतु विद्यालय में प्रशिक्षित शिक्षिका के रूप में सुश्री विनिता पाठक को नियुक्ति प्रदान की गई है।
- **विद्यालय में शैक्षणिक स्तर उन्नयन हेतु नवीन बहुप्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति** : विद्यालय में गुणवत्तायुक्त शिक्षण कार्य की दृष्टि से सीनियर कक्षाओं हेतु नवीन सत्र में भौतिक विज्ञान, गणित, अंग्रेजी के शिक्षकों की एवं प्राइमरी कक्षाओं में नर्सरी कक्षा हेतु उच्च प्रशिक्षित शिक्षिकाओं की नियुक्ति की गई। केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के नियमानुसार विद्यालय में शारीरिक शिक्षा विषय के अध्ययन एवं फील्ड वर्क हेतु उच्च प्रशिक्षित (एम.पी.एड.) शिक्षक की नियुक्ति की गई।

कृतज्ञता/आभार

समणी मधुरप्रज्ञाजी विमल विद्या विहार में काफी समय से अपना महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान कर रही हैं। उनके महनीय मागदर्शन में विद्यालय निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है, इस हेतु उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता। विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती वनीता धर द्वारा निष्ठापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु हार्दिक साधुवाद। विद्यालय के पूरे प्रबंधन, अध्यापकगण एवं सभी कर्मचारीगण को कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद।

: प्रस्तुति :

मनोज लूनिया	अमरचंद लुंकड़	कमला कठोतिया
राष्ट्रीय संयोजक	राष्ट्रीय सह–संयोजक	प्रबंधक
शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती	शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती	विमल विद्या विहार

महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल, जयपुर

'महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल' का शुभारम्भ दिनांक 06 अप्रैल, 2006 को जैन विश्व भारती की एक इकाई के रूप में किया गया। जयपुर शहर के घनी आबादी वाले क्षेत्र निर्माण नगर के ज्ञान विहार में स्थित इस विद्यालय की गणना शहर के प्रमुख सी.बी.एस.ई. मान्यता प्राप्त इंग्लिश माध्यम के विद्यालयों में होती है। यह विद्यालय जहां एक ओर प्रदूषण रहित, सघन हरीतिमा से युक्त परिवेश में बच्चों की छुपी हुई प्रतिभाओं को उजागर कर उन्हें राष्ट्रोपयोगी बनाने के प्रयासों की एक बेहतरीन पहल कर रहा है वहीं दूसरी ओर आधुनिक तकनीकी एवं संसाधनों से युक्त इस विद्यालय को ऑडियो–विजुअल प्रोजेक्टर, सुसज्जित कम्प्यूटर लैब, सेण्डपिट एवं थिमेटिक–टीचिंग आदि आधुनिक व्यवस्थाओं से संपन्न बनाया गया है। विद्यालय में स्कूली शिक्षा के साथ विद्यार्थियों के सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास व सुसंस्कारित जीवन कौशल की क्रियान्विति पर विशेष बल दिया जा रहा है।

प्रथम सत्र में विद्यालय को प्रारम्भिक कक्षा (प्ले ग्रुप) के कक्षा पांच तक संचालित किया गया गया जो प्रतिवर्ष क्रमोन्नति के अनुसर गत शैक्षणिक सत्र में कक्षा 12 तक विस्तारीकरण किया गया। वर्तमान में विद्यालय में 24 अध्यापक–अध्यापिका वर्ग एवं नये सत्र में 55 विद्यार्थियों के प्रवेश के साथ विद्यार्थियों की संख्या 325 है। शैक्षणिक सत्र 2015–16 के उल्लेखनीय कार्यों की जानकारी निम्नलिखित है–

दो शैक्षणिक सत्रों का तुलनात्मक परीक्षा परिणाम

नर्सरी से कक्षा पांचवी तक –

शैक्षणिक सत्र	कुल विद्यार्थी	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	प्रतिशत
2014–15	173	173	–	100
2015–16	170	170	–	100

कक्षा 6 से 12 तक –

शैक्षणिक सत्र	कुल विद्यार्थी	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	प्रतिशत
2014–15	175	175	–	100
2015–16	168	166	2	98.82

- **स्वागत कक्ष का नवीनीकरण** : वर्तमान युगीन आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विद्यालय में स्वागत कक्ष को आधुनिक संसाधनों से परिपूर्ण किया गया है एवं नवीन फर्नीचर आदि की व्यवस्था की गई है।
- **नवीनीकृत विद्यालय भवन का उद्घाटन समारोह** : गत वर्ष विद्यालय में प्रथम तल का नवनिर्माण एवं संपूर्ण विद्यालय परिसर का नवीनीकरण कार्य संपन्न हुआ। नवनिर्मित प्रथम तल एवं नवीनीकृत विद्यालय भवन के उद्घाटन समारोह का कार्यक्रम दिनांक 13 अगस्त 2016 को मुनिश्री मोहजीतकुमारजी के पावन सान्निध्य में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विद्यालय के प्रथम तल के अनुदानदाता श्री कमलसिंह बैद तथा विशिष्ट अतिथि भारत सरकार के आयकर विभाग के प्रधान आयकर महानिदेशक (मानव संसाधन विकास) श्री के. सी. जैन उपस्थित थे। कार्यक्रम में विद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गई। विद्यालय के पूर्व प्रबंधन से जुड़े एवं सहयोगी महानुभावों श्री पन्नालाल बैद, श्री प्रेम सुराणा, श्री जब्बर चिंडालिया एवं श्रीमती शीला नाहटा की उल्लेखनीय सेवाओ हेतु सम्मानित किया गया। इस अवसर पर जैन विश्व भारती की टीम के अनेक सदस्य एवं जयपुर के अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे।

- **नवीन साइंस लैब की स्थापना** : विद्यालय के सीनियर सैकण्डरी क्रमोन्नत होने के पश्चात् नवीन फिजिक्स लैब, बॉयोलोजी लैब, केमेस्ट्री लैब की स्थापना की गई एवं विद्यार्थियों के ज्ञान स्तर में वृद्धि हेतु लगभग रु. 3–4 लाख की लागत के नवीन संयंत्र क्रय किये गये।
- **विद्यालय में हरीतिकरण** : पर्यावरण संरक्षण एवं सौन्दर्यीकरण की दृष्टि से विद्यालय परिसर में आलोच्य अवधि में 100 से अधिक पौधे लगाये गये।
- **स्पोर्टस एकेडमी** : विद्यालय में संचालित स्पोर्टस एकेडमी में विद्यार्थियों हेतु बास्केटबॉल, क्रिकेट एवं ताईक्वांडो के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गई है एवं कोच के रूप में श्री पंकज शर्मा अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।
- **वार्षिकोत्सव का आयोजन** : दिनांक 28 दिसम्बर 2015 में विद्यालय के वार्षिकोत्सव का आयोजन महाराणा प्रताप ऑडिटोरियम, जयपुर में किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री श्री अरूण चतुर्वेदी उपस्थित थे। कार्यक्रम में अधिकाधिक विद्यार्थियों की सहभागिता एवं उनकी प्रतिभा को उजागर करने की दृष्टि से अधिकांश विद्यार्थियों को कार्यक्रम में प्रस्तुति का अवसर प्रदान किया गया। विद्यार्थियों के साथ–साथ उनके अभिभावकों में भी इस आयोजन के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया रही। कार्यक्रम अत्यन्त समयबद्ध, सुव्यस्थित और गरिमापूर्ण रहा।
- **चारित्रात्माओं का विद्यालय में पदार्पण** : आचार्यश्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती 'शासनश्री' मुनिश्री सुखलालजी स्वामी एवं सुशिष्य मुनिश्री मोहजीतकुमारजी आदि मुनिवृंद का विद्यालय प्रांगण में पावन पदार्पण हुआ। दिनांक 28 जून से 02 जुलाई 2016 तक मुनिवृंद का विद्यालय में प्रवास रहा। दिनांक 02 जुलाई 2016 को आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के जन्मदिवस का कार्यक्रम मुनिवृंद के सान्निध्य में विद्यालय प्रांगण में आयोजित हुआ, जिसमें विद्यालय के विद्यार्थियों ने भी जीवन विज्ञान संबंधी व अन्य प्रस्तुतियां दी। मुनिवृंद के सान्निध्य एवं प्रेरणा पाथेय हेतु हार्दिक कृतज्ञता।
- **बी. लाल बायो फेस्ट व्यूज प्रतियोगिता** : बी. लाल द्वारा आयोजित बायो फेस्ट व्यूज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 64 टीमों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में विद्यालय की छात्राएं सुश्री अनु चौधरी व सुश्री अंजली शर्मा ने प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया।
- **सी.बी.एस.ई. कल्स्टर खेलकूद प्रतियोगिता** : सी.बी.एस.ई. द्वारा केन्द्रीय स्तर पर विद्यालयों की एक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यालय की बास्केटबॉल टीम ने कोटा में तथा वालीबॉल टीम ने जयपुर में हिस्सा लिया।
- **केरियर काउन्सलिंग शिविर में सहभागिता** : जे. के. लक्ष्मीपत विश्वविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों हेतु केरियर काउंसलिंग शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस आयोजन में विभिन्न क्षेत्रों की 20 टीमों ने भाग लिया तथा विद्यालय की टीम ने सहभागिता कर फाईनल में अपना स्थान बनाया।
- **आत्म सुरक्षा शिविर का आयोजन** : छात्राओं के आत्मविश्वास में वृद्धि एवं आत्म सुरक्षा के तरीकों की जानकारी की दृष्टि से एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में कराटे व अन्य विधियों द्वारा आत्म सुरक्षा के विषय में बताया गया।
- **जांच शिविर का आयोजन** : स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के उद्देश्य से विद्यार्थियों हेतु स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया गया, जिसमें विद्यार्थियों की आंखों व दांतों की जांच की गई तथा आवश्यक परामर्श दिए गए।
- **जीवन विज्ञान कार्यशाला का आयोजन** : माह फरवरी 2016 में विद्यालय में जीवन विज्ञान कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत जीवन विज्ञान प्रश्नोतरी का भी आयोजन किया गया।
- **पोस्टर मेकिंग व स्लोगन राईटिंग प्रतियोगिता का आयोजन** : वी.सी.इ.इ., गर्वनमेंट ऑफ इण्डिया द्वारा विद्यालय में पोस्टर मेकिंग एवं स्लोगन राईटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यालय के अनेक विद्यार्थियों

ने भाग लिया तथा विद्यालय के छात्र किसलय पोद्दार ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

- **प्रशिक्षण कार्यक्रम** : आलोच्य अवधि में शिक्षकों की अध्यापन प्रणाली में गुणवता लाने के लिए तकनीकी शिक्षा से संबंधित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।
- **केरियर काउन्सलिंग का आयोजन** : विद्यालय की कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों के लिए विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की दृष्टि से समय–समय पर केरियर काउन्सलिंग का आयोजन किया जाता रहा।
- **बर्ड फेयर का आयोजन** : माह फरवरी 2016 में विद्यालय में आयोजित बर्ड फेयर के अन्तर्गत विद्यार्थियों को शैक्षणिक भ्रमण हेतु भानसागर ले जाया गया, जहां विद्यार्थियों को प्रवासी पक्षियों की जानकारी प्रदान की गई।
- **प्रयोगशालाओं का सुव्यवस्थितिकरण** : माह फरवरी 2016 में विद्यालय में अवस्थित प्रयोगशालाओं को सुव्यवस्थित कर नये उपकरण लगाए गए तथा रसायन विज्ञान प्रयोगशाला में गैस कनेक्शन लगवाये गये।
- **विद्यालय को विशेष आर्थिक सहयोग** : विद्यालय में गत वर्ष में नवनिर्मित प्रथम तल हेतु लाडनूं निवासी जयपुर प्रवासी श्री कमलसिंह–डॉ. रत्ना बैद का विशेष आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ, इस हेतु उनके प्रति हार्दिक आभार।
- **विद्यालय के विकास में सहयोग** : विद्यालय की गतिविधियों के विकास हेतु श्री जुगलकिशोर–मुकुलिका बैद का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ, एतदर्थ उनके प्रति हार्दिक आभार।

आभार

विद्यालय के पूर्व प्रशासक श्री राधेश्याम शर्मा, प्राचार्या श्रीमती नीलिमा गुप्ता को निष्ठापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु साधुवाद। सभी अध्यापकगण, अध्यापिकागण एवं कर्मचारीगण को कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद।

: प्रस्तुति :

मनोज लूनिया
राष्ट्रीय संयोजक
शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती

अमरचंद लुंकड़
राष्ट्रीय सह–संयोजक
शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती

गौरव जैन/पन्नालाल पुगलिया
संयुक्त संयोजक
महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल

महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल, टमकोर

राजस्थान के झुंझनू जिले का छोटा सा कस्बा है– 'टमकोर'। इस कस्बे को विश्वसंत आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की जन्मस्थली होने का गौरव प्राप्त है। सन् 2006 में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के टमकोर पदार्पण के अवसर पर कस्बे एवं उसके आस–पास के क्षेत्र के शैक्षणिक विकास का चिंतन चला। उसी चिंतन की फलश्रुति के रूप में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के जन्म दिवस के अवसर पर दिनांक 12 जुलाई 2007 को टमकोर में 'महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल' का शुभारंभ हुआ। शैक्षणिक सत्र 2010–11 से यह विद्यालय जैन विश्व भारती की इकाई के रूप में संचालित किया जाने लगा। वर्तमान में इस विद्यालय में टमकोर व आस–पास के गांवों के 469 छात्र–छात्राएं अध्ययनरत हैं। अंग्रेजी माध्यम के इस विद्यालय में जीवन विज्ञान तथा अणुव्रत की कक्षाएं भी नियमित चल रही है। विद्यालय के शैक्षणिक सत्र 2015–16 की प्रमुख गतिविधियों की जानकारी निम्नलिखित हैं–

गत दो शैक्षणिक सत्रों का तुलनात्मक परीक्षा परिणाम

शैक्षणिक सत्र	कुल विद्यार्थी	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण	प्रतिशत
2014–15	482	482	–	100
2015–16	489	489	–	100

- **विद्यालय में नवीनीकरण एवं नवनिर्माण कार्य** : विद्यालय परिसर में संपूर्ण भूतल का नवीनीकरण कार्य कराया गया। भूतल पर प्रशासनिक प्रखण्ड का पूर्णतः नवनिर्माण कराया गया। इस प्रशासनिक प्रखण्ड में डायरेक्टर चैम्बर, प्रिंसिपल चैम्बर, रिसेप्शन, स्टाफ रूम, एकाउंट्स सेक्शन एवं फीस काउंटर का नवनिर्माण हुआ है तथा इन सभी को युगानुकुल सुविधायुक्त संचार माध्यमों व आधुनिक संसाधनों से सुसज्जित किया गया है। इस नवनिर्माण एवं नवीनीकरण कार्य में रणजीतसिंह कोठारी परिवार, टमकोर–चुरू–कोलकाता का आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ।
- **विद्यालय में प्रथम तल पर महाश्रमण विंग का नवनिर्माण** : विद्यालय के प्रथम तल पर महाश्रमण विंग के अन्तर्गत तीन कमरों एवं एक हॉल का नवनिर्माण हुआ है। महाश्रमण विंग के लिए श्रीमती सायर–हीरालाल मालू, सुजानगढ़–बैंगलोर के उल्लेखनीय आर्थिक सहयोग हेतु हार्दिक आभार।
- **पुस्तकालय की स्थापना** : ग्रामीण परिवेश एवं आसपास के क्षेत्र में पुस्तकों की अनुपलब्धता को ध्यान में रखते हुए विद्यालय विद्यार्थियों की सुविधार्थ पुस्तकालय की स्थापना की गई है एवं सुरूचिपूर्ण व विभिन्न विषयों से संबंधित ज्ञानोपयोगी पुस्तकें उपलब्ध करवाई गई हैं।
- **कम्प्यूटर लैब की स्थापना** : विद्यार्थियों में तकनीकी ज्ञान के प्रति रूझान को दृष्टिगत रखते हुए तथा शिक्षण स्तर में गुणात्मक वृद्धि हेतु विद्यालय में उच्च स्तरीय कम्प्यूटर लैब की स्थापना की गई। इस नवीन कम्प्यूटर लैब में 41 कम्प्यूटर सेट लगाए गए हैं, जिसके लिए श्री रतनलाल नाहटा परिवार (टमकोर–अहदाबाद–दिल्ली– बैंगलोर) के आर्थिक सहयोग हेतु हार्दिक आभार।
- **नर्सरी विंग के लिए अलग से कक्षाओं की व्यवस्था** : छोटे बच्चों के लिए समुचित स्थान और सुव्यवस्था की दृष्टि से नर्सरी विंग के अन्तर्गत नर्सरी से यू.के.जी. तक अलग–अलग 9 कक्षाओं की व्यवस्था की गई है।
- **नवीनीकृत विद्यालय भवन का उद्घाटन** : परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के 97वें जन्मदिवस के अवसर पर दिनांक 02 जुलाई 2016 को महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर के नवीनीकृत विद्यालय भवन का उद्घाटन समारोह एवं आचार्य महाप्रज्ञ जन्मोत्सव समारोह का कार्यक्रम संयुक्त रूप से आयोजित हुआ। समणी कांतिप्रभाजी एवं समणी पुण्यप्रज्ञाजी के पावन सान्निध्य व रणजीतसिंह कोठारी की अध्यक्षता में आयोजित इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री हीरालाल मालू, सुजानगढ़–बैंगलोर, अतिथि विशेष के रूप में जैन विश्व भारती संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, टमकोर के वरिष्ठ श्रावक श्री धनराज भालचंद चोरड़िया एवं मलसीसर थानाधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर पर विद्यालय भवन के प्रथम तल पर निर्मित **महाश्रमण विंग** का उद्घाटन श्री हीरालाल मालू द्वारा, भूतल पर स्थित **नर्सरी विंग** का उद्घाटन विद्यालय भूमिप्रदाता श्री सैन कुमार भंसाली व श्री विजयसिंह धनराज टांटिया द्वारा, **प्रशासनिक खण्ड** का उद्घाटन रणजीतसिंह कोठारी द्वारा, **कम्प्यूटर लैब** का उद्घाटन श्री रतनलाल नाहटा परिवार द्वारा तथा **पुस्तकालय** का उद्घाटन श्री भीखमचंद नखत द्वारा किया गया। उद्घाटनकर्ता महानुभावों एवं विद्यालय के सभी उदारमना सहयोगी महानुभावों व परिवारों के प्रति हार्दिक आभार।
- **खेल मैदान के विकास हेतु आर्थिक सहयोग** : जैन विश्व भारती के न्यासी श्री रमेशचंद बोहरा ने खेल संबंधी गतिविधियों के विकास व खेल मैदान के विकास हेतु दस वर्षों तक प्रतिवर्ष आर्थिक सहयोग की घोषणा की, एतदर्थ उनके प्रति हार्दिक आभार।
- **विद्यालय के कॉरपस फण्ड हेतु आर्थिक सहयोग** : टमकोर निवासी श्री भीखमंचद नखत ने आर्थिक सहयोग स्वरूप उल्लेखनीय राशि प्रदान की, जिसे संस्था के अन्तर्गत कॉरपस फण्ड के रूप में जमा रखा जा रहा है एवं उससे प्राप्त

ब्याज की आय को विद्यालय की गतिविधियों के संचालन व विकास कार्यों में उपयोग किया जायेगा। नखत परिवार के उदार आर्थिक सहयोग हेतु हार्दिक आभार। इससे पूर्व श्रीमती संतोष–सुरेन्द्र चोरड़िया, चाड़वास–कोलकाता द्वारा प्राप्त विशेष राशि को संस्था के अन्तर्गत गठित कॉरपस फण्ड में जमा किया गया है। श्रीमती संतोष चोरड़िया के उदार सहयोग हेतु हार्दिक आभार।

- **कुंड के निर्माण हेतु आर्थिक सहयोग** : विद्यालय में बरसात के पानी के एकत्रीकरण एवं पीने के उपयोगार्थ संरक्षण हेतु विद्यालय परिसर में एक कुंड के निर्माण हेतु श्रीमती पिस्ताबाई सकलेचा धर्मपत्नी श्री शांतिलाल सकलेचा द्वारा आर्थिक सहयोग की स्वीकृति प्राप्त हुई, एतदर्थ उनके प्रति हार्दिक आभार।
- **एथलेटिक्स प्रतियोगिता का आयोजन** : माह सितम्बर 2015 में विद्यालय में ब्लॉक स्तरीय एथलेटिक्स प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें कक्षा 6–8 तक के छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। विद्यालय के आठ छात्रों का जिला स्तरीय व तीन छात्र–छात्राओं का राज्य स्तर पर चयन हुआ।
- **सर्वोतम परिणाम** : विद्यालय में कक्षा 8 के विद्यार्थियों ने प्रथमतः अलसीसर ब्लॉक स्तर पर सर्वोतम परिणाम दिया है। विद्यार्थियों का औसत परिणाम 'ए' ग्रेड एवं शत–प्रतिशत रहा।
- **प्रवेशोत्सव का आयोजन** : दिनांक 01–10 मई 2016 को विद्यालय में नवीन शैक्षणिक सत्र 2016–17 में प्रवेशार्थ नवीन विद्यार्थियों के स्वागत हेतु प्रवेशोत्सव समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गत शैक्षणिक सत्र में कक्षाओं में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।
- **नवीन नियुक्तियां** : विद्यालय में प्रधानाचार्य के रूप में श्री लोकेश तिवारी तथा अध्यापन कार्य हेतु नये प्रशिक्षित एवं अनुभवी अध्यापकों की नियुक्तियां की गई।
- **टेलीफोन व इंटरनेट सुविधा** : वर्तमान संचार युग की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए विद्यालय के प्रशासनिक प्रखण्ड में इंटरनेट सुविधा प्रारम्भ की गई।
- **मीठे पानी की सुविधा** : मीठे पानी की उपलब्धता हेतु टमकोर ग्राम से विद्यालय तक जर्मन योजना के तहत मीठे पानी की पाईप लाईन बिछायी गयी। इस कार्य में टमकोर निवासी श्री विमल चोरड़िया के सहयोग हेतु हार्दिक आभार।
- **प्रशासनिक प्रखण्ड का वातानुकुलीकरण** : विद्यालय के नवनिर्मित प्रशासनिक प्रखण्ड को श्री राणमल जवेरीलाल भंसाली, असाढ़ा–बालोतरा–अहमदाबाद के आर्थिक सौजन्य से वातानुकूलित सुविधा से सुसज्जित किया गया। सहयोगी परिवार के प्रति हार्दिक आभार।
- **परिसर हरितीकरण एवं वृक्षारोपण** : विद्यालय परिसर व प्रार्थना सभा स्थल को हरा–भरा व सुरम्य बनाने की दृष्टि से विभिन्न प्रकार के पौधे लगाये गये।

कृतज्ञता / आभार

समणी पुण्यप्रज्ञाजी का विद्यालय के संचालन एवं विकास में महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है, एतदर्थ हार्दिक कृतज्ञता। समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी का भी निरन्तर आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्राप्त होता रहता है, उनके प्रति एवं अन्य सभी समणीवृंद के प्रति हार्दिक कृतज्ञता जिनका भी समय–समय पर इस ज्ञान यज्ञ में सहयोग रहा। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री लोकेश तिवारी द्वारा निष्ठापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु हार्दिक साधुवाद। सभी अध्यापकगण, अध्यापिकागण एवं कर्मचारीगण को कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद।

: प्रस्तुति :

मनोज लूनिया	अमरचंद लुंकड़	रणजीत सिंह कोठारी
राष्ट्रीय संयोजक	राष्ट्रीय सह–संयोजक	चेयरमैन
शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती	शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती	महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल

शिक्षा संपोषण योजना

जैन विश्व भारती के संरक्षण में गतिशील जैन विश्व भारती संस्थान तथा जैन विश्व भारती के अन्तर्गत संचालित शैक्षणिक इकाईयों– विमल विद्या विहार, महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर एवं महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर के समुचित विकास की दृष्टि से गत वर्ष से **'शिक्षा संपोषण योजना'** प्रारम्भ की गई। इस योजना के अन्तर्गत प्रत्येक अनुदानदाता से **'शिक्षा संपोषक'** के रूप में रु. 1 लाख की अनुदान राशि प्राप्त की जा रही है। प्राप्त अनुदान राशि को विश्वविद्यालय व शैक्षणिक इकाईयों के विकास में यथावश्यकता उपयोग किया जा रहा है।

जैन विश्व भारती संस्थान के रजत जयन्ती वर्ष समारोह के विभिन्न स्थानों पर आयोजित कार्यक्रमों के दौरान शिक्षा संपोषण योजना के लिए अनुदानदाताओं से संपर्क किया गया। देश–विदेश से अनेक उदारमना महानुभावों ने मुक्तहस्त सहयोग प्रदान कर इस योजना को सफल बनाया। सभी अनुदानदाताओं के प्रति हार्दिक आभार।

चेन्नई में इस योजना में संयोजक श्री पुखराज बड़ोला, जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष श्री गौतमचंद सेठिया, संयुक्त मंत्री श्री राजेश मरलेचा, वित्त सलाहकार श्री राजेश कोठारी, न्यासी श्री रमेशचंद बोहरा, संचालिका समिति सदस्य श्री सुकनराज परमार, श्री राजकरण बैद, श्री गणपतराज डागा, श्री घीसूलाल बोहरा एवं श्री रमेश खटेड़ आदि का विशेष सहयोग रहा। बैंगलोर में जैन विश्व भारती के परामर्शक श्री देवराज नाहर, न्यासी श्री मूलचंद नाहर, संचालिका समिति सदस्य श्री दीपचंद नाहर, श्री विमल कटारिया, श्री मोहनलाल गादिया एवं श्री कन्हैयालाल चिप्पड़, श्री धर्मीचंद धोका, श्री प्रकाश लोढ़ा, श्री राजेश चावत आदि का सहयोग प्राप्त हुआ। जयपुर में जैन विश्व भारती के संयुक्त मंत्री श्री गौरव जैन मांडोत, महाप्रज्ञ सेवा प्रकल्प, जयपुर के अध्यक्ष श्री नरेश मेहता, महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर के संयुक्त संयोजक श्री पन्नालाल पुगलिया आदि का उल्लेखनीय सहयोग रहा। बीकानेर व गंगाशहर में श्री सुरेन्द्र बोथरा का सहयोग रहा। टमकोर में श्री भीखमचंद नखत का सहयोग प्राप्त हुआ। दिल्ली में श्री सुखराज सेठिया, जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष श्री संजय खटेड़, संचालिका समिति सदस्य श्री कमलसिंह खटेड़, श्री जसराज मालू, श्री इन्दर बैंगाणी, श्री पांची जैन, श्री नरेन्द्र बरमेचा एवं सुरेन्द्र जैन घोसल, श्री पदमचंद जैन, श्री नितेश बैद आदि का विशेष सहयोग रहा। सूरत में जैन विश्व भारती की संचालिका समिति सदस्य श्री संजय भंसाली एवं श्री रमेश बोथरा, श्री महावीर सेमलानी आदि का सहयोग रहा। कोलकाता में जैन विश्व भारती के कोषाध्यक्ष श्री प्रमोद बैद, पूर्व अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया, महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर के चेयरमैन श्री रणजीतसिंह कोठारी आदि का सहयोग रहा। मुंबई में जैन विश्व भारती के न्यासी श्री ख्यालीलाल तातेड़, उपाध्यक्ष श्री मदनचंद दूगड़ 'जौहरी', संचालिका समिति सदस्य श्री मांगीलाल छाजेड़ एवं श्री शांतिलाल बरमेचा आदि का विशेष सहयोग रहा। उक्त सभी एवं इस योजना के अनुदानदाता, प्रेरक, सहयोगी एवं ज्ञात–अज्ञात रूप से जुड़े सभी महानुभावों के प्रति हार्दिक आभार।

समण संस्कृति संकाय

गणाधिपति गुरूदेव श्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के क्रान्त मस्तिष्क से प्रस्फुटित लोककल्याणकारी अवदानों में से सामाजिक, आध्यात्मिक एवं व्यवहारिक स्तर पर एक महत्वपूर्ण गतिविधि है– 'जैन विद्या का प्रसार'। पूज्यवरों की कल्पनाशीलता व स्वप्नों को साकार करने की दिशा में प्रयासरत है– 'संस्कारों की प्रयोगशाला : समण संस्कृति संकाय'– जो भावी पीढ़ी में सद्–संस्कारों का वपन करने, जैनत्व के संस्कारों के संरक्षण एवं उनके उन्नत व सुदृढ़ भविष्य का निर्माण करने के लिए जैन विद्या पाठ्यक्रम की लम्बी श्रृंखला के माध्यम से सन् 1977 से निरन्तर प्रयासरत है। इस प्रयोगशाला के प्रयोगों को विश्वव्यापी बनाने की दिशा में वर्तमान में यह विभाग आचार्यश्री महाश्रमणजी के आध्यात्मिक मार्गदर्शन में सतत् विकासशील है। समण संस्कृति संकाय सम, शम और श्रम की संस्कृति के प्रचार का तंत्र है। भारत के प्रायः सभी राज्यों में व नेपाल में

स्थान–स्थान पर सैंकड़ों केन्द्र स्थापित हैं। अब तक 269 स्थायी केन्द्र हो चुके हैं। जैन विद्या का नववर्षीय पाठ्यक्रम निर्धारित है। इसके माध्यम से प्रतिवर्ष 300–350 केन्द्रों से हजारों की संख्या में प्रतिभागी संस्कार निर्माण की दिशा में अग्रसर होते हैं। जैन विद्या के गहन आगमिक स्वरूप को सरल एवं सहज भाषा में प्रस्तुत कर लाखों विद्यार्थियों के लिए आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा को प्रस्तुत किया है। जैन विद्या का अध्ययन न केवल आध्यात्मिक क्षेत्र में उपयोगी है अपितु सामाजिक व व्यावहारिक क्षेत्र में भी इसकी उपादेयता है। इन परीक्षाओं के माध्यम से तैयार हुए प्रशिक्षक भी इसमें अपने समय व श्रम का नियोजन करते हैं, संस्कार निर्माण में योगभूत बनते हैं। समण संस्कृति संकाय का पूरा तंत्र विशेष जागरूकता के साथ परीक्षाओं का संचालन करता है। परीक्षाओं में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने वाले ज्ञानार्थियों को दीक्षांत–समारोह में संकाय द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित, पुरस्कृत किया जाता है। इससे जैन तत्त्व विद्या के अध्ययन–अध्यापन का स्वस्थ वातावरण निर्मित होता है।

- **जैन विद्या परीक्षाएं** : समण संस्कृति संकाय द्वारा संचालित सत्र 2015–16 की जैन विद्या परीक्षाएं दिनांक 10–11 अक्टूबर 2015 को 302 केन्द्रों पर आयोजित हुई। इन परीक्षाओं में 13639 आवेदकों में से 8927 परीक्षार्थियों ने भाग लिया। परीक्षा परिणाम 82.77 प्रतिशत रहा। परीक्षा परिणाम जैन विश्व भारती व तेरापंथ की वेबसाइट **www.jvbharati.org** एवं **www.terapanthinfo.com** के माध्यम से सबको उपलब्ध करवाया गया। इन परीक्षाओं के व्यवस्थित नियोजन में प्रभारी, आंचलिक संयोजक, केन्द्र व्यवस्थापक एवं निरीक्षकों का विशेष सहयोग रहा। एतदर्थ सभी के प्रति हार्दिक आभार।

गत दो वर्षों की परीक्षाओं का तुलनात्मक विवरण

सत्र	केन्द्र	स्थायी/अस्थायी	आवेदक	परीक्षार्थी	उत्तीर्ण	परिणाम	प्रतिशत
2014–15		271	209/62	10104	6228	4927	78.98
2015–16		302	225/77	13639	8927	7389	82.77

- **जय तिथि पत्रक का प्रकाशन** : समण संस्कृति संकाय द्वारा मर्यादा महोत्सव के अवसर पर विगत 36 वर्षों से निरन्तर जन उपयोगी सामग्री के साथ जय तिथि पत्रक (पंचांग) का प्रकाशन किया जा रहा है। इस वर्ष वि. सं. 2073 का जय तिथि पत्रक प्रकाशित कर किशनगंज (बिहार) मर्यादा महोत्सव के अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमणजी के कर–कमलों में लोकार्पित किया गया। जय तिथि पत्रक के सम्पादन में **'मंत्री मुनि'** मुनिश्री सुमेरमलजी 'लाडनूं' अपना बहुमूल्य समय नियोजित कर रहे हैं, मुनिश्री के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। प्रकाशन में आर्थिक सौजन्य के रूप में सहयोगी महानुभावों, परिवारों एवं संस्थाओं के प्रति हार्दिक आभार।
- **जैन विद्या दीक्षांत समारोह** : समण संस्कृति संकाय का सबसे महत्वपूर्ण समारोह है–'जैन विद्या दीक्षांत समारोह'। जैन विद्या परीक्षाओं में अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम, द्वितीय, तृतीय प्राप्त करने वाले ज्ञानार्थियों को दीक्षांत–समारोह में संकाय द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक प्रदान कर सम्मानित किया जाता है। जैन विद्या भाग 1–9 की सम्पूर्ण परीक्षाएं उत्तीर्ण कर लेने पर विद्यार्थी को 'विज्ञ उपाधि' से नवाजा जाता है। इससे जैन विद्या के अध्ययन–अध्यापन का स्वस्थ वातावरण निर्मित होता है।
- **17वां दीक्षान्त समारोह** : विदेश की धरती नेपाल पर पहली बार 17वां दीक्षान्त समारोह आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल, विराटनगर (नेपाल) में पूज्यवर के सान्निध्य में दिनांक 26 जुलाई 2015 को आयोजित किया गया। इस समारोह में विज्ञ उपाधि प्राप्तकर्ता 83, अखिल भारतीय स्तर पर वरीयता प्राप्त 43, जैन विद्या कार्यशाला 27, आंचलिक संयोजक, प्रभारी, सत्र 2014 के विजेता केन्द्र व्यवस्थापक एवं अन्य कार्यकर्ताओं सहित कुल 215 संभागियों/संस्थाओं को सम्मानित किया गया।
- **18वां दीक्षान्त समारोह** : संकाय का 18वां दीक्षान्त समारोह परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में दिनांक 17 जुलाई 2016 को गुवाहाटी में आयोजित किया गया। इस समारोह में विज्ञ उपाधि प्राप्तकर्ता 92, अखिल भारतीय स्तर पर वरीयता प्राप्त 46, अवरचल–प्रवरचल विजयोपहार विजेता केन्द्र 5, जैन विद्या कार्यशाला वरीयता

20, जैन विद्या कार्यशाला परिषद् 10, सक्रिय प्रभारी 2, सक्रिय आंचलिक संयोजक 3, सक्रिय केन्द्र व्यवस्थापक 13 एवं अन्य कार्यकर्ताओं सहित कुल 258 संभागियों/संस्थाओं को सम्मानित किया गया।

दीक्षांत समारोह में सान्निध्य एवं आशीवर्चन प्रदान करवाने हेतु पूज्यप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। विभिन्न सत्रों में सान्निध्य एवं पाथेय प्रदान करवाने हेतु चारित्रात्माओं के प्रति कृतज्ञता। दीक्षान्त समारोह के आयोजन हेतु श्री मालचंद शक्तिकुमार अरूणकुमार बेगानी, बीकानेर–काठमांडू–दिल्ली का प्रायोजकीय सहयोग लम्बे समय से प्राप्त हो रहा है, एतदर्थ प्रायोजक परिवार के प्रति हार्दिक आभार।

- **प्रभारी, आंचलिक संयोजक व केन्द्र व्यवस्थापक कार्यशाला** : जैन विद्या परीक्षाओं से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों के प्रभारी, आंचलिक संयोजकों व केन्द्र व्यवस्थापकों के आपसी समन्वय व सहयोग से जैन विद्या के कार्य को और अधिक गति प्रदान करने की दृष्टि से प्रतिवर्ष कार्यशाला आयोजित की जाती है। वर्ष 2015 की कार्यशाला दिनांक 25 जुलाई 2015 को विराटनगर (नेपाल) में परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में प्रारम्भ हुई। पावन सान्निध्य एवं पावन पाथेय प्रदान करवाने हेतु पूज्यप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। कार्यशाला के अन्य सत्रों में सान्निध्य व आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करवाने हेतु आदरास्पद साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी, मुनिश्री कुमारश्रमणजी, मुनिश्री कीर्तिकुमारजी, मुनिश्री योगेशकुमारजी आदि के प्रति हार्दिक कृतज्ञता।

  वर्ष 2016 की कार्यशाला दिनांक 16 जुलाई 2016 को गुवाहाटी (असम) में जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कीर्तिकुमारजी तथा अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री योगेशकुमारजी के सान्निध्य में आयोजित हुई। सान्निध्य एवं दिशाबोध हेतु मुनिवृंद के प्रति कृतज्ञता। कार्यशाला में जैन दर्शन एवं जैन विद्या के कार्यों को गति देने हेतु चिंतन–मंथन किया गया। कार्यशाला के उपरान्त पूज्यप्रवर आचार्यश्री महाश्रमणजी एवं साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी का पावन पाथेय प्राप्त हुआ, इस हेतु हार्दिक कृतज्ञता।
- **जैन विद्या कार्यशाला** : समण संस्कृति संकाय एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा संयुक्त रूप से गत पांच वर्षों से जैन विद्या कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। प्रतिवर्ष की भांति दिनांक 10–24 अगस्त 2015 को जैन विद्या कार्यशाला भाग–6 का आयोजन किया गया। वर्ष 2015 की कार्यशाला 'भिक्षु विचार दर्शन' पुस्तक की भूमिका एवं अध्याय 2/5/7 पर आधारित थी, जिसमें लगभग 5000 संभागियों ने अध्ययन किया। दिनांक 30 अगस्त 2015 को संपूर्ण भारत व विदेश की धरती नेपाल में परीक्षा संपन्न हुई, जिसमें 97 केन्द्रों के लगभग 2212 परीक्षार्थियों ने भाग लिया, जिसमें से कुल 1661 परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए तथा परीक्षा परिणाम 75.09 प्रतिशत रहा। कार्यशाला के संयोजक श्री रमेश पटावरी, इरोड़ के श्रम व सहयोग हेतु हार्दिक आभार। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् एवं स्थानीय शाखा परिषदों के सहयोग हेतु साधुवाद। सभी संभागियों को प्रमाण पत्र एवं वरीयता प्राप्त करने वालों को पुरस्कार दिनांक 17 जुलाई 2016 को गुवाहाटी में आयोजित समारोह में प्रदान किये गये।
- **जैन विद्या भाग–1 से संबंधित प्रतियोगिता** : घर बैठे ही नए विद्यार्थी जैन विद्या भाग–1 की परीक्षा में सुगमतापूर्वक जुड़ सकें, इसके लिए समण संस्कृति संकाय द्वारा यह प्रतियोगिता 1 से 3 भागों में शुरू की गयी। प्रतियोगिता को उम्र के हिसाब से 2 भागों में विभक्त किया गया है। प्रथम 15 वर्ष की उम्र तक तथा द्वितीय 16 वर्ष से अधिक की उम्र के लिए। प्रतियोगिता में हजारों संभागियों ने भाग लिया। परीक्षा परिणाम घोषित कर दिया गया है।
- **लेख प्रतियोगिता** : जैन विद्या परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले व्यक्ति घर बैठे ही अपना बौद्धिक विकास करने में सफल होते हैं। साथ ही भाषा, लेखन, अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करते हुए अपने व्यक्तित्व का विकास एवं चारित्र निर्माण का आधार भी पुष्ट कर सकते हैं। ऐसी प्रतिभाएं आगे आए इसके लिए विज्ञ उपाधि धारकों के लिए लेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। संकाय द्वारा जून 2016 में लेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसे आयु वर्ग के अनुसार तीन ग्रुप में बांटा गया। इसका विषय 'मानव निर्माण की जीवन शैली है जैनिज्म'– इसे सिद्ध करें। लेख प्रतियोगिता की संयोजिका श्रीमती सुमन नाहटा, काठमांडू के सहयोग हेतु हार्दिक आभार।

- **दक्षिणांचल जैन विद्या कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण कार्यशाला** : समण संस्कृति संकाय द्वारा दक्षिणांचल जैन विद्या कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन बैंगलोर में दिनांक 15 नवम्बर 2015 को किया गया, जिसमें लगभग 100 संभागियों ने भाग लिया। कर्नाटक के आंचलिक संयोजक श्री मोहनलाल पावेचा के सद्प्रयासों से वहां का पावेचा परिवार इस कार्यशाला का प्रायोजक रहा। आंचलिक संयोजक श्री मोहनलाल पावेचा एवं प्रायोजक परिवार के प्रति आभार। कार्यशाला को सफल बनाने में कर्नाटक व तेलंगाना प्रभारी श्रीमती विमला कोठारी का विशेष योगदान रहा, एतदर्थ आभार।
- **पूर्वांचल जैन विद्या कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण कार्यशाला** : समण संस्कृति संकाय द्वारा पूर्वांचल जैन विद्या कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण कार्यशाला दिनांक 25 दिसम्बर 2015 को कोलकाता में आयोजित की गयी, जिसमें 150 संभागी सम्मिलित हुए। कार्यशाला में पश्चिम बंगाल की आंचलिक संयोजिका श्रीमती राजकुमारी सुराना के विशेष सहयोग हेतु हार्दिक आभार।
- **राज्य स्तरीय जैन विद्या कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण कार्यशाला** : समण संस्कृति संकाय द्वारा राजस्थान राज्य स्तरीय जैन विद्या कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन दिनांक 28 फरवरी 2016 को जैन विश्व भारती स्थित अहिंसा भवन में किया गया। कार्यशाला में प्रभारी, आंचलिक संयोजक, केन्द्र व्यवस्थापक, ज्ञानशाला प्रशिक्षक, विज्ञ उपाधि धारक तथा जैन विद्या के प्रचार–प्रसार में सहयोगी कार्यकर्ताओं सहित लगभग 150 संभागियों ने भाग लिया। पांच चरणों में आयोजित इस कार्यशाला में 'शासनश्री' मुनिश्री सुखलालजी, 'शासनश्री' मुनिश्री विमलकुमारजी, मुनिश्री मोहजीतकुमारजी, मुनिश्री हिमांशुकुमारजी, समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी एवं जैन विश्व भारती संस्थान की कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी का पावन सान्निध्य प्राप्त हुआ, एतदर्थ सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। इस अवसर जैन विश्व भारती के अनेक पदाधिकारीगणों व टीम के सदस्यों की उपस्थिति रही।
- **जैन विद्या गीतिका का शुभारम्भ** : पूज्यप्रवर की स्वीकृति प्राप्त कर साध्वीश्री कनकश्रीजी द्वारा जैन विद्या गीतिका की रचना की गई, जिसका शुभारम्भ राजस्थान स्तरीय कार्यशाला, लाडनूं में किया गया। साध्वीश्री के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। जैन विद्या गीतिका का संगान सुप्रसिद्ध संगायिका श्रीमती मीनाक्षी भूतोड़िया, मुंबई द्वारा किया गया, इस हेतु उनके प्रति आभार। भविष्य में जैन विद्या से संबंधित किसी भी कार्यक्रम का प्रारम्भ जैन विद्या गीतिका के संगान के साथ होगा।
- **पश्चिमांचल जैन विद्या कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण कार्यशाला** : समण संस्कृति संकाय द्वारा पश्चिमांचल जैन विद्या कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण कार्यशाला दिनांक 19 मार्च 2016 को श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा व श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन, मुंबई की आयोजना में वहां विराजित साध्वीश्री सरस्वतीजी एवं साध्वीश्री सोमलताजी के पावन सान्निध्य में आयोजत हुई। सान्निध्य प्रदान करवाने हेतु साध्वीवृंद के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। कार्यशाला में प्रभारी, आंचलिक संयोजक, केन्द्र व्यवस्थापक ज्ञानशाला प्रशिक्षक, विज्ञ उपाधि धारक, जैन विद्या में प्रचार–प्रसार सहयोगी कार्यकर्ताओं सहित लगभग 500 संभागी सम्मिलित हुए थे। कार्यशाला को सफल बनाने में महाराष्ट्र प्रभारी श्रीमती प्रेमलता सिसोदिया, आंचलिक संयोजक श्रीमती विमला डागलिया, श्रीमती अनिता सियाल एवं श्री अशोक इंटोदिया का महत्वपूर्ण योगदान रहा। एतदर्थ सभी के प्रति हार्दिक आभार।
- **छत्तीसगढ़ / उड़ीसा जैन विद्या कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण कार्यशाला** : समण संस्कृति संकाय द्वारा छत्तीसगढ़ / उड़ीसा जैन विद्या कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण कार्यशाला दिनांक 26 जून 2016 को साध्वीश्री संगीतश्रीजी के पावन सान्निध्य में रायपुर में आयोजित की गई। साध्वीवृंद के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। कार्यशाला में प्रभारी, आंचलिक संयोजक, केन्द्र व्यवस्थापक ज्ञानशाला प्रशिक्षक, विज्ञ उपाधि धारक, जैन विद्या में प्रचार–प्रसार सहयोगी कार्यकर्ताओं सहित लगभग 100 संभागी सम्मिलित हुए थे। कार्यशाला को सफल बनाने में प्रभारी श्रीमती ललिता धाड़ीवाल, आंचलिक संयोजक श्री जीतमल जैन व उडीसा के आंचलिक संयोजक श्री आनंदसागर जैन का महत्वपूर्ण योगदान रहा। एतदर्थ सभी के प्रति हार्दिक आभार।
- **जैन विद्या संगठन यात्रा** : दिनांक 01–31 मई 2016 तक प्रभारी तथा आंचलिक संयोजकों ने अपने–अपने क्षेत्र के परीक्षा केन्द्रों की सार–संभाल व जैन विद्या के प्रचार–प्रसार हेतु प्रभारी व आंचलिक संयोजकों ने अपने–अपने क्षेत्रों में

केन्द्र व्यवस्थापकों के माध्यम से संगठन यात्रा की। इस दौरान उन्होंने केन्द्र व्यवस्थापक विज्ञ उपाधि धारकों, अन्य कार्यकर्ताओं व स्थानीय संस्थाओं के साथ बैठकें आयोजित कर जैन विद्या के व्यापक प्रचार–प्रसार व विकास के लिए चिंतन–मंथन किया। इस यात्रा से संकाय की नयी पहचान बनी, तेरापंथ समाज का तन–मन–धन से सहयोग प्राप्त हुआ तथा लोगों की जैन विद्या के प्रति रूचि बढ़ी। सभी संबंधित प्रभारी व आंचलिक संयोजकों के श्रम हेतु आभार।

- **संपर्क कक्षाओं का आयोजन** : जैन विद्या के अध्ययन को और अधिक मजबूत बनाने के उद्देश्य से देश के विभिन्न क्षेत्रों में संपर्क कक्षाओं का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष चेन्नई व मुंबई में संपर्क कक्षाओं के आयोजन की शुरूआत हो चुकी है तथा अन्य क्षेत्रों में भी संपर्क कक्षाओं का आयोजन किया जायेगा।
- **जैन विद्या कोष की स्थापना** : समण संस्कृति संकाय के अन्तर्गत जैन विद्या से संबंधित विभिन्न गतिविधियों व योजनाओं के सुचारू संचालन की दृष्टि से समाज के सहयोग से एक 'जैन विद्या कोष' की स्थापना का निर्णय लिया गया, जिसमें चार श्रेणियां रखी गई है–

श्रेणी	श्रेणी का नाम	राशि
प्रथम	जैन विद्या विशिष्ट संपोषक	05 लाख
द्वितीय	जैन विद्या संपोषक	01 लाख
तृतीय	जैन विद्या विशिष्ट सहयोगी	51 हजार
चतुर्थ	जैन विद्या सहयोगी	11 हजार

- **आर्थिक आत्मनिर्भरता** : समण संस्कृति संकाय को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने की दृष्टि से जैन विश्व भारती के अन्तर्गत समण संस्कृति संकाय को रु. 25 लाख का कोष अलग से आवंटित किया गया है। इस कोष से प्राप्त ब्याज की आय संकाय की विभिन्न गतिविधियों के संचालन में उपयोग की जायेगी एवं भविष्य में इस कोष में वृद्धि का लक्ष्य भी रहेगा।
- **व्हाट्सएप्प ग्रुप की शुरूआत** : समण संस्कृति संकाय द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों के प्रचार–प्रसार हेतु प्रभारी, आंचलिक संयोजकों, केन्द्र व्यवस्थापकों, विज्ञ उपाधिधारकों, कार्यकर्ताओं एवं कार्यशालाओं के अनेक ग्रुप बनाये हैं। इन ग्रुपों का संचालन स्वयं विभागाध्यक्ष करते हैं।
- **जैन विद्या दिवस एवं जैन विद्या सप्ताह** : जैन विद्या के व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु गत वर्ष से पूरे देश के विभिन्न क्षेत्रों में 'जैन विद्या सप्ताह' का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष जैन विद्या सप्ताह का आयोजन दिनांक 20–26 जुलाई 2016 को पूरे देश में किया गया, जिसमें जैन विद्या के प्रति जागरूकता वृद्धि हेतु प्रयास एवं प्रेरणा दी गई।

कृतज्ञता / आभार

समण संस्कृति संकाय के विकास हेतु 'शासनश्री' मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन' एवं मुनिश्री जयंतकुमारजी का महत्वपूर्ण मार्गदर्शन तथा गुरुकुलवास में जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कीर्तिकुमारजी का महनीय मार्गदर्शन व कार्यशालाओं आदि में सान्निध्य समय–समय पर प्राप्त होता रहता है, एतदर्थ सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। अनेक चारित्रात्माओं एवं समणीवृंद का निरन्तर दिशादर्शन प्राप्त होता रहता है, एतदर्थ उन सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। केन्द्र व्यवस्थापकों ने अपनी संपूर्ण जिम्मेदारी व सजगता से अध्ययन, अध्यापन व परीक्षा संबंधी स्थानीय व्यवस्थाओं आदि का दायित्व निर्वहन किया, इस हेतु उनके प्रति आभार। जैन विद्या परीक्षाओं के आयोजन में विभिन्न स्थानीय संघीय संस्थाओं, आंचलिक संयोजकों एवं कार्यकर्त्ताओं के सहयोग एवं श्रम हेतु हार्दिक साधुवाद। समण संस्कृति संकाय, लाडनूं कार्यालय की प्रभारी श्रीमती सरिता सुराणा, उनके सहयोगी श्री पदमचंद नाहटा एवं श्रीमती कमला बैद के कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद।

: प्रस्तुति :

मालंचद बेगानी
विभागाध्यक्ष
समण संस्कृति संकाय

निलेश बैद
निदेशक
समण संस्कृति संकाय

जीवन विज्ञान विभाग

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के लोककल्याणकारी अवदानों में से एक है– 'जीवन विज्ञान'। शिक्षा के इस क्रांतिकारी आयाम को राष्ट्रव्यापी बनाने के लिए जैन विश्व भारती के अन्तर्गत जीवन विज्ञान विभाग निरन्तर प्रयासरत है। आलोच्य अवधि में जीवन विज्ञान विभाग के उल्लेखनीय कार्यों की जानकारी निम्नलिखित है–

- **जीवन विज्ञान दिवस समारोह** : आचार्यश्री महाप्रज्ञ को प्रदत्त महाप्रज्ञ अलंकरण के उपलक्ष्य में दिनांक 24 नवम्बर 2015 को 'जीवन विज्ञान दिवस' का आयोजन देश–विदेश के विभिन्न क्षेत्रों में समारोहपूर्वक किया गया। मुख्य समारोह परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में विराटनगर (नेपाल) में आयोजित किया गया। जीवन विज्ञान विभाग, जैन विश्व भारती, लाडनूं के निर्देशन में इस समारोह के अन्तर्गत तेरापंथ की राजधानी लाडनूं में सुधर्मा सभा, जैन विश्व भारती में 'शासनश्री' मुनिश्री सुखलालजी, 'शासनश्री' मुनिश्री मोहनलालजी 'शार्दूल' एवं मुनिश्री मोहजीतकुमारजी के सान्निध्य में हुआ। कार्यक्रम का प्रारम्भ जीवन विज्ञान जागरूकता रैली से किया गया, जिसमें लाडनूं नगर के प्रमुख विद्यालयों के सैंकड़ों विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष श्री जीवनमल जैन (मालू) उपस्थित थे। कार्यक्रम में सान्निध्य एवं पाथेय प्रदान करने हेतु मुनिवृंद के प्रति हार्दिक कृतज्ञता।
- **जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता 2015** : विद्यार्थियों में संस्कार निर्माण हेतु जीवन विज्ञान की भूमिका का निर्माण करने के उद्देश्य से जीवन विज्ञान विभाग, जैन विश्व भारती द्वारा ''जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता'' का प्रारम्भ सन् 2008 से किया गया था। जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिताओं की श्रृंखला में वर्ष 2015 की प्रतियोगिता का शुभारम्भ दिनांक 30 अक्टूबर 2015 को दिल्ली में विराजित आचार्यश्री महाश्रमणजी के आज्ञानुवर्ती 'मंत्री मुनि' मुनिश्री सुमेरमलजी स्वामी को प्रतियोगिता की प्रथम प्रति उपहृत कर उनके कर–कमलों से किया गया। इस वर्ष प्रतियोगिता में 501 प्रतिभागियों ने भरी हुई प्रश्नोत्तरी लौटा कर अपनी प्रतिभागिता दर्ज करवाई। प्रतियोगिता का परिणाम दिनांक 01 जुलाई 2016 को जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री धरमचन्द लुंकड़ एवं अन्य वरिष्ठ पदाधिकारियों द्वारा घोषित किया गया। प्रतियोगिता में मलाड– मुम्बई की श्रीमती सुमिता बैंगानी ने प्रथम, फेफाना (हनुमानगढ़) के श्री राजेशकुमार शर्मा ने द्वितीय तथा नई दिल्ली की श्रीमती खुशबु बैद ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। दिनांक 28 अगस्त 2016 को प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी के सान्निध्य में ''जीवन विज्ञान संस्कार निर्माण प्रतियोगिता–2014'' के विजेताओं को जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री धरमचन्द लुंकड़, जीवन विज्ञान विभाग के को–चेयरमेन श्री ख्यालीलाल तातेड़ एवं राष्ट्रीय संयोजक श्री सुरेश कुमार कोठारी ने प्रमाण–पत्र प्रतीक चिन्ह एवं पुरस्कार राशि के चेक प्रदान कर सम्मानित किया।
- **जीवन विज्ञान पाठ्य–पुस्तकों के संवर्द्धित संस्करण का विमोचन** : प्रेक्षा–प्राध्यापक 'शासनश्री' मुनिश्री किशनलाल एवं श्री शुभकरण सुराणा, जयपुर द्वारा विद्यालयी पाठ्यक्रमानुसार कक्षा 3, 4 एवं 5 हेतु लिखित एवं मुनिश्री किशनलालजी द्वारा संशोधित जीवन विज्ञान की पुस्तकों के नवीनतम संशोधित संस्करण का विमोचन जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय), लाडनूँ के रजत जयन्ती वर्ष समारोह के दिनांक 30 अगस्त 2015 को यमुना स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स, नई दिल्ली में आयोजित दिल्ली चरण के कार्यक्रम में भारत–सरकार के सूचना एवं प्रोद्योगिकी मंत्री डॉ. हर्षवर्द्धन के कर–कमलों से हुआ। मुनिश्री के श्रम हेतु हार्दिक कृतज्ञता।
- **एस.सी.ई.आर.टी., रायपुर द्वारा योग शिक्षा प्रशिक्षण शिविर में जीवन विज्ञान** : राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, रायपुर द्वारा छत्तीसगढ़ के विद्यालयों में योग शिक्षा पाठ्यक्रम के प्रभावी क्रियान्वयन की दृष्टि से दो चरणों में आयोजित राज्य स्तरीय योग प्रशिक्षण शिविर दिनांक 18 से 24 सितम्बर एवं 24 से 29 सितम्बर, 2015 क्रमशः शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर एवं उन्नत शिक्षा अध्ययन संस्थान, बिलासपुर द्वारा आयोजित किये

गये। उक्त प्रशिक्षण शिविरों में योग शिक्षा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री बी.पी. तिवारी, डॉ. यू.व्ही. वारे, केन्द्रीय जीवन विज्ञान विभाग, लाडनूँ के सहायक निदेशक हनुमान मल शर्मा, उज्जैन के जीवन विज्ञान प्रशिक्षक मुकेश मेहता एवं पतंजलि योगपीठ, रायपुर के प्रदेश मंत्री छबिराम साहू ने अपनी सेवाएं दी। इन शिविरों में छत्तीसगढ़ राज्य के अंबिकापुर, धरमजयगढ़, कोरिया, जशपुर, पेन्ड्रा, कोरबा, जांजगीर, कबीरधाम, दन्तेवाड़ा, बेमेतरा, खैरागढ़, कांकेर, रायपुर, नगरी एवं बस्तर जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट) से कुल 58 मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण में एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अतिरिक्त प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान, कायोत्सर्ग, अनुप्रेक्षा एवं प्रेक्षाध्यान के चार चरणों का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। उक्त प्रशिक्षण शिविर में पोरवाल चेरीटेबल ट्रस्ट एवं जीवन विज्ञान अकादमी दुर्ग–भिलाई के सहयोग हेतु हार्दिक आभार। प्रशिक्षकगण की सेवाओं हेतु आभार।

- **जीवन विज्ञान प्रशिक्षण कार्यशाला** : दिल्ली में विराजित प्रेक्षाप्राध्यापक 'शासनश्री' मुनिश्री किशनलालजी के सान्निध्य में दिनांक 23–25 अक्टूबर, 2015 को त्रिदिवसीय 'जीवन विज्ञान प्रशिक्षण कार्यशाला' का आयोजन किया गया। कार्यशाला में जयपुर, पानीपत, उत्तराखण्ड, दिल्ली आदि स्थानों से लगभग 20 भाई–बहनों ने भाग लिया। प्रेक्षाप्राध्यापक मुनिश्री किशनलालजी एवं मुनिश्री नीरजकुमारजी के सान्निध्य एवं कुशल प्रशिक्षण हेतु हार्दिक कृतज्ञता। कार्यशाला की व्यवस्थाओं में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दिल्ली के पदाधिकारी के सहयोग भाव हेतु आभार एवं कर्मीगणों के श्रम हेतु साधुवाद।
- **शिक्षक विद्यार्थी प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन** : जीवन विज्ञान विभाग, जैन विश्व भारती एवं जीवन विज्ञान अकादमी, मुम्बई के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 04–08 दिसम्बर 2015 को जीवन विज्ञान विद्यार्थी–शिक्षक कार्यशालाओं का आयोजन मुम्बई के मीरा, भायंदर एवं काशीगांव में किया गया। कार्यशाला में उक्त क्षेत्रों के विभिन्न विद्यालयों के सैंकड़ों शिक्षकों व विद्यार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। कार्यशालाओं के आयोजन में जीवन विज्ञान अकादमी, मुम्बई के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कोठारी, उपाध्यक्ष श्री अभिषेक बाफना एवं श्रीमती उषा जैन के उल्लेखनीय सहयोग हेतु हार्दिक आभार।
- **सरदारशहर में जीवन विज्ञान शिक्षक–विद्यार्थी प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन** : केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी, लाडनूं के निर्देशन में जीवन विज्ञान अकादमी, सरदारशहर द्वारा राजकीय माध्यमिक विद्यालय, नैणासर तथा राजकीय माध्यमिक विद्यालय, गिड़गिचिया में दिनांक 12–13 जनवरी 2016 को जीवन विज्ञान विद्यार्थी–शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशाला का अयोजन किया गया। कार्यशाला में ''प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान'' का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। उक्त कार्यशाला में विद्यालयों के सैंकड़ों विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं ग्रामवासियों ने भाग लिया।
- **महाप्रज्ञ इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस, आसीन्द में जीवन विज्ञान प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन** : जीवन विज्ञान विभाग, जैन विश्व भारती के निर्देशन में महाप्रज्ञ इंस्टीट्यूट ऑफ एक्सीलेंस के अन्तर्गत संचालित महाप्रज्ञ स्कूल ऑफ एक्सीलेंस तथा महाप्रज्ञ कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस में क्रमशः 19–20 जनवरी 2016 को जीवन विज्ञान प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशालाओं में विद्यालय व कॉलेज के सैंकड़ो विद्यार्थियों, अध्यापकों व अन्य स्टाफगण में भाग लेकर जीवन विज्ञान प्रशिक्षण प्राप्त किया। इंस्टीट्यूट के चेयरमैन श्री रोशनलाल संचेती के सहयोग हेतु हार्दिक आभार।
- **दौलतगढ़ में जीवन विज्ञान प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन** : जीवन विज्ञान विभाग, जैन विश्व भारती, लाडनूँ के निर्देशन में आचार्यश्री तुलसी उच्च प्राथमिक विद्यालय, दौलतगढ़ के प्रांगण में 18 जनवरी 2016 को जीवन विज्ञान विद्यार्थी प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें स्थानीय राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, बिड्डल उच्च प्राथमिक विद्यालय तथा आचार्यश्री तुलसी उच्च प्राथमिक विद्यालय, दौलतगढ़ के लगभग 200 छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। ''प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान'' का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान करने के साथ–साथ आसन, महाप्राण ध्वनि, कायोत्सर्ग, दीर्घ श्वास प्रेक्षा, ज्ञान केन्द्र प्रेक्षा एवं संकल्प–शक्ति के प्रयोगों का अभ्यास करवाया गया।

- **जीवन विज्ञान राष्ट्रीय चिन्तन गोष्ठी का आयोजन** : देश–विदेश में कार्यरत जीवन विज्ञान अकादमियों एवं कार्यकर्ताओं को एक संगठनात्मक रूप प्रदान करने, क्षेत्रीय स्तर पर जीवन विज्ञान प्रशिक्षण के क्रियान्वयन में आने वाली कठिनाइयों, बाधाओं एवं उनके समाधान पर चिन्तन, क्षेत्रीय एवं प्रान्तीय अकादमियों एवं कार्यकर्ताओं की अपेक्षाओं, आवश्यकताओं के सन्दर्भ में चिन्तन तथा प्रशिक्षण की एकरूपता एवं प्रारूप पर विचार–विमर्श जैसे अनेक उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए जीवन विज्ञान विभाग, जैन विश्व भारती द्वारा परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य एवं जीवन विज्ञान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री योगेशकुमारजी के निर्देशन में दिनांक 03–04 अप्रैल, 2016 को बंगाईगांव में जीवन विज्ञान राष्ट्रीय चिन्तन गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता अकादमी के चेयरमेन श्री ख्यालीलाल तातेड़ ने की।

  गोष्ठी में राष्ट्रीय संयोजक श्री सुरेश कुमार कोठारी सहित देश–विदेश के अनेक जीवन विज्ञान अकादमियों से जुड़े वरिष्ठ पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। चिन्तन गोष्ठी का शुभारम्भ परमपूज्य आचार्यप्रवर के मंगल आशीर्वचन से हुआ, पूज्यप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। गोष्ठी में प्रेक्षाध्यान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कुमारश्रमणजी एवं जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कीर्तिकुमारजी का सान्निध्य व संबोध प्राप्त हुआ, एतदर्थ मुनिवृंद के प्रति कृतज्ञता।
- **अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन** : जीवन विज्ञान अकादमी, संयोजकीय कार्यालय, इन्दौर के माध्यम से दिनांक 21 जून 2016 को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में देशभर में कार्यरत जीवन विज्ञान अकादमियों एवं कार्यकर्ताओं को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस को भव्यता के साथ मनाने हेतु मार्गदर्शन के साथ जीवन विज्ञान योग संबंधी पॉवर–प्वाइंट एवं कार्य–योजना प्रेषित की गई। साथ ही इंटरनेट, फेसबुक, वाट्सएप्प आदि इन्फोरमेशन टेक्नोलोजी के माध्यम से निरन्तर प्रेरणादायी वाक्यों के साथ पोस्टर द्वारा जीवन विज्ञान योग का प्रचार–प्रसार किया गया। दिनांक 21 जून 2016 को मध्यप्रदेश जीवन विज्ञान अकादमी इन्दौर के तत्वावधान में इन्दौर के अनेक स्थानों पर ध्यान–योग एवं जीवन विज्ञान संबंधी कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया।
- **भिलाई में जीवन विज्ञान शिक्षक एवं विद्यार्थी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन** : जीवन विज्ञान विभाग के निर्देशन में श्री महावीर बाल कल्याण समिति द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द सरस्वती शिशु मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय, कैलाशनगर, भिलाई के प्रांगण में जीवन विज्ञान अकादमी, दुर्ग–भिलाई द्वारा आयोजित एवं पोरवाल चेरीटेबल ट्रस्ट, भिलाई द्वारा प्रायोजित "जीवन विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण शिविर 11 से 16 जून 2016" तथा "जीवन विज्ञान विद्यार्थी प्रशिक्षण शिविर 16 से 23 जून, 2016" का सामूहिक वर्धापन समारोह का आयोजन हुआ। इस अवसर पर शिविरार्थियों ने प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान की गतिविधियों के साथ–साथ विविध आसनों का प्रदर्शन किया। उक्त शिविर में 30 शिक्षक–शिक्षिकाओं एवं 45 विद्यार्थियों ने भाग लिया। शिविर में प्रशिक्षण सहयोग हेतु जैन विश्व भारती संस्थान के क्षेत्रीय समन्वयक श्री मुकेश मेहता, उज्जैन तथा व्यवस्थाओं व प्रायोजकीय सहयोग हेतु पोरवाल चेरीटेबल ट्रस्ट के प्रति आभार।
- **भिलाई में जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला का आयोजन** : जीवन विज्ञान अकादमी, दुर्ग–भिलाई के संयुक्त तत्वावधान में केरला कल्चरल एसोसिएशन द्वारा संचालित नालन्दा इंग्लिश मीडियम सीनियर सैकण्डरी स्कूल, सुन्दर नगर, भिलाई में "जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला" का आयोजन भिलाई 18 जून 2016 को किया गया जिसमें विद्यालय की कक्षा 11 एवं 12 के लगभग 250 विद्यार्थियों एवं 5 शिक्षकों ने भाग लिया। कार्यक्रम आयोजन में पोरवाल चेरीटेबल ट्रस्ट के प्रधान ट्रस्टी श्री दानमल पोरवाल, केरला कल्चरल एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री परमेश्वर, सचिव श्री शिवन् पिल्लई, विद्यालय प्रधानाचार्य श्री आशीष घोसाल, सरस्वती शिशु मंदिर प्राचार्या श्रीमती गीता देवांगन एवं श्रीमती शैल तिवारी के सहयोग हेतु आभार।

आलोच्य अवधि में आयोजित जीवन विज्ञान शिविर एवं कार्यशालाएं

क्र.सं.	कार्यक्रम	दिनांक	सहयोगी संस्था	लाभान्वित			योग
				शिक्षक	छात्र	अन्य	
1.	जीवन विज्ञान राष्ट्रीय चिन्तन गोष्ठी, दिल्ली	28 अगस्त, 2015	श्री जै.श्वे.ते.सभा, दिल्ली	–	–	15	15
2.	राज्य स्तरीय योग शिक्षा प्रशिक्षण शिविर रायपुर एवं बिलासपुर	18–24 सित. 2015 24–29 सित.2015	एस.सी.ई.आर.टी. रायपुर	–	58 –	58	
3.	जीवन विज्ञान प्रशिक्षण कार्यशाला, दिल्ली	23–25 अक्टू. 2015	श्री जै.श्वे.ते.सभा, दिल्ली	–	–	20	20
4.	जीवन विज्ञान दिवस समारोह	24 नवम्बर, 2015	लाडनूँ नगर की शिक्षण संस्थाएं	900	50	50	1000
5.	जीवन विज्ञान शिक्षक एवं विद्यार्थी प्रशिक्षण कार्यशाला, मुम्बई	04 दिसम्बर, 2015	जीवन विज्ञान अकादमी मुम्बई	–	10020	120	
6.	जीवन विज्ञान प्रशिक्षण कार्यशाला	07 दिसम्बर, 2015	जीवन विज्ञान अकादमी मुम्बई	350	10	5	365
7.	जीवन विज्ञान प्रशिक्षण कार्यशाला	08 दिसम्बर, 2015	जीवन विज्ञान अकादमी मुम्बई	800	18	5	823
8.	जीवन विज्ञान शिक्षक–विद्यार्थी प्रशिक्षण कार्यशाला	16 दिसम्बर, 2015	जीवन विज्ञान अकादमी सरदारशहर	300	10	5	315
9.	जीवन विज्ञान एवं अणुव्रत कार्यशाला	24 दिसम्बर, 2015	स्वामी विवेकानंद राज. मॉडल स्कूल डीडवाना	50	10	–	60
10.	जीवन विज्ञान विद्यार्थी शिक्षक प्रशिक्षण	12 जनवरी, 2016	जी.वि.अ.सरदारशहर राज.मा.वि. नैणासर	200	10	10	220
11.	जीवन विज्ञान विद्यार्थी –शिक्षक प्रशिक्षण	13 जनवरी, 2016	जी.वि.अ.सरदारशहर (राज.मा.वि. गिड़गिचिया)	250	10	10	270
12.	जीवन विज्ञान विद्यार्थी प्रशिक्षण कार्यशाला	18 जनवरी 2016	आचार्य तुलसी उ.प्रा. वि. दौलतगढ़	200	10	–	210
13.	जीवन विज्ञान प्रशिक्षण कार्यशाला	19 जनवरी 2016	महाप्रज्ञ स्कूल ऑफ एक्सीलेंसी, आसीन्द	200	15	5	220
14.	जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला	20 जनवरी, 2016	महाप्रज्ञ कॉलेज ऑफ एक्सीलेंसी, आसीन्द	250	10	5	265
15.	जीवन विज्ञान प्रशिक्षण कार्यशाला	20 फरवरी 2016	केशव विद्यापीठ मा.वि. डीडवाना	35	09	–	44
16.	जीवन विज्ञान राष्ट्रीय चिन्तन गोष्ठी, बंगाईगांव	03–04 अप्रैल, 2016	आ.महाश्रमण प्रवास व्य. समिति, बंगाईगांव	–	–	20	20
17.	जीवन विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण शिविर	11 से 16 जून 2016	जी.वि.अ. दुर्ग–भिलाई स.शि.मं. भिलाई	–	30	–	30
18.	जीवन विज्ञान विद्यार्थी प्रशिक्षण शिविर	16 से 23 जून 2016	जी.वि.अ. दुर्ग–भिलाई स.शि.मं. कैलाशनगर भिलाई	45	02	–	47
19.	जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला	18 जून, 2016	जी.वि.अ. दुर्ग–भिलाई केरला कल्चरल एसोसियेशन भिलाई	250	05	–	255
20.	जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला	22 जून, 2016	जी.वि.अ. दुर्ग–भिलाई स.शि.मं. कुरुद, भिलाई	200	05	–	205

उक्त शिविरों एवं कार्यशालाओं के आयोजन में स्थानीय सहयोगी संस्थाओं व कार्यकर्ताओं के सहयोग हेतु हार्दिक आभार।

देशभर में संचालित जीवन विज्ञान अकादमियों की जानकारी

01.	जीवन विज्ञान अकादमी, कोबा–गांधीनगर
02.	जीवन विज्ञान अकादमी हरियाणा, भिवानी
03.	मध्यप्रदेश जीवन विज्ञान अकादमी, इन्दौर
04.	तमिलनाडु जीवन विज्ञान अकादमी, तिरूवन्नामल्लै
05.	जीवन विज्ञान अकादमी संस्था, भीलवाड़ा
06.	राजस्थान जीवन विज्ञान अकादमी, अजमेर
07.	जीवन विज्ञान अकादमी, जयपुर
08.	जीवन विज्ञान अकादमी (अणुविभा), राजसमंद
09.	कर्नाटक जीवन विज्ञान अकादमी, बैंगलोर
10.	जीवन विज्ञान अकादमी, गुडगांव
11.	जीवन विज्ञान अकादमी, जसोल
12.	जीवन विज्ञान अकादमी, रतलाम
13.	जीवन विज्ञान अकादमी, मदुराई
14.	छत्तीसगढ़ जीवन विज्ञान अकादमी, दुर्ग/भिलाई
15.	जीवन विज्ञान अकादमी, मुंबई
16.	महाराष्ट्र जीवन विज्ञान अकादमी, जलगांव
17.	जीवन विज्ञान अकादमी, नोखा
18.	ओडिशा प्रान्तीय जीवन विज्ञान अकादमी, टिटिलागढ़
19.	जीवन विज्ञान अकादमी, गदग
20.	झारखंड जीवन विज्ञान अकादमी, करसर
21.	जीवन विज्ञान अकादमी संस्था, सरदारशहर
22.	जीवन विज्ञान अकादमी, इरोड़
23.	जीवन विज्ञान अकादमी, पल्लावरम, चेन्नई
24.	जीवन विज्ञान अकादमी, सुजानगढ़
25.	जीवन विज्ञान अकादमी, बालोतरा
26.	जीवन विज्ञान अकादमी, कुक्कटपल्ली, हैदराबाद
27.	जीवन विज्ञान अकादमी, बांसवाड़ा
28.	जीवन विज्ञान अकादमी, आरा (बिहार)
29.	जीवन विज्ञान अकादमी, सूरत
30.	जीवन विज्ञान अकादमी, आमेट
31.	जीवन विज्ञान अकादमी, चुरू
32.	जीवन विज्ञान अकादमी, नागपुर
33.	जीवन विज्ञान अकादमी, पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता
34.	जीवन विज्ञान अकादमी, कोलकाता
35.	जीवन विज्ञान अकादमी, दिल्ली
36.	जीवन विज्ञान अकादमी, अजमन, यू.ए.ई.

उक्त जीवन विज्ञान अकादमियां स्वतंत्र रूप से कार्यरत है एवं जीवन विज्ञान विभाग द्वारा समय–समय पर यथायोग्य मार्गदर्शन, प्रशिक्षण सहयोग एवं जीवन विज्ञान साहित्य आदि उपलब्ध करवाया जाता है। इन अकादमियों से जुड़े सभी कार्यकर्ताओं के सहयोग व श्रम हेतु हार्दिक आभार।

कृतज्ञता/आभार

इस वर्ष परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मुनिश्री योगेशकुमारजी को जीवन विज्ञान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक के रूप में नियुक्ति प्रदान करवाने की कृपा की है। पूज्यप्रवर की अनुकम्पा हेतु हार्दिक कृतज्ञता। मुनिश्री योगेशकुमारजी का जीवन विज्ञान के प्रभावी प्रस्तुतीकरण एवं विकास हेतु सतत मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है, एतदर्थ मुनिप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। जीवन विज्ञान के विकास हेतु 'प्रेक्षाप्राध्यापक' मुनिश्री किशनलालजी तथा मुनिश्री नीरजकुमारजी का महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन लम्बे समय से निरन्तर प्राप्त हो रहा है, एतदर्थ हार्दिक कृतज्ञता। जीवन विज्ञान प्रशिक्षकों व जीवन विज्ञान अकादमियों से जुड़े सभी कार्यकर्ताओं के सहयोग हेतु आभार। जीवन विज्ञान विभाग कार्यालय के सहायक निदेशक श्री हनुमानमल शर्मा, प्रशिक्षक श्री रामेश्वर शर्मा एवं श्री महेन्द्र कुमावत द्वारा कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु हार्दिक धन्यवाद। इस प्रवृत्ति से जुड़े सभी कार्यकर्तागण, सहयोगीगण एवं प्रशिक्षकगण को हार्दिक धन्यवाद।

: प्रस्तुति :

ख्यालीलाल तातेड़
चेयरमैन, जीवन विज्ञान विभाग

सुरेश कोठारी
राष्ट्रीय संयोजक, जीवन विज्ञान विभाग

सेवा

शिक्षा के साथ–साथ सेवा सेवा के क्षेत्र में भी जैन विश्व भारती अग्रणी है। जैन विश्व भारती परिसर में 'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला', बीदासर में 'श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र', विद्युत चुम्बकीय चिकित्सा केन्द्र एवं स्व. मनोहरीदेवी दूगड़ आयुर्वेद चिकित्सा केन्द्र, बीदासर सुचारू रूप से संचालित है।

सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला

राष्ट्र संत युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी की सद्प्रेरणा से उनके अग्रज सेवाभावी मुनिश्री चम्पालालजी की स्मृति में सन् 1978 में जैन विश्व भारती में सेवा की एक इकाई के रूप में 'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला' का शुभारम्भ किया गया। जैन विश्व भारती परिसर में इसका संचालन एक न्यास के अन्तर्गत हो रहा है, जिसमें जैन विश्व भारती के अध्यक्ष व मंत्री पदेन न्यासी हैं। परमपूज्य आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एवं आचार्यश्री महाश्रमणजी के शुभार्शीवाद से सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला विगत लगभग 38 वर्षों से जन सामान्य की चिकित्सा सेवा में संलग्न है।

सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला का मुख्य उद्देश्य शास्त्रीय विधान से प्रामाणिक एवं विश्वसनीय आयुर्वेदिक औषधियों का निर्माण कर जन सामान्य को चिकित्सा सेवा से लाभान्वित करना है। रसायनशाला को राज्य सरकार के आयुर्वेद विभाग से 345 प्रकार की शास्त्रीय तथा 37 प्रकार की प्रोपराइटरी (अनुभूत) औषधियों के निर्माण हेतु ड्रग मेन्यूफेक्चरिंग लाईसेंस नं. 692–डी प्राप्त है। इन औषधियों के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की बहुमूल्य औषधियां (स्वर्ण भस्म व चांदी भस्म युक्त), रस, कूपी, पक्व रसायन, पर्पटी भस्म, पिस्टी, वटी, गुग्गुल, आसवारिष्ट, तेल, लौह मण्डूर, अवलेह, क्वाथ, शोधित द्रव्य, सत्त्व एवं क्षार तथा विशिष्ट स्वाम्य औषधियों का निर्माण कुशल वैद्यों के निर्देशन में उच्च स्तरीय गुणवत्ता नियंत्रण पद्धति के साथ किया जाता है। रसायनशाला को राज्य सरकार के आयुर्वेद विभाग से जीएमपी सर्टिफिकेट अर्थात् विशुद्ध औषध निर्माण पद्धति का प्रमाण पत्र प्राप्त है।

रसायनशाला द्वारा निर्मित औषधियों के प्रयोग से अब तक हजारों रोगियों ने विभिन्न प्रकार के जीर्ण एवं जटिल रोग जैसे– पथरी, वात रोग, अस्थमा, पाईल्स, सभी प्रकार के ज्वर, रक्तचाप, कैंसर, अग्निमांद्य तथा दौर्बल्य आदि रोगों में स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया है। अपनी स्थापनाकाल से अब तक जन सामान्य के साथ–साथ अपनी औषधियों के द्वारा साधु–साध्वियों एवं समण–समणीयों की आरोग्य सेवा में योगभूत बन रसायनशाला प्रबंधन अपने आपको अत्यंत सौभाग्यशाली महसूस करता है। रसायनशाला का दृष्टिकोण कभी व्यवसायिक नहीं रहा, इसलिए मात्रा को आधार मानकर अपने उत्पादों की गुणवत्ता के साथ कभी समझौता नहीं किया गया एवं उत्तम किस्म की औषधियों का निर्माण करना ही इसका मुख्य लक्ष्य रहा है। रसायनशाला की आलोच्य वर्ष की गति–प्रगति की जानकारी इस प्रकार है–

- सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला के मुख्य न्यासी श्री शांतिलाल बरमेचा एवं अन्य न्यासी – श्री रूपचंद दूगड़, श्री धनपतसिंह दूगड़, श्री प्रकाशचंद बैद एवं श्री राकेश कठोतिया के स्वैच्छिक त्याग–पत्र प्राप्त होने के कारण नए न्यास मण्डल का गठन किया गया। दिनांक 28 फरवरी 2016 को आयोजित सेवाभावी आयुर्वेदिक रयासनशाला के न्यास मण्डल की बैठक में सर्वसम्मति से लिए गए निर्णयानुसार श्री मूलचंद नाहर, जाणुन्दा–बैंगलोर सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला के मुख्य न्यासी के पद पर चयनित हुए। इसके अतिरिक्त श्री रूपचंद दूगड़–मुंबई, श्री अभयराज बैंगानी–बीदासर, श्री गिरीश लूनिया–विराटनगर (नेपाल) न्यासी पद पर चयनित हुए तथा दिनांक 22 मई 2016 को आयोजित न्यास मण्डल की

बैठक में श्री जीवनमल जैन (मालू)–छापर, श्री सुखराज सेठिया–दिल्ली एवं श्री बाबूलाल सेखानी–अहमदाबाद सर्वसम्मति से न्यासी के रूप में चयनित हुए। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष व मंत्री रसायनशाला के न्यास मण्डल में पदेन न्यासी होते हैं। रसायनशाला के निवर्तमान मुख्य न्यासी श्री शांतिलाल बरमेचा, निवर्तमान न्यासीगण– श्री धनपतसिंह दूगड़–कोलकाता, श्री प्रकाशचंद बैद–कोलकाता एवं श्री राकेश कठोतिया–मुंबई की उल्लेखनीय सेवाओं हेतु हार्दिक आभार।

- रसायनशाला में निःशुल्क परामर्श एवं चिकित्सा सेवा ओ.पी.डी. विभाग के अन्तर्गत संचालित है, जिसमें दो वैद्यों की सेवाएं रोगियों को निःशुल्क प्राप्त है। प्रतिदिन लाडनूं एवं आस–पास के क्षेत्रों के रोगी आकर इस सुविधा का लाभ प्राप्त करते हैं। आलोच्य अवधि में 7113 रोगियों ने इस सुविधा के अन्तर्गत आरोग्य सेवा का लाभ प्राप्त किया।
- माह अक्टूबर 2015 में गंगाशहर में निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में सैंकड़ों रोगियों ने सेवा का लाभ प्राप्त किया। उक्त शिविर के प्रायोजकीय सहयोग हेतु श्री सुमेरमलजी बोथरा परिवार, गंगाशहर के प्रति हार्दिक आभार।
- माह मार्च 2016 में आचार्यश्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान, सिरियारी में निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में सैंकड़ों रोगियों ने सेवा का लाभ प्राप्त किया। उक्त शिविर के प्रायोजकीय सहयोग हेतु हजारीमल श्यामसुखा चेरिटेबल ट्रस्ट, कोलकाता के प्रति हार्दिक आभार।
- दिनांक 06–12 अप्रैल 2016 को पुणे में Jain International Trade Organisation (JITO) द्वारा आयोजित कार्यक्रम में रसायनशाला द्वारा निर्मित उत्पादों के विक्रय हेतु स्टॉल लगाई गई। इस कार्य में प्रेरणा एवं सहयोग हेतु तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सलिल लोढ़ा के प्रति हार्दिक आभार।
- दिनांक 03 मई 2016 को सरदारशहर में आयोजित आचार्यश्री महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस के अवसर पर रसायनशाला द्वारा निर्मित उत्पादों के विक्रय हेतु स्टॉल लगाई गई। इस कार्य में सहयोग हेतु श्री जब्बर चिंडालिया, जयपुर के सहयोग हेतु हार्दिक आभार।
- रसायनशाला के उत्पादों के समुचित संरक्षण की दृष्टि से मुख्य स्टोर को वातानुकूलित सुविधा से युक्त कराया गया।
- रसायनशाला में निर्मित औषधियों की उत्पादन क्षमता को बढ़ाने की दृष्टि से चूर्ण पिसाई की मशीन क्रय की गई है। मशीन का ऑर्डर किया हुआ है, लगभग सितम्बर प्रथम सप्ताह तक मशीन स्थापित हो जायेगी। इस कार्य में न्यासी श्री अभयराज बैंगानी एवं श्री जीवनमल जैन (मालू) के सहयोग हेतु हार्दिक आभार तथा विशेष सहयोग हेतु श्री हंसराज डागा, गंगाशहर के प्रति आभार।
- इस वर्ष रसायनशाला के विकास हेतु श्री नोरतनमल दूगड़, जयपुर का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ, इस हेतु उनके प्रति हार्दिक आभार।

आभार

रसायनशाला के विकास हेतु जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री धरमचंद लुंकड़ के सक्रिय सहयोग एवं समन्वय भाव हेतु हार्दिक आभार। रसायनशाला के नये न्यासी श्री अभयराज बैगानी का समय–समय पर सहयोग एवं सेवाएं प्राप्त हो रही है, इस हेतु उनके प्रति हार्दिक आभार। रसायनशाला के प्रशासक श्री राजेन्द्र खटेड़ द्वारा कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु हार्दिक धन्यवाद। आयुर्वेद के अनुभवी वरिष्ठ चिकित्सक वैद्य श्री संतोषकुमार शर्मा, वैद्य श्री ओमप्रकाश शर्मा एवं वैद्य श्री रामकुमार शर्मा की सेवाओं हेतु साधुवाद एवं सभी कर्मचारीगण को कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद।

: प्रस्तुति :
मूलचंद नाहर,
मुख्य न्यासी
सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला

श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र, बीदासर

प्राकृतिक चिकित्सा, एक्यूप्रेशर एवं फिजियोथेरेपी पद्धति से रोगियों की चिकित्सा हेतु श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र की स्थापना जैन विश्व भारती की एक इकाई के रूप में बीदासर में की गई। यहां आधुनिक उपकरणों द्वारा व्यायाम की सुविधा उपलब्ध है। वर्तमान में केन्द्र के अंतर्गत होम्योपैथिक चिकित्सा से रोगियों को स्वास्थ्य लाभ दिया जा रहा है, जिसमें केवल बीदासर ही नहीं अपितु आस–पास के अनेक गांवों से रोगी आकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करते हैं।

प्रत्येक रविवार को तेरापंथ भवन, बीदासर में शिविर लगाया जाता है, जिसमें चारित्रात्माओं के अलावा गांव के लोग भी स्वास्थ्य लाभ हेतु आते हैं। प्रतिदिन रोगी के हिसाब इस चिकित्सालय से आलोच्य अवधि में 7419 रोगियों ने निःशुल्क चिकित्सा सेवा का लाभ प्राप्त किया। आलोच्य अवधि में चिकित्सालय स्वाईन फ्लू जैसी बीमारी से बचाव हेतु स्वाईन फ्लू रोधी दवाई लोगों को पिलाई गई। मर्यादा महोत्सव के अवसर पर तेरापंथ भवन, बीदासर में मुनिश्री विमलकुमारजी के पावन सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. विजेन्द्र कुमार गौड़ को उनकी सेवाओं हेतु सम्मानित किया गया।

चिकित्सा प्रभारी एवं होम्योपेथिक विभाग में सेवारत डॉ. विजेन्द्र कुमार गौड़ को कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु हार्दिक धन्यवाद।

विद्युत चुम्बकीय चिकित्सा केन्द्र

सेवा के क्षेत्र में जैन विश्व भारती द्वारा 'विद्युत चुम्बकीय चिकित्सा पद्धति' के नाम से उपक्रम संचालित है। जैन विश्व भारती स्थित आरोग्यम चिकित्सालय में संचालित इस चिकित्सा केन्द्र में विद्युत चुम्बकीय चिकित्सा पद्धति द्वारा विभिन्न जटिल रोग जैसे– लकवा, पोलियो, स्लिप डिस्क, स्पोण्डिलाइटिस, रीढ़ की हड्डी के रोगों के इलाज के साथ दमा, उच्च रक्तचाप आदि का भी सुगम ईलाज किया जा सकता है। जैन विश्व भारती में आवासित लोगों के साथ–साथ स्थानीय सभी जाति एवं वर्ग के लोग स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं तथा दूर–दराज क्षेत्रों से भी चिकित्सा हेतु लोग उपस्थित होते हैं। इस चिकित्सा केन्द्र से आलोच्य अवधि कुल 4302 रोगियों ने स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया। वर्तमान में चिकित्सक के रूप में डॉ. हिमांशु मालपुरी कार्यरत है। उनको कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु हार्दिक धन्यवाद।

स्व. मनोहरी देवी दूगड़ आयुर्वेद चिकित्सा केन्द्र, बीदासर

जैन विश्व भारती के अंतर्गत बीदासर में माणकचंद रूपचंद दूगड़ चेरिटेबल ट्रस्ट, बीदासर–मुंबई के प्रायोजकत्व में दिनांक 01 नवम्बर 2011 से 'स्व. मनोहरी देवी दूगड़ आयुर्वेद चिकित्सा केन्द्र' का प्रारंभ किया गया। यह केन्द्र बीदासर निवासी श्री रूपचंद दूगड़ के निजी अतिथि गृह में संचालित है। यहां आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति द्वारा चिकित्सा की व्यवस्था है तथा सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला से निर्मित आयुर्वेदिक औषधियां चिकित्सा की दृष्टि से प्रयोग की जाती है। वैद्य श्री विजयकुमार शर्मा चिकित्सक के रूप में कार्यरत है। इस केन्द्र में उक्त ट्रस्ट के सौजन्य से रोगियों के उपचार की निःशुल्क व्यवस्था है। प्रतिदिन रोगी के हिसाब से इस चिकित्सालय से आलोच्य अवधि में 29095 रोगियों ने निःशुल्क चिकित्सा सेवा का लाभ प्राप्त किया। प्रायोजक ट्रस्ट माणकचंद रूपचंद दूगड़ चेरिटेबल ट्रस्ट, बीदासर–मुंबई के आर्थिक सौजन्य हेतु हार्दिक आभार। वैद्य श्री विजयकुमार शर्मा को कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद।

समणी केन्द्र व्यवस्था

प्रारम्भ से ही समण श्रेणी की व्यवस्था का दायित्व निर्वहन कर जैन विश्व भारती अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रही है। जैन विश्व भारती परिसर में स्थित गौतम ज्ञानशाला में समणीवृंद का निरन्तर प्रवास रहता है। जैन विश्व भारती की समस्त गतिविधियों में समण श्रेणी की सक्रिय सहभागिता रहती है। विदेश यात्रा से संबंधित पासपोर्ट, वीजा, कानूनी दस्तावेज आदि तैयार करवाने तथा देश–विदेश में यात्रायित समण श्रेणी के विभिन्न वर्गों से बराबर संपर्क एवं अपेक्षित कार्यों की संपूर्ति में जैन विश्व भारती की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। समण श्रेणी की भारत एवं विदेश यात्राओं से संबंधित विभिन्न व्यवस्थाओं का समन्वय भी जैन विश्व भारती द्वारा किया जाता है।

वर्ष 2015-16 में समण-समणीवृंद की विदेशों में निम्न पर्युषण यात्राएं प्रस्तावित है-

1.	समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञा एवं समणी विनयप्रज्ञा	:	लॉस एजेंलस (अमेरिका)
2.	समणी कुसुमप्रज्ञा एवं समणी प्रणवप्रज्ञा	:	तलसा (अमेरिका)
3.	समणी अक्षयप्रज्ञा एवं समणी रत्नप्रज्ञा	:	सेक्रामेण्टो (अमेरिका)
4.	समणी चारित्रप्रज्ञा एवं समणी आगमप्रज्ञा	:	सेन्फ्रान्सिसको (अमेरिका)
5.	समणी प्रतिभाप्रज्ञा एवं समणी सुमनप्रज्ञा	:	बरमिंगम (यू.के.)
6.	समणी कमलप्रज्ञा एवं समणी उन्नतप्रज्ञा	:	लंदन (यू.के.)
7.	समणी निर्वाणप्रज्ञा एवं समणी मध्यस्थप्रज्ञा	:	इण्डोनेशिया
8.	समणी मलयप्रज्ञा एवं समणी पुण्यप्रज्ञा	:	सिंगापुर

इनके अतिरिक्त विदेश के केन्द्रों में वर्ष 2015-16 में लगभग स्थायी रूप से निम्नलिखित समणी वर्ग प्रवासित रहे-

1.	समणी भावितप्रज्ञा एवं समणी कंचनप्रज्ञा	:	ओरलैण्डो
2.	समणी सन्मतिप्रज्ञा एवं समणी जयन्तप्रज्ञा	:	न्यूजर्सी
3.	समणी विकासप्रज्ञा एवं समणी मर्यादाप्रज्ञा	:	ह्यूस्टन
4.	समणी सत्यप्रज्ञा एवं समणी रोहिणीप्रज्ञा	:	मियामी
5.	समणी प्रतिभाप्रज्ञा एवं समणी उन्नतप्रज्ञा	:	लंदन

उपर्युक्त केन्द्रों एवं यात्राओं के दौरान वहां प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अणुव्रत, अहिंसा प्रशिक्षण एवं जैन धर्म दर्शन के अनेक विषयों पर समणीवृंद के व्याख्यान, सेमिनार, शिविर एवं कार्यशालाएं आयोजित हुई। समणीवृंद के श्रम हेतु हार्दिक कृतज्ञता एवं व्यवस्थाओं में स्थानीय संघीय संस्थाओं व कार्यकर्ताओं के सहयोग हेतु आभार।

साधना

प्रेक्षा फाउण्डेशन

'प्रेक्षा फाउण्डेशन' जैन विश्व भारती का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। यह प्रेक्षाध्यान संबंधी समग्र गतिविधियों की सर्वोच्च नियामक संस्था है। इसका ध्येय है– प्रेक्षाध्यान को विश्वव्यापी बनाकर समस्त मानव जाति की आध्यात्मिक सेवा करना। प्रेक्षा फाउण्डेशन पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी एवं प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के अमूल्य अवदान 'प्रेक्षाध्यान' को वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी के कुशल आध्यात्मिक नेतृत्व में निष्ठा से संचालित कर रहा है।

- **तुलसी अध्यात्म नीडम्** : प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित आचार्य तुलसी के नाम से बना यह केन्द्र साधना का पवित्र स्थान है। यह वह स्थान है जहां युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी और प्रेक्षा प्रणेता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी से हजारों लोगों ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग कर अपने जीवन में बदलाव एवं शांति का अनुभव किया है। इस केन्द्र में ध्यान कक्ष, वाचनालय, 30 आवासीय कमरे, भोजनालय, कार्यालय आदि अवस्थित हैं। इस वर्ष तुलसी अध्यात्म नीडम् के ध्यान कक्ष को वातानुकूलित किया गया।

- **साधक निवास** : प्रेक्षा फाउण्डेशन साधकों के साधना की समुचित व्यवस्था करता है। जो व्यक्ति लम्बे समय तक तुलसी अध्यात्म नीडम् में रहकर साधना करना चाहें, उनके लिए उपयुक्त व्यवस्था उपलब्ध है। समुचित आवास, सात्विक भोजन व पवित्र वातावरण सहज ही साधकों को साधना के मार्ग पर अग्रसर होने में सहायक बनता है। इच्छुक साधक–साधिकाएं व्यवस्थापकों से संपर्क कर अल्पकालिक एवं दीर्घकालिक साधना के लिए इसका उपयोग कर सकते हैं।
- **प्रेक्षाध्यान शिविर एवं कार्यशाला** : जीवन को रूपान्तरित करने का एक सशक्त माध्यम है– प्रेक्षाध्यान शिविर। प्रेक्षा फाउण्डेशन नियमित रूप से प्रेक्षाध्यान शिविरों का आयोजन करता है, जिसमें हजारों लोग संभागी बनकर लाभान्वित हो चुके हैं। प्रेक्षा फाउण्डेशन जैन विश्व भारती, लाडनूं सहित देश के अन्य शहरों में भी प्रेक्षाध्यान शिविरों एवं कार्यशालाओं का आयोजन करता है। आलोच्य अवधि में आयोजित शिविरों का विवरण निम्नलिखित है–

क्र. सं.	दिनांक	शिविर का नाम	स्थान
01	09–16 अगस्त 2015	प्रेक्षाध्यान शिविर	तुलसी अध्यात्म नीडम
02.	21–28 सितम्बर 2015	प्रेक्षाध्यान शिविर	तुलसी अध्यात्म नीडम
03.	13–22 अक्टूबर 2015	प्रेक्षाध्यान शिविर	तुलसी अध्यात्म नीडम
04.	15–22 नवम्बर 2015	प्रेक्षाध्यान शिविर	तुलसी अध्यात्म नीडम
05.	06–13 दिसम्बर 2015	प्रेक्षाध्यान शिविर	तुलसी अध्यात्म नीडम
06.	11–18 मार्च 2016	प्रेक्षाध्यान शिविर	तुलसी अध्यात्म नीडम
07.	11–18 अप्रैल 2016	प्रेक्षाध्यान शिविर	तुलसी अध्यात्म नीडम
08.	11–18 जुलाई 2016	प्रेक्षाध्यान शिविर	तुलसी अध्यात्म नीडम

उक्त शिविरों में सैंकड़ों शिविरार्थियों ने सहभागिता कर प्रेक्षाध्यान का लाभ उठाया। शिविर के दौरान समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी, समणी मधुरप्रज्ञाजी, समणी मल्लीप्रज्ञाजी, समणी मंजुलप्रज्ञाजी, समणी रोहिणीप्रज्ञाजी, समणी सुलभप्रभाजी, समणी श्रेयसप्रज्ञाजी, समणी अमलप्रज्ञाजी, समणी मृदुप्रज्ञाजी आदि का सान्निध्य, मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण सहयोग प्राप्त हुआ, तदर्थ सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। प्रशिक्षक श्री महावीर प्रजापत की सेवाओं हेतु साधुवाद।

- **सप्त दिवसीय मेगा प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन** : जैन विश्व भारती स्थित **'आचार्य तुलसी अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र'** के भवन में प्रेक्षा फाउण्डेशन, जैन विश्व भारती द्वारा दिनांक 21–28 फरवरी 2016 तक सप्तदिवसीय द्वितीय मेगा प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारम्भ समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी एवं जैन विश्व भारती संस्थान की तत्कालीन कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी के पावन सान्निध्य में हुआ।

  सप्त दिवसीय शिविर के दौरान प्रतिदिन समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी द्वारा प्रेक्षाध्यान के सैद्धान्तिक पक्ष का प्रशिक्षण दिया गया। शिविर के प्रतिदिन का प्रारम्भ और समापन समणी श्रेयसप्रज्ञाजी के ध्यान के चार चरण – कायोत्सर्ग, अन्तर्यात्रा, श्वास प्रेक्षा और ज्योति केन्द्र प्रेक्षा के अभ्यास द्वारा होता था। शिविर में समणी विनयप्रज्ञाजी, समणी मल्लिप्रज्ञाजी, समणी मंजुलप्रज्ञाजी, समणी मृदुप्रज्ञाजी आदि समणीवृंद द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया। सभी समणीवृंद के प्रति हार्दिक कृतज्ञता।

  प्रशिक्षक श्री महावीर प्रजापत एवं जैन विश्व भारती संस्थान के प्रेक्षाध्यान एवं योगा विभाग के विद्यार्थियों आदि का सहयोग प्राप्त हुआ, सभी को हार्दिक साधुवाद। श्री आलोक पाण्डेय द्वारा प्राप्त प्रशिक्षण सहयोग हेतु धन्यवाद। शिविर में विभिन्न पेशेवर चिकित्सक, चार्टर्ड अंकाउंटेंट, इंजीनियर एवं बुद्धिजीवी वर्ग सहित श्री जैन श्वेताम्बर मानव हितकारी संघ, राणावास की छात्राओं ने भाग लिया। शिविर में राजस्थान, मध्यप्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक आंध्रप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार, अरूणांचल प्रदेश, दिल्ली, महाराष्ट्र, उड़ीसा, असम, पश्चिम बंगाल, गुजरात आदि विभिन्न राज्यों से लगभग 85 भाई–बहनों ने भाग लेकर प्रेक्षाध्यान, आसन–प्राणायाम, कायोत्सर्ग, श्वास प्रेक्षा, शरीर प्रेक्षा, चैतन्य केन्द्र प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा एवं शरीर विज्ञान आदि का सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

- **अष्ट दिवसीय प्रेक्षा प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर (लेवल 1 एवं लेवल 2)** : दिनांक 21–29 फरवरी 2016 तक तुलसी अध्यात्म नीडम, जैन विश्व भारती में अष्टदिवसीय प्रेक्षा प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में देशभर से लगभग 30 प्रेक्षा प्रशिक्षकों ने सहभागिता की। शिविर के कुशल संचालन में प्रेक्षा फाउण्डेशन के राष्ट्रीय संयोजक श्री राजेन्द्र मोदी की सेवाएं रही।
- **प्रेक्षा प्रशिक्षक योजना** : प्रेक्षा प्रशिक्षकों के निर्माण हेतु प्रेक्षा फाउण्डेशन के अन्तर्गत 'प्रेक्षा प्रशिक्षक योजना' जारी है। इसके अंतर्गत प्रेक्षाध्यान का एक समग्र पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। लिखित एवं प्रायोगिक परीक्षाओं का क्रम रखा गया है। यह परीक्षाएं उत्तीर्ण कर व्यक्ति प्रेक्षाध्यान का सम्यक् प्रशिक्षण प्राप्त कर कुशल प्रशिक्षक बनकर दीपक की तरह स्वयं प्रकाशित होकर दूसरों के जीवन को भी प्रकाशित कर सकता है। प्रेक्षा फाउण्डेशन प्रशिक्षकों के निर्माण, उनसे नियमित संपर्क एवं प्रशिक्षण विधि की एकरूपता के लिए कटिबद्ध है। प्रतिवर्ष पूज्यप्रवर के सान्निध्य में देशभर के प्रेक्षा प्रशिक्षकों का अधिवेशन भी आयोजित किया जाता है। दिनांक 08–09 अक्टूबर 2015 को द्विदिवसीय प्रेक्षावाहिनी एवं प्रेक्षा प्रशिक्षक अधिवेशन विराटनगर (नेपाल) में आयोजित किया गया। प्रेक्षा प्रशिक्षक शिविर में सान्निध्य एवं पावन पाथेय प्रदान करवाने हेतु पूज्यप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता एवं महनीय मार्गदर्शन हेतु प्रेक्षाध्यान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कुमारश्रमणजी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। आलोच्य अवधि में 'प्रेक्षा प्रशिक्षक परीक्षाएं' बैंगलोर, सूरत, मुंबई, लाडनूं में आयोजित की गयी। आलोच्य अवधि में कोलकाता, नागपुर, सूरत, बैंगलोर में प्रेक्षा प्रशिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की नियमित कक्षाएं आयोजित की गई। इन कक्षाओं में सैंकड़ों भाई–बहिनों ने प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण लिया। प्रेक्षा प्रशिक्षण परीक्षा से संबंधित पाठ्यक्रम आदि तैयार करने तथा प्रेक्षा प्रशिक्षण संबंधी विभिन्न गतिविधियों में मार्गदर्शन, सहयोग व सेवाओं हेतु श्री एन. सी. जैन–नवी मुंबई, श्री माणकचंद रांका–पुत्तुर, श्री मदनलाल दुधोड़िया–सूरत, श्री डालमचंद सेठिया–बैंगलोर, श्री पारस दूगड़–कांदिवली (मुंबई), श्री गौतम गादिया–सूरत, श्री मनोज सुराणा–सूरत, श्री उतम वोहरा आदि के प्रति हार्दिक आभार।
- **प्रेक्षाध्यान पत्रिका प्रतिनिधि मंडल का गठन** : आलोच्य अवधि में प्रेक्षाध्यान मासिक पत्रिका के प्रचार प्रसार की दृष्टि से प्रेक्षा पत्रिका प्रतिनिधि मंडल का गठन किया गया एवं राष्ट्रीय संयोजिका श्रीमती करुणा कोठारी के नेतृत्व में मुम्बई, सूरत, ओडीशा, चेन्नई, दिल्ली, उदयपुर, रायपुर, गुवाहाटी, जोधपुर, शिलौंग, सिलीगुड़ी, भीलवाड़ा इत्यादि स्थानों में 42 प्रतिनिधियों की नियुक्ति की गयी। स्थानीय प्रतिनिधियों के सक्रिय सहयोग से प्रेक्षा पत्रिका का परिवार और समृद्ध हुआ एवं 10 वर्षीय नवीन सदस्यों की संख्या में अच्छी वृद्धि हुई। प्रेक्षा पत्रिका प्रतिनिधि मंडल की राष्ट्रीय संयोजिका एवं समस्त स्थानीय प्रतिनिधियों के सहयोग हेतु हार्दिक आभार। पत्रिका सदस्यता अभियान में सहयोग हेतु श्री प्रदीप पगारिया–रायपुर, श्री विकास आच्छा–मुंबई, श्री पंकज कोठारी–मुंबई, श्रीमती सुमन चपलोत–मुंबई, श्री पंकज मादरेचा–राजसमंद, श्रीमती नीरू सेठिया–शिलौंग, श्री रायचंद जैन–ओडीशा, श्री जयचंद दूगड़–कूचबिहार आदि के प्रति आभार। पत्रिका के प्रचार–प्रसार की दृष्टि से अपने आर्थिक सौजन्य से लोगों तक पत्रिका पहुंचाने में श्री कन्हैयालाल विकास बोथरा, लाडनूं–इस्लामपुर एवं श्री ताराचंद सुराणा, कोलकाता के सहयोग हेतु आभार।
- **प्रेक्षाध्यान केन्द्रों को संबद्धता** : सम्पूर्ण देश भर में संचालित विभिन्न प्रेक्षाध्यान केन्द्रों में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों को एकरुपता प्रदान करने की दृष्टि से प्रेक्षा फाउंडेशन के बैनर के अन्तर्गत संबद्धता प्रदान करने का कार्य किया गया। आलोच्य अवधि में अध्यात्म साधना केन्द्र–मैहरोली, प्रेक्षा विश्व भारती–कोबा, प्रेक्षाध्यान केन्द्र–अम्बाबाड़ी, सूरत, इन्दौर, कूचबिहार, चेनई, रायपुर, कांदीवली, विक्रोली, राजकोट, गुवाहाटी इत्यादि स्थानों पर संचालित प्रेक्षाध्यान केन्द्रों को प्रेक्षा फाउण्डेशन से संबद्धता प्रदान की गयी है।
- **प्रेक्षावाहिनी** : प्रेक्षाध्यान में रूचि रखने वाले साधकों के समूह का नाम है– प्रेक्षावाहिनी। साधकों में परस्पर संपर्क एवं संवाद बना रहे, इस दृष्टि से स्थानीय स्तर पर अनेक स्थानों पर प्रेक्षावाहिनी गठित हो चुकी है। प्रत्येक माह के प्रथम रविवार को प्रेक्षावाहिनी द्वारा प्रेक्षाध्यान की एक घण्टे की एक ध्यान गोष्ठी आयोजित की जाती है। इस क्रम में अभी तक

कांदिवली–मुंबई, नागपुर, औरंगाबाद, कोल्हापुर, पुणे, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कटक, टिटिलागढ़, चेन्नई, रायपुर, बैंगलोर, विशाखापट्टनम्, इचलकरंजी, गांधीनगर–दिल्ली, कृष्णानगर–दिल्ली, ओसवाल भवन–दिल्ली, शालीमार बाग–दिल्ली, लक्ष्मी नगर–दिल्ली, शास्त्री नगर–दिल्ली, लाजपत नगर–दिल्ली, मॉडल टाउन–दिल्ली, उत्तम नगर–दिल्ली, नोएडा–दिल्ली आदि क्षेत्रों में प्रेक्षावाहिनियां संचालित हो रही है। आलोच्य अवधि में कुर्ला, डोम्बिवली, साल्टलेक–कोलकाता, बांगुर–कोलकता, लेक टाउन–कोलकाता, सूर्यनगर–दिल्ली, रतलाम, सवाईमाधोपुर, इरोड, आदि क्षेत्रों में नई प्रेक्षावाहिनियां गठित हुई है। प्रेक्षावाहिनी के संवाहक, सह संवाहक, सदस्य प्रेक्षाध्यान के प्रचार–प्रसार करने के लिए कटिबद्ध है तथा जागरूकता के साथ स्वयं साधना के पथ पर अग्रेसित हैं एवं दूसरों को साधना के मार्ग पर बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। सभी के प्रति हार्दिक साधुवाद।

प्रेक्षावाहिनी के निदेशक मण्डल के सदस्य श्री मर्यादा कुमार कोठारी–जोधपुर, श्री सुबोध पुगलिया–जयपुर, श्री विकास सुराणा–इचलकरंजी, श्रीमती राज गुनेचा–दिल्ली, श्रीमती अर्चना जैन–नागपुर एवं श्री सुरेन्द्र ओसवाल–रायपुर की सेवाओं व सहयोग हेतु हार्दिक आभार। प्रेक्षावाहिनियों के विभिन्न स्थानों पर गठन के कार्य में विशेष प्रयासों हेतु जैन विश्व भारती के उपाध्यक्ष श्री संजय खटेड़, दिल्ली के प्रति आभार।

- **आचार्य तुलसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र के लिए 'प्रेक्षा कार्ड योजना'** : आचार्य तुलसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र से अधिकाधिक लोग लाभान्वित हो सकें, इस दृष्टि से प्रेक्षा फाउण्डेशन, जैन विश्व भारती द्वारा **'प्रेक्षा कार्ड योजना'** प्रारम्भ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत चार तरह की श्रेणियां निर्धारित की गई है– 1. प्रेक्षा सिल्वर कार्ड (सहयोग राशि रु. 25 हजार) 2. प्रेक्षा गोल्डन कार्ड (सहयोग राशि रु. 50 हजार) 3. प्रेक्षा प्लेटिनम कार्ड (सहयोग राशि रु. 1 लाख), एवं 4. प्रेक्षा एमरल्ड् कार्ड (सहयोग राशि रु. 5 लाख)। कोई भी व्यक्ति निर्धारित सहयोग राशि प्रदान कर श्रेणी अनुसार योजना की निर्धारित सुविधाओं के अन्तर्गत उक्त केन्द्र में आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविरों में सहभागिता प्राप्त कर लाभान्वित हो सकता है। प्रेक्षा कार्ड बनवाकर सदस्यों को प्रेषित किये जा रहे हैं।
- **आनन्द निलय' अतिथि गृह का निर्माण** : आचार्य तुलसी इंटरनेशनल प्रेक्षा मेडिटेशन सेन्टर के परिपार्श्व में आगन्तुक शिविरार्थियों की समुचित आवास व्यवस्था की सुविधार्थ 'आनन्द निलय' अतिथि गृह का निर्माण कार्य जारी है। इस कार्य में श्री श्रीचंद जीवनमल थानमल मालू परिवार (छापर–गांधीधाम–बंगाईगांव–भरूंच) के आर्थिक सहयोग हेतु हार्दिक आभार। निर्माण कार्य में कुशल मार्गदर्शन हेतु न्यासी श्री भागचंद बरड़िया के प्रति हार्दिक आभार।
- **'प्रेक्षाध्यान' मासिक पत्रिका** : अध्यात्म, योग और अन्य जीवनोपयोगी विषयों पर आधारित मासिक पत्रिका 'प्रेक्षाध्यान' का विगत 36 वर्षों से जैन विश्व भारती के अन्तर्गत प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका की वर्तमान सदस्य संख्या 2565 है।

प्रेक्षाध्यान पत्रिका के पूर्व संपादक श्री अशोक संचेती, दिल्ली के कुशल संपादकत्व में प्रेक्षाध्यान पत्रिका के आकार व कलेवर में परिवर्तन किया गया। पत्रिका की सामग्री में काफी परिवर्तन किया गया एवं पाठकों की रूचि के अनुसार ध्यान व योग से संबंधित सामग्री को रोचकता के साथ प्रस्तुत किया गया। लगभग 3 वर्षों तक उनकी उल्लेखनीय सेवाएं संपादक के रूप में प्राप्त हुई, एतदर्थ उनके प्रति हार्दिक आभार। वर्तमान में मई 2016 से प्रेक्षाध्यान पत्रिका के नवीन संपादक के रुप में श्री लूणकरण छाजेड़, गंगाशहर अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। श्री छाजेड़ भी कुशल लेखनी के धनी हैं तथा पत्रकारिता से लम्बे समय से जुड़े हुए हैं। श्री लूणकरण छाजेड़ की सेवाओं हेतु आभार एवं उनके सफल संपादकीय कार्यकाल की मंगलकामना। सभी विज्ञापनदाताओं तथा पत्रिका के सदस्यता अभियान में सहयोगी व्यक्तियों एवं संस्थाओं के सहयोग हेतु हार्दिक आभार।

- **ई–न्यूज लेटर का प्रारम्भ** : प्रेक्षाध्यान के संबंध में संचालित सभी महत्वपूर्ण गतिविधियों के संचालन संबंधी जानकारी को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाने की दृष्टि से माह अप्रैल 2016 से ई–न्यूज लेटर का प्रारम्भ किया गया एवं प्रतिमाह संचारित किया जा रहा है।

विनम्र श्रद्धांजलि

प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा संबद्धता प्राप्त अध्यात्म साधना केन्द्र, दिल्ली में निवासित वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक 'शासनसेवी' श्री धर्मानंदजी का देहावसान दिनांक 24 जनवरी 2016 को हो गया। प्रेक्षाध्यान से लम्बे समय से जुड़े वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक श्री रसिक भाई झवेरी, मुंबई का भी देहावसान हो गया। उन्होंने भी समर्पित कार्यकर्ता के रूप में प्रेक्षाध्यान के प्रचार–प्रसार में अपनी विशिष्ट सेवाएं प्रदान की। दोनों महानुभावों को प्रेक्षा फाउण्डेशन परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

कृतज्ञता / आभार

प्रेक्षाध्यान प्रवृत्ति के विकास हेतु प्रेक्षाध्यान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक आदरास्पद मुनिश्री कुमारश्रमणजी का महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन निरन्तर प्राप्त होता रहता है साथ ही गुरुकुलवास में आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविरों / कार्यशालाओं आदि में मुनिप्रवर का सान्निध्य व पाथेय प्राप्त होता है, इस हेतु मुनिश्री के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। समय–समय पर देश के विभिन्न क्षेत्रों में आयोजित होने वाले प्रेक्षाध्यान शिविरों व कार्यशालाओं में सान्निध्य एवं प्रशिक्षण प्रदान करवाने हेतु चारित्रात्माओं एवं समणीवृंद के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। प्रेक्षा प्रशिक्षकों की सेवाओं व सहयोग हेतु आभार। प्रेक्षा फाउण्डेशन की व्यवस्थाओं के सुनियोजन में डॉ. विजयश्री शर्मा की सेवाओं हेतु धन्यवाद। तुलसी अध्यात्म नीडम् में कार्यरत प्रशिक्षक श्री महावीर प्रजापत एवं सहयोगी श्री श्रेयांस बेगवानी द्वारा कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद।

: प्रस्तुति :

बी. रमेशचंद बोहरा
चेयरमैन
प्रेक्षा फाउण्डेशन

राजेन्द्र मोदी
राष्ट्रीय संयोजक
प्रेक्षा फाउण्डेशन

साहित्य

साहित्य प्रकाशन जैन विश्व भारती की महत्त्वपूर्ण गतिविधि है। आगम, जैन विद्या, जीवन विज्ञान से संबंधित साहित्य के साथ पूज्यवरों, चारित्रात्माओं, समण–समणीवृंद तथा शोधार्थियों द्वारा लिखित / संपादित साहित्य का प्रकाशन विगत 41 वर्षों से किया जा रहा है। आलोच्य अवधि में 27 शीर्षकों से नवीन पुस्तकों की 29081 प्रतियां तथा 31 शीर्षकों से पुर्नमुद्रित पुस्तकों की 91606 प्रतियां प्रकाशित की गई। आलोच्य अवधि में प्रकाशित पुस्तकों की सूची निम्नलिखित

नवीन साहित्य

क्र. सं.	पुस्तक का नाम	लेखक / वाचनाप्रमुख / संपादक	प्रतियां
01.	भगवई भाग–5	आचार्य तुलसी / आचार्य महाप्रज्ञ / आचार्य महाश्रमण	568
02.	ववहारो	आचार्य तुलसी / आचार्य महाप्रज्ञ / आचार्य महाश्रमण	577
03.	हर दिन नया विचार	आचार्य महाप्रज्ञ	2200
04.	श्रावक धर्म	आचार्य महाप्रज्ञ	745
05.	निर्वाण का मार्ग	आचार्य महाश्रमण	3344
06.	परमसुख का पथ	आचार्य महाश्रमण	1090
07.	The Path of Freedom from Sorrow	आचार्य महाश्रमण	5320
08.	आओ हम जीना सीखें (आसामी संस्करण)	आचार्य महाश्रमण	1000
09.	दुःख मुक्ति का मार्ग (आसामी संस्करण)	आचार्य महाश्रमण	995
10.	सुखी बनो (आसामी संस्करण)	आचार्य महाश्रमण	995
11.	क्या कहता है जैन वांग्मय (आसामी संस्करण)	आचार्य महाश्रमण	1003
12.	दुःख मुक्ति का मार्ग (नेपाली संस्करण)	आचार्य महाश्रमण	1010
13.	गुरुदेव तुलसी श्रद्धांजलि बावनी	मुनि मोहनलाल 'शार्दूल'	500
14.	दसवेआलियं गुटका (हस्तलिखित)		540
15.	अंशु मुत्ता	मुनि विमल कुमार	300
16.	जैन वांग्मय में ब्रह्मचर्य	डॉ. मुनि विनोद कुमार	550
17.	माटी जो चंदन बनी	साध्वी प्रकाशवती	1000
18.	पुरुषार्थ की जीवन्त प्रतिमा	साध्वी अमितरेखा	520
19.	रोशनी संयम की	साध्वी रायकंवर	500
20.	सफर सपनों का	साध्वी ललितरेखा 'खाटू'	1128
21.	शासनश्री साध्वी राजकुमारी गोगुन्दा	साध्वी पानकुमारी प्रथम	1550
22.	एक नया तीर्थ : समण श्रेणी	प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा	1078
23.	निशीथ निर्युक्ति भाष्य भाग–1	प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा	515
24.	निशीथ निर्युक्ति भाष्य भाग–2	प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा	505
25.	निशीथ निर्युक्ति भाष्य भाग–3	प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा	512
26.	निशीथ निर्युक्ति भाष्य भाग–4	प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा	526
27.	साहसिक जीवन यात्रा	समणी श्रेयसप्रज्ञा	510

पुर्नमुद्रण

क्र. सं.	पुस्तक का नाम	लेखक / वाचनाप्रमुख / संपादक	प्रतियां
01.	जैन विद्या भाग–1	आचार्य तुलसी	11060
02.	जैन विद्या भाग–2	आचार्य तुलसी	4422
03.	जैन विद्या भाग–3	आचार्य तुलसी	2197
04.	सचित्र श्रावक प्रतिक्रमण (नवीन)	आचार्य तुलसी	20296
05.	आचारांगभाष्यम्	आचार्य तुलसी / आचार्य महाप्रज्ञ / आचार्य महाश्रमण	1120
06.	आहार साधना और स्वास्थ्य	आचार्य महाप्रज्ञ	1100
07.	अमूर्त चिंतन	आचार्य महाप्रज्ञ	1137
08.	भिक्षु विचार दर्शन	आचार्य महाप्रज्ञ	2199
09.	जीव–अजीव	आचार्य महाप्रज्ञ	6721

जैन विश्व भारती

10.	जीवन की पोथी	आचार्य महाप्रज्ञ	560
11.	जीवन विज्ञान : स्वस्थ समाज का संकल्प	आचार्य महाप्रज्ञ	2203
12.	मैं कुछ होना चाहता हूं	आचार्य महाप्रज्ञ	565
13.	पथ चुनें पर कौनसा	आचार्य महाप्रज्ञ	1100
14.	संवादों में जीवन विज्ञान	आचार्य महाप्रज्ञ	2205
15.	सोया मन जग जाये	आचार्य महाप्रज्ञ	562
16.	तब होता है ध्यान का जन्म	आचार्य महाप्रज्ञ	565
17.	तुम स्वस्थ रह सकते हो	आचार्य महाप्रज्ञ	563
18.	आओ हम जीना सीखें	आचार्य महाश्रमण	2230
19.	दुःख मुक्ति का मार्ग	आचार्य महाश्रमण	11219
20.	संवाद भगवान से भाग–1	आचार्य महाश्रमण	1115
21.	संवाद भगवान से भाग–2	आचार्य महाश्रमण	1120
22.	शिलान्यास धर्म का	आचार्य महाश्रमण	1145
23.	संपन्न बनो	आचार्य महाश्रमण	1118
24.	सुखी बनो	आचार्य महाश्रमण	1144
25.	विजयी बनो	आचार्य महाश्रमण	1125
26.	An Advice for Each Day	Acharya Mahasharaman	1130
27.	तीर्थंकर चरित्र	'मंत्रीमुनि' मुनि सुमेरमल 'लाडनूं'	2168
28.	वीर विक्रमादित्य	मुनि दुलहराज	285
29.	तत्व दीपिका	साध्वी जिनप्रभा	1992
30.	ज्ञान किरण	साध्वी राजीमती	5000
31.	कंठस्थ	संकलन	2240

साहित्य संपोषण योजना

जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित साहित्य के संपोषण, संवर्द्धन एवं व्यापक प्रचार–प्रसार की दृष्टि से जैन विश्व भारती के अन्तर्गत **'साहित्य संपोषण योजना'** जारी है। इस योजना में समाज के अनेक उदारमना महानुभावों का सहयोग प्राप्त हो रहा है। सभी सहयोगी महानुभावों के प्रति हार्दिक आभार।

आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य प्रबंधन समिति का गठन

तेरापंथ धर्मसंघ के दशमाधिशास्ता परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की जन्म शताब्दी का सुअवसर सन् 2019–2020 में हमारे सम्मुख है। दिनांक 29 अक्टूबर 2015 को विराटनगर में परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में आयोजित कल्याण परिषद् की बैठक में **'आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी'** के संदर्भ में साहित्य प्रकाशन आदि से संबंधित सारे कार्य का दायित्व जैन विश्व भारती को प्रदान करने का निर्णय किया गया, जिसकी निरन्तरता में जैन विश्व भारती के अन्तर्गत **'आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य प्रबंधन समिति'** के गठन का निर्णय भी किया गया। कल्याण परिषद् में लिये गये निर्णयानुसार इस समिति का कार्य साहित्य प्रकाशित करवाना, नीति निर्धारण करना, उपर्युक्त व्यक्तियों तक पहुंचाना, शोधार्थ भेजना आदि रहेगा। इस

समिति का कार्यकाल शताब्दी वर्ष की संपन्नता तक रहेगा। समिति का प्रारूप इस प्रकार है–

श्री सुरेन्द्र कुमार चोरड़िया	कोलकाता	संयोजक
श्री मनोज कुमार लूनिया	शिलौंग	सदस्य
श्री राकेश कुमार कठोतिया	मुंबई	सदस्य
श्री संजय धारीवाल	बैंगलोर	सदस्य
श्री धरमचंद लुंकड़	चेन्नई	पदेन सदस्य (अध्यक्ष, जैन विश्व भारती)
श्री अरविन्द गोठी	दिल्ली	पदेन सदस्य (मंत्री, जैन विश्व भारती)
श्री मदनचंद दूगड़ 'जौहरी'	मुंबई	पदेन सदस्य (राष्ट्रीय संयोजक, साहित्य विभाग)

उक्त महत्वपूर्ण दायित्व जैन विश्व भारती को प्रदान कराने की अनुकम्पा हेतु परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। आदरास्पद मुनिश्री जयकुमारजी की प्रेरणा हेतु कृतज्ञता। समिति से जुड़े कार्यकर्ताओं के प्रति मंगलकामनाएं।

साहित्य के 'ऑनलाईन स्टोर' का शुभारम्भ

जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित साहित्य के ऑनलाईन विक्रय हेतु ऑनलाईन स्टोर http://books.jvbharati.org का शुभारम्भ दिनांक 21 अप्रैल 2016 अध्यक्ष श्री धरमचन्द लुंकड़ एवं न्यासी श्री भागचन्द बरड़िया द्वारा किया गया। इस ऑनलाईन स्टोर पर जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित समग्र साहित्य की सूची पुस्तकों के कवर फोटो, मूल्य, लेखक, श्रेणी आदि सूचनाओं सहित जारी की गई है, जिससे पाठक घर बैठे ऑनलाईन कोई भी पुस्तक खरीद सकते हैं। फिलहाल यह सुविधा केवल भारत तक ही सीमित रखी गई है। भविष्य में विदेश के पाठकों हेतु भी ऑनलाईन खरीद की सुविधा प्रारम्भ करने का प्रावधान है। इस वेबसाईट पर जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित पुस्तकें पाठक घर बैठे ही ऑनलाईन पढ़ सकेंगे। ऑनलाईन साहित्य की वेबसाईट के निर्माण में निष्ठाशील युवा कार्यकर्ता श्री उमेश सेठिया, जलगांव का उल्लेखनीय योगदान रहा। एतदर्थ उनके प्रति हार्दिक आभार।

अन्य उल्लेखनीय कार्य

- आचार्यश्री महाश्रमणजी के जन्मोत्सव एवं पट्टोत्सव के अवसर अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा जैन विश्व भारती का प्रकाशन एवं आचार्यप्रवर की दो पुस्तकों– 'दुःख मुक्ति का मार्ग' तथा The Path of Freedom from Sorrow की लगभग 13000 प्रतियों के स्थानीय शाखा परिषदों के माध्यम से वितरण किया गया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् की टीम के इस सद्प्रयास हेतु उनके प्रति हार्दिक साधुवाद।
- दिनांक 08–10 अप्रैल 2016 को पुणे में Jain International Trade Organisation (JITO) द्वारा आयोजित कार्यक्रम में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के बैनर तले जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित साहित्य की विक्रय हेतु स्टॉल लगाई गई। इस कार्यक्रम में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सलिल लोढ़ा की उल्लेखनीय भूमिका हेतु हार्दिक आभार।
- दिनांक 03 मई 2016 को सरदारशहर में आयोजित आचार्यश्री महाप्रज्ञ महाप्रयाण दिवस के अवसर पर जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित साहित्य की विक्रय हेतु स्टॉल लगाई गई। इस कार्य में श्री जब्बर चिंडालिया, जयपुर के सहयोग हेतु हार्दिक आभार।

आगम मंथन प्रतियोगिता VIII

आगम स्वाध्याय के प्रति रूचि जागृत करने के उद्देश्य से संचालित आगम मंथन प्रतियोगिता के क्रम में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा संपादित **'आचारांगभाष्यम्'** आगम को आधार मानकर **'आगम मंथन प्रतियोगिता VIII'** का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का शुभारम्भ आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में विराटनगर (नेपाल) में किया गया। प्रतियोगिता में

'आचारांगभाष्यम्' पुस्तक पर आधारित 400 प्रश्न रखे गए। प्रतियोगिता के प्रथम चरण में देश–विदेश के लगभग 855 प्रतिभागियों ने भाग लिया एवं इनमें से उच्चतम अंक प्राप्त करने वाले 117 प्रतिभागियों को द्वितीय चरण हेतु योग्य घोषित किया गया। द्वितीय चरण की लिखित परीक्षा दिनांक 08 मई 2016 को अहिंसा भवन, जैन विश्व भारती, लाडनूं में आयोजित हुई, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों से समागत 34 प्रतिभागियों ने लिखित परीक्षा दी। लिखित परीक्षा परिणाम के आधार पर दिनांक 08 मई 2016 को प्रतियोगिता के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्तकर्ताओं की घोषणा की गई, जो निम्न प्रकार है–

प्रथम – विजयश्री मरोठी, नोखा
द्वितीय – विजयलक्ष्मी मुंशी, उदयपुर
तृतीय – मुमुक्षु ममता सांड़, नोखा

वरीयता प्राप्त परीक्षार्थियों को हार्दिक बधाई एवं भाग लेने वाले सभी प्रतियोगियों को हार्दिक साधुवाद। इस प्रतियोगिता के प्रायोजक के रूप में श्री राजेन्द्र–शारदा पुगलिया, श्रीडूंगरगढ़–कोलकाता के सहयोग हेतु हार्दिक आभार। प्रतियोगियों को प्रश्न पुस्तिका व पुस्तकें उपलब्ध करवाने आदि के कार्यों में अनेक क्षेत्रीय कार्यकर्त्ताओं एवं स्थानीय संघीय संस्थाओं का सहयोग प्राप्त होता है, एतदर्थ सभी के प्रति हार्दिक आभार। प्रतियोगिताओं के व्यवस्था संबंधी कार्यों के कुशलतापूर्वक निष्पादन हेतु सुश्री प्रज्ञा सिंघी को हार्दिक धन्यवाद।

कृतज्ञता / आभार

आगम संपादन, साहित्य लेखन व सृजन कार्य में परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का समय–समय पर प्रेरणादायी मार्गदर्शन प्राप्त होता है, एतदर्थ पूज्यप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। आचार्यप्रवर के निर्देशन में आगम संपादन एवं साहित्य संपादन के कार्य में 'आगम मनीषी' प्रोफेसर मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी, मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी, मुनिश्री दिनेशकुमारजी, मुनिश्री कुमारश्रमणजी, मुनिश्री जयकुमारजी, मुनिश्री कीर्तिकुमारजी, मुनिश्री विश्रुतकुमारजी, मुनिश्री जितेन्द्रकुमारजी, साध्वीश्री जिनप्रभाजी, साध्वीश्री मुदितयशाजी, साध्वीश्री श्रुतयशाजी, साध्वीश्री विमलप्रज्ञाजी, साध्वीश्री शुभ्रयशाजी, साध्वीश्री सुमतिप्रभाजी, प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञाजी आदि चारित्रात्माओं / समणीवृंद का श्रम मुखर होता है, तदर्थ सभी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। साहित्य संबंधी कार्यों में संलग्न सभी चारित्रात्माओं एवं समणीवृंद द्वारा प्राप्त मार्गदर्शन हेतु कृतज्ञता। सभी विद्वान् लेखकगण के प्रति हार्दिक आभार।

साहित्य मुद्रण संबंध कार्य में पायोराईट प्रिंट मीडिया प्रा. लि., उदयपुर के श्री संजय कोठारी, सांखला प्रिन्टर्स बीकानेर के श्री दीपचंद सांखला एवं वर्द्धमान प्रेस दिल्ली के श्री संजीव जैन के सहयोग हेतु हार्दिक साधुवाद। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित साहित्य की वितरण व्यवस्था में श्री हेमराज श्यामसुखा–बैंगलोर, श्री भूरामल श्यामसुखा–इन्दौर, श्री दिलीप दूगड़–तेजपुर, श्री रतन श्यामसुखा–कोलकाता, श्री सुरेन्द्र ओसवाल–रायपुर, श्री सुखराज पितलिया–सिरियारी, श्री भरतभाई शाह–सूरत, तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन–मुंबई (कांदिवली), साहित्य सरिता–अहमदाबाद, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान–गंगाशहर, जय साहित्य संस्थान–चेन्नई, तेरापंथी सभा–सूरत, तेरापंथी सभा–दक्षिण दिल्ली, तेरापंथी सभा–शाहदरा, तेरापंथी सभा–रोहिणी, तेरापंथी सभा–सिलीगुडी, तेरापंथ युवक परिषद्–सूरत, तेरापंथ युवक परिषद्–उधना, तेरापंथ युवक परिषद–जयपुर आदि के सहयोग व सेवाओं हेतु हार्दिक आभार। साहित्य के प्रचार–प्रसार में स्थानीय संघीय संस्थाओं व कार्यकर्ताओं के सहयोग हेतु हार्दिक आभार।

आचार्यप्रवर के साथ अहिंसा यात्रा में संचालित जैन विश्व भारती के चल साहित्य विक्रय केन्द्र तक साहित्य के सुलभ और समयबद्ध प्रेषण में एन.ई.सी.सी. ट्रांसपोर्ट कं. के श्री सुनील जैन, दिल्ली की सेवाओं व सहयोग हेतु आभार। श्री सुनील जैन दिल्ली के निष्ठाशील सुश्रावक 'शासनसेवी' स्व. जसवतंरायजी जैन परिवार के सदस्य हैं।

जैन विश्व भारती साहित्य विभाग के प्रभारी श्री जगदीश प्रसाद, कम्प्यूटर ऑपरेटर श्री पंकज महर्षि, आचार्यप्रवर के साथ यात्रा में संचालित साहित्य विक्रय केन्द्र के प्रभारी श्री नंदराम सिमार एवं अन्य कर्मचारियों द्वारा कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु हार्दिक धन्यवाद।

: प्रस्तुति :

मदनचंद दूगड़ 'जौहरी'
राष्ट्रीय संयोजक
साहित्य विभाग

मांगीलाल छाजेड़
राष्ट्रीय सह–संयोजक
साहित्य विभाग

शोध

आगम संपादन

जैन विश्व भारती की स्थापना के मूलभूत उद्देश्यों में शोध का स्थान सर्वोपरि रहा है। प्रारंभ से ही गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी ने इसे जैन धर्म, दर्शन, अध्यात्म आदि के एक उच्चस्तरीय शोध–संस्थान के रूप में परिकल्पित किया था। आगम संपादन, अनुवाद, भाष्य (या टिप्पण) आदि का कार्य इसी शोध–प्रवृत्ति के अंतर्गत जारी है। यह कार्य पूर्व में वाचना–प्रमुख आचार्य तुलसी एवं मुख्य संपादक विवेचक आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के निर्देशन में चला। वर्तमान में मूलतः समग्र आगम कार्य का प्रधान संपादन आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत आगमों के अनुवाद, टिप्पण, विभिन्न प्रकार के कोश निर्माण आदि की योजनाएं चल रही हैं। इसके प्रबंधन, मुद्रण, प्रचार–प्रसार आदि का सारा दायित्व जैन विश्व भारती द्वारा निर्वहन किया जा रहा है।

01. मुख्य नियोजिकाजी साध्वी विश्रुतविभाजी द्वारा 'आगमों में आत्मवाद' पर शोधपूर्ण संकलन का कार्य चल रहा है।
02. 'पन्नवणा' के अनुवाद आदि का कार्य मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी, साध्वी श्रुतयशाजी एवं साध्वी मुदितयशाजी द्वारा प्रारम्भ कर दिया गया है।
03. 'आगम मनीषी' प्रो. मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी द्वारा निम्नलिखित कार्य किया जा रहा है–
    'भगवई' (भाष्य सहित) 5वें खण्ड का कार्य संपन्न हो गया। इसमें शतक 17–20 मूल पाठ, संस्कृत छाया, हिन्दी अनुवाद तथा विस्तृत भाष्य है। यह ग्रंथ प्रकाशित हो गया है।
    'भगवई' (भाष्य सहित) 6वें खण्ड का कार्य चल रहा है। इसमें शतक 21, 22, 23 का भाष्य लिखा जा रहा है। इसमें वनस्पति विज्ञान के संबंध में विस्तृत भाष्य है। 24वें शतक का कार्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा पहले ही संपन्न किया जा चुका है।
    अंग्रेजी में दो शोध ग्रंथों– 1. Avenues in Jain Philosophy with Scientific Perspective 2. Jain Yoga, Meditation & Leshya का कार्य चल रहा है।
    'सूयगड़ो' के अंग्रेजी अनुवाद चैप्टर 1 एवं 6 का कार्य भी संपन्न हो चुका है। परिशिष्टों का कार्य भी संपन्न हो चुका है।
04. 'शासनश्री' मुनि विमलकुमारजी, मुनि जितेन्द्रकुमारजी द्वारा 'आवश्यक सूत्र' का कार्य चल रहा है।
05. मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी द्वारा 'अंतकृतदशा' एवं 'जीवाजीवाभिगम' आगम ग्रंथ का कार्य चल रहा है।
06. मुनि जयकुमारजी द्वारा 'अनुत्तरौपपातिकदशा' आगम ग्रंथ का कार्य चल रहा है।
07. मुनिश्री अभिजीतकुमारजी द्वारा कृत शोध कार्य "A Critical Study of Concept of 'Gods and Goddesses' in Jainism" विषय पर शोध प्रबंध तैयार होकर Ph. D. उपाधि के लिए जैन विश्व भारती संस्थान को भेज दिया गया है। इस शोध ग्रंथ में जैन दर्शन के साथ अन्य भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन तथा आधुनिक विज्ञान की अवधारणाओं का तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इस पर Ph. D. की डिग्री प्रदान की जा चुकी है।

08. साध्वी जिनप्रभाजी द्वारा 'रायपसेणिय' आगम ग्रंथ का कार्य प्रायः संपन्न हो चुका है।
09. साध्वी विमलप्रज्ञाजी और साध्वी उदितयशाजी द्वारा 'विपाकश्रुत' का कार्य किया जा चुका है, जो प्रकाशन हेतु प्रक्रियाधीन है।
10. साध्वी शुभ्रयशाजी द्वारा संपादित 'ववहारो' आगम ग्रंथ प्रकाशित हो चुका है।
11. साध्वी श्रुतयशाजी द्वारा 'आयारचूला' आगम ग्रंथ का कार्य प्रायः संपन्न हो चुका है।
12. 'निशीथभाष्य' का अनुवाद साध्वी श्रुतयशाजी द्वारा संपन्न किया जा चुका है, जिसका लोकार्पण आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में विराटनगर (नेपाल) में हो चुका है।
13. साध्वी मुदितयशाजी द्वारा 'निरयावलिका' आदि पांच उपांगों का कार्य प्रगति पर है।
14. साध्वी राजुलप्रभाजी 'ज्ञाताधर्म कथा' के संस्कृत रूपान्तरण के कार्य में संलग्न है।
15. अक्टूबर 2015 में 'निशीथ निर्युक्ति एवं भाष्य' ग्रंथ के चार खण्ड आचार्यश्री के श्रीचरणों में उपहृत हुए। इस विशालकाय ग्रंथ का अनुवाद साध्वी श्रुतयशा ने किया तथा पूज्यवर के निर्देशन में इस ग्रंथ का पाठ संपादन प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा द्वारा किया गया।
16. वर्तमान में प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा द्वारा संपादित 'आगम एवं आगमसम ग्रंथों का पदानुक्रम' ग्रंथ लगभग 850 पृष्ठों में तैयार है। शोध के क्षेत्र में विद्वानों को इस ग्रंथ से तुलनात्मक संदर्भ जानने में बहुत सुविधा होगी।
17. आवश्यक निर्युक्ति में सामयिक निर्युक्ति का प्रथम खण्ड वर्ष 2001 में प्रकाशित हो चुका था लेकिन उसके पांच आवश्यक ग्रंथों पर कार्य बाकी था। अभी प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा द्वारा 'आवश्यक निर्युक्ति' के दूसरे खंड का अनुवाद, संपादन एवं परिशिष्ट का कार्य किया जा रहा है।

आगम–संपादन संबंधी जैन शासन की प्रभावना का विशिष्ट कार्य परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के मुख्य निर्देशन में हो रहा है, इस हेतु हार्दिक कृतज्ञता। इस कार्य में संलग्न उक्त उल्लेखित समस्त चारित्रात्माओं एवं समणीवृंद के प्रेरणास्पद श्रम हेतु हार्दिक कृतज्ञता। कम्प्यूटर संबंधी कार्य में कार्यालय में कार्यरत श्री निमाई चरण त्रिपाठी, श्री प्रमोद कुर्मी, श्रीमती कुसुम जैन आदि द्वारा कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु धन्यवाद।

: प्रस्तुति :
मनोज कुमार लूनिया
संयोजक, शोध विभाग

हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग

जैन विश्व भारती में अनेक प्राचीन एवं दुर्लभ जैन हस्तलिखित ग्रंथ उपलब्ध हैं जिनकी सुरक्षा एवं संरक्षण जैन विश्व भारती के हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग के अंतर्गत किया जा रहा है। इनकी सुरक्षा और संरक्षण की दृष्टि से विशेषज्ञ टीमों ने समय–समय पर दौरा कर अपने अमूल्य सुझाव प्रस्तुत किए हैं और उनके निर्देशानुसार हस्तलिखित पाण्डुलिपियों को इनकी सुरक्षा की दृष्टि से निर्मित विशेष प्रकार की लकड़ी की बनी पेटियों में रखा गया है। वर्तमान में इन पांडुलिपियों की संख्या 3122 है जो 364 पेटियों में गोदरेज की आलमारियों में सुरक्षित हैं। इनकी ग्रंथ सूची में पत्र संख्या, लिपि संवत, लिपिकर्ता, लिपि स्थान, रचनाकार आदि का उल्लेख किया हुआ है। वर्तमान में इस विभाग को मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन' के मार्गदर्शन में मुनिश्री कीर्तिकुमारजी एवं मुनिश्री जयंतकुमारजी का निर्देशन प्राप्त है। मुनिद्वय के प्रति हार्दिक कृतज्ञता।

समन्वय

पुरस्कार एवं सम्मान

जैन विश्व भारती द्वारा कुल 10 पुरस्कारों का संचालन विभिन्न प्रायोजकों के सहयोग से किया जा रहा है।

आचार्य तुलसी अनेकांत सम्मान

प्रायोजक	:	एम. जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता
पुरस्कार राशि	:	1,51,000/– प्रतिवर्ष

आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा सम्मान

प्रायोजक	:	एम. जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता
पुरस्कार राशि	:	1,51,000/– प्रतिवर्ष
पुरस्कार प्राप्तकर्ता	:	'पद्मविभुषण' श्री श्री रविशंकरजी, संस्थापक आर्ट ऑफ लिविंग, बैंगलोर (वर्ष 2015)
प्राप्ति तिथि एवं स्थान	:	पुरस्कार प्रदान किया जाना अवशिष्ट है।

महादेवलाल सरावगी जैन आगम मनीषा पुरस्कार

प्रायोजक	:	एम. जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता
पुरस्कार राशि	:	1,00,000/– प्रतिवर्ष

गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार

प्रायोजक	:	एम. जी. सरावगी फाउण्डेशन, कोलकाता
पुरस्कार राशि	:	1,00,000/– प्रतिवर्ष
पुरस्कार प्राप्तकर्ता	:	मुमुक्षु डॉ. शांता जैन (वर्ष 2012) श्रीमती वीणा श्यामसुखा, कोलकाता (वर्ष 2013) श्रीमती कनक बरमेचा, सूरत (वर्ष 2014)
प्राप्ति तिथि एवं स्थान	:	उक्त तीनों पुरस्कार दिनांक 20 सितम्बर 2016 को आचार्यप्रवर के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में गुवाहाटी में प्रदान किये जाने हैं।

जय तुलसी विद्या पुरस्कार

प्रायोजक	:	चौथमल कन्हैयालाल सेठिया चेरिटेबल ट्रस्ट, सूरत
पुरस्कार राशि	:	2,00,000/– प्रतिवर्ष
पुरस्कार प्राप्तकर्ता	:	श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी शिक्षा समिति, जयपुर (वर्ष 2016)
प्राप्ति तिथि एवं स्थान	:	उक्त पुरस्कार दिनांक 20 सितम्बर 2016 को आचार्यप्रवर के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में गुवाहाटी में प्रदान किया जाना है।

संघ सेवा पुरस्कार

प्रायोजक	:	नेमचंद जेसराज सेखानी चेरिटेबल ट्रस्ट, कोलकाता
पुरस्कार राशि	:	1,25,000/– प्रतिवर्ष
पुरस्कार प्राप्तकर्ता	:	'शासनसेवी' श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी, दिल्ली (वर्ष 2014)
प्राप्ति तिथि एवं स्थान	:	30 अगस्त, 2015, दिल्ली

आचार्य तुलसी प्राकृत पुरस्कार

प्रायोजक : के. बी. डी. फाउण्डेशन, कोलकाता
पुरस्कार राशि : 1,00,000/– प्रतिवर्ष

आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार

प्रायोजक : सूरजमल सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट, गुवाहाटी
पुरस्कार राशि : 1,00,000/– प्रतिवर्ष
पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता : श्रीमती एस. माला कातरेला, चेन्नई (वर्ष 2014)
प्राप्ति तिथि एवं स्थान : उक्त पुरस्कार दिनांक 20 सितम्बर 2016 को आचार्यप्रवर के सान्निध्य में आयोजित कार्यक्रम में गुवाहाटी में प्रदान किया जाना है।

प्रज्ञा पुरस्कार

प्रायोजक : श्री उम्मेदसिंह, विनोदसिंह, दिलीप दूगड़, तुर्रा–हैदराबाद–गुवाहाटी
पुरस्कार राशि : 1,00,000/– प्रतिवर्ष

जीवन विज्ञान पुरस्कार

प्रायोजक : नाहटा चेरिटेबल ट्रस्ट, कोलकाता
पुरस्कार राशि : 1,00,000/– प्रतिवर्ष

सभी पुरस्कार प्रायोजक परिवारों/ट्रस्टों के प्रति हार्दिक आभार एवं पुरस्कार प्राप्तकर्त्ताओं के प्रति मंगलकामना।

विदेशों में केन्द्र

विदेशों में जैन दर्शन, जैन विद्या एवं जैन संस्कृति के प्रचार–प्रसार एवं संस्कार निर्माण व जैन संस्कृति की सुरक्षा की दृष्टि से जैन विश्व भारती के नाम से केन्द्र संचालित हो रहे हैं, जिनकी जानकारी अग्रलिखित है–

Jain Vishva Bharati, USA (Orlando)
7819 Lillwill Avenue, Orlando
FI 32809 (USA)
Tel. : 407-852-8694
E-mail : jainvishwa1@gmail.com
वर्ष 2015–16 में प्रवासित समणीवृंद : समणी विकासप्रज्ञा एवं समणी रत्नप्रज्ञा

Jain Vishva Bharati, Houston
1712 Hwy 6 South Houston
Texas 77077 (USA)
Tel. : 281-596-9642, 281-495-9733
E-mail : jvbtexas@yahoo.com
वर्ष 2015–16 में प्रवासित समणीवृंद : समणी परिमलप्रज्ञा एवं समणी मर्यादाप्रज्ञा

Jain Vishva Bharati, NA (New Jersey)
151 Middle Sex Avenue
Iseline, NJ-08830 USA
Tel. : 0732-404-1430
E-mail : jvbnj@yahoo.com
वर्ष 2015–16 में प्रवासित समणीवृंद : समणी भावितप्रज्ञा एवं समणी संघप्रज्ञा

उपर्युक्त केन्द्रों में प्रवासित समणीवृंद के सान्निध्य में संस्कार निर्माण एवं जैन विद्या से संबंधित विभिन्न गतिविधियां सुचारु रूप से संचालित है। विदेशों में प्रवासित अनेक जैन परिवारों से समय–समय पर जैन विश्व भारती की गतिविधियों हेतु सहयोग प्राप्त हुआ। सभी सहयोगी परिवारों के प्रति हार्दिक आभार। केन्द्रों के पदाधिकारीगण एवं सक्रिय रूप से जुड़े कार्यकर्तागण के सहयोग एवं सेवाओं हेतु आभार।

संस्कृति

तुलसी कला दीर्घा

गणाधिपति पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी की पुण्य स्मृति में जैन विश्व भारती में स्थापित तुलसी कला दीर्घा (आर्ट गैलरी) आने वाले हर वर्ग के दर्शक को प्रभावित करती हैं कला केन्द्र में जैन धर्म को दर्शाने वाली प्राचीन एवं अर्वाचीन चित्रों एवं हस्तकलाओं की प्रचुर सामग्री का संग्रह किया गया है। दुर्लभ, कलापूर्ण, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व की प्रदर्शन योग्य सामग्री के साथ तेरापंथ के आचार्यों को सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रदत्त राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों से संबंधित प्रतीक चिह्न, प्रशस्ति पत्र तथा अन्य सामग्री को यहां पर शो विंडो में कलापूर्ण ढ़ंग से सुसज्जित किया गया है। मूल दीर्घा में ऐतिहासिक दस्तावेज, चित्र, रेखांकन तथा हस्तलेखों का विशाल संग्रह 40 टेबल शो केसों में प्रदर्शित किया गया है। नारियल, काष्ठ, तुम्बा और कागज की लुग्दी एवं जीर्ण–शीर्ण कपड़े से बनी अद्भुत कलापूर्ण सामग्री यहां प्रदर्शित है।

आलोच्य अवधि में देश–विदेश के सैंकड़ों दर्शनार्थियों ने कला प्रेक्षा का अवलोकन किया। तुलसी कला दीर्घा के विकास हेतु जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कीर्तिकुमारजी एवं मुनिश्री जयंतकुमारजी का भी समय–समय पर मार्गदर्शन प्राप्त होता रहता है, एतदर्थ हार्दिक कृतज्ञता।

मीडिया एवं प्रचार-प्रसार विभाग

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री धरमचंद लुंकड़ की प्रेरणा से संस्था की गतिविधियों के वृहद् प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से जैन विश्व भारती के अन्तर्गत मीडिया एवं प्रचार–प्रसार विभाग का गठन किया गया। इस विभाग द्वारा जहां एक ओर प्रिंट मीडिया में पत्र–पत्रिकाओं में संस्था की गतिविधियों की समय–समय पर प्रेस विज्ञप्तियां एवं समाचार प्रकाशित करवाने का कार्य किया गया वहीं दूसरी ओर संचार क्रांति के इस युग की देन ऑनलाईन वेब एवं सोशल मीडिया पर नियमित रूप से पोस्ट्स के माध्यम से संस्था की गतिविधियों को जन–जन तक पहुंचाने का कार्य किया गया। जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के रजत जयन्ती वर्ष समारोह के देश–विदेश में आयोजित विभिन्न चरणों के कार्यक्रमों के समुचित प्रसार से विश्वविद्यालय की गतिविधियों को जन सम्मुख बनाने का प्रयास किया गया। सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला के उत्पादों के विपणन को गति दी गई।

प्रचार–प्रसार कार्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के उपक्रम जैन तेरापंथ न्यूज (JTN) का भी विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बी. सी. जैन भालावत, निवर्तमान अध्यक्ष श्री अविनाश नाहर एवं पूरी अभातेयुप टीम के प्रति हार्दिक आभार। देश–विदेश में फैले जैन तेरापंथ न्यूज (JTN) के प्रतिनिधियों द्वारा जागरूकता पूर्वक एवं त्वरित संदेशों के संप्रसारण में सहयोग हेतु हार्दिक आभार। समस्त संघीय संस्थाओं का सहयोग प्रचार–प्रसार कार्य में निरन्तर प्राप्त हुआ, एतदर्थ सभी के प्रति हार्दिक आभार।

महावीर सेमलानी
राष्ट्रीय संयोजक
मीडिया एवं प्रचार–प्रसार विभाग

संजय कुमार वेदमेहता
राष्ट्रीय सह–संयोजक
मीडिया एवं प्रचार–प्रसार विभाग

अन्य उल्लेखनीय कार्य

- **नव कुलपति का मनोनयन** : जैन विश्व भारती के कुलपति श्री बच्छराज नाहटा के स्वर्गवास के पश्चात् कुलपति के रिक्त पद की पूर्ति हेतु दिनांक 15 फरवरी 2016 को 'शासनसेवी' श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी, मोमासर–दिल्ली को जैन विश्व भारती के कुलपति पद पर मनोनीत किया गया। श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी का जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती संस्थान को पूर्व में भी विशिष्ट सहयोग एवं सेवाएं रही है। आपके सहयोग व सेवाओं हेतु हार्दिक आभार।
- **'भारती भूषण' अलंकरण** : जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष 'शासनसेवी' श्री गुलाबचंद चिंडालिया, राजलदेसर–मुंबई की जैन विश्व भारती को प्रदत विशिष्ट सेवाओं का मूल्यांकन करते हुए संस्था के सर्वोच्च सम्मान **'भारती भूषण'** से सम्मानित किया गया। यह अलंकरण उन्हें जैन विश्व भारती संस्थान के रजत जयंती समारोह के मुंबई चरण के कार्यक्रम में दिनांक 11 अक्टूबर 2015 को प्रदान किया गया। श्री गुलाबचंद चिंडालिया ने जैन विश्व भारती को छः वर्षों (सन् 1990–1992 एवं सन् 1997–2000) तक अध्यक्ष एवं दो वर्षों (सन् 2000–2002) तक मंत्री के रूप में उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान की। उनकी कार्यदक्षता, योग्यता एवं कुशल प्रशासनिक क्षमता से उनके कार्यकाल में जैन विश्व भारती ने प्रशासकीय एवं शैक्षिक सत्र में विकास के नए आयाम उद्घाटित किए। उनकी उल्लेखनीय सेवाओं हेतु हार्दिक आभार।
- **उपखण्ड प्रशासन को कपड़े के थैलों का वितरण** : उपखण्ड प्रशासन, लाडनूं द्वारा चलाये जा रहे 'जागृति अभियान' के अन्तर्गत लाडनूं शहर को पॉलिथीन मुक्त बनाए जाने की पहल के अन्तर्गत प्रशासन द्वारा निवेदन को ध्यान में रखते हुए जैन विश्व भारती द्वारा उपखण्ड प्रशासन, लाडनूं को 15000 कपड़े के थैले स्थानीय वितरण हेतु दिये गये। इन थैलों पर जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती संस्थान के नामोल्लेख के साथ पर्यावरण संरक्षण का संदेश प्रसारित किया गया। नगर में संस्था की इस सार्थक पहल की काफी सकारात्मक प्रतिक्रिया रही।
- **'शासनश्री' मुनिश्री विमलकुमारजी एवं सहवर्ती मुनिवृंद का जैन विश्व भारती सेवा केन्द्र में मंगल प्रवेश** : दिनांक 28 फरवरी 2016 को 'शासनश्री' मुनिश्री विमलकुमारजी एवं सहवर्ती मुनिवृंद का चाकरी हेतु जैन विश्व भारती सेवा केन्द्र में प्रवेश हुआ। इस अवसर पर जैन विश्व भारती के पदाधिकारीगणों ने मुनिवृंद की अभिवंदना कर उनका स्वागत किया तथा 'शासनश्री' मुनिश्री विमलकुमारजी ने विगत एक वर्ष से चाकरी हेतु नियुक्त 'शासनश्री' मुनिश्री सुखलालजी स्वामी के संरक्षण में मुनिश्री मोहजीतकुमारजी से चाकरी का औपचारिक दायित्व ग्रहण किया।
- **जैन विश्व भारती में दिगम्बर समाज के मुनिप्रवर का आगमन** : दिगम्बर संप्रदाय के आचार्य विद्यासागरजी के सुशिष्य मुनिश्री प्रमाणसागरजी एवं मुनिश्री विराटसागरजी अपने लाडनूं प्रवास के दौरान दिनांक 06 मई 2016 को जैन विश्व भारती पधारे थे। जैन विश्व भारती के न्यासी श्री भागचंद बरड़िया एवं जैन विश्व भारती संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अगुवाई में जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती संस्थान परिवार द्वारा मुनिप्रवर का स्वागत किया गया। इस अवसर पर सचिवालय मे जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित आगम साहित्य, आचार्यों द्वारा रचित साहित्य, जीवन विज्ञान एवं जैन साहित्य आदि अवलोकनार्थ हेतु प्रदर्शित किया गया। समणी कुसुमप्रज्ञाजी आदि समणीवृंद ने आगम व साहित्य के बारे में जानकारी प्रदान की। मुनिप्रवर ने साहित्य का अवलोकन कर प्रसन्नता व्यक्त की। इस अवसर पर भिक्षु विहार में विराजित 'शासनश्री' मुनिश्री विमलकुमारजी आदि मुनिवृंद से मुनिद्वय का आध्यात्मिक मिलन हुआ। मुनिश्री विमलकुमारजी स्वामी ने तेरापंथ की सेवा व्यवस्था व सेवाकेन्द्र के संदर्भ में जानकारी प्रदान की। मुनिप्रवर ने जैन विश्व भारती संस्थान, वर्द्धमान ग्रंथागार आदि का अवलोकन किया तथा वहां संचालित गतिविधियों व हस्तलिखित ग्रंथों आदि के बारे में जानकारी प्राप्त की।
- **जैन विश्व भारती के नियमोपनियम में संशोधन** : वर्तमान समय की अपेक्षानुसार जैन विश्व भारती के नियमोपनियम में कुछ संशोधन/परिवर्द्धन/परिवर्तन दिनांक 16 मई 2016 को काजीरंगा (असम) में आयोजित जैन विश्व भारती की एक साधारण सभा में सर्वसम्मति से स्वीकृत किए गए। इस कार्य के लिए जैन विश्व भारती के अन्तर्गत एक संविधान संशोधन समिति का गठन किया गया। संविधान संशोधन समिति के सदस्य श्री गौतमचंद सेठिया, श्री अमरचंद लुंकड़ एवं श्री रमेशचंद बोहरा के महत्वपूर्ण सहयोग हेतु हार्दिक आभार।

- **आचार्य तुलसी महाप्रयाण दिवस का आयोजन** : दिनांक 18–24 जून 2016 को परमपूज्य आचार्यश्री तुलसी के 20वें महाप्रयाण दिवस के अवसर पर आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान, गंगाशहर व जैन विश्व भारती के संयुक्त तत्वावधान में सप्तदिवसीय कार्यक्रमों का आयोजन गंगाशहर में किया गया। इस आयोजन में सहयोग हेतु जैन विश्व भारती द्वारा अनुदानस्वरूप रु. 5 लाख की राशि का चेक आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान, गंगाशहर को प्रदान किया गया। आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान, गंगाशहर के पदाधिकारीगणों, न्यासीगणों व स्थानीय संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं के सद्प्रयासों हेतु साधुवाद।
- **विभागों के संचालन हेतु आर्थिक सहयोग** : जैन विश्व भारती की विभिन्न विभागों/प्रवृत्तियों के सुचारू संचालन हेतु समण संस्कृति संकाय, जीवन विज्ञान अकादमी, प्रेक्षा फाउण्डेशन एवं साहित्य विभाग के लिए रु. 5–5 लाख की राशि की एफ.डी.आर. उनके अलग–अलग विभागों के नाम से बनवाई गई। इस राशि में चारों विभाग/प्रवृत्ति के लिए रु. 20–20 लाख की राशि की एफ.डी.आर. और जोड़ी जायेगी। इस एफ.डी.आर. से प्राप्त ब्याज की आय से विभागों/प्रवृत्तियों का सुचारू संचालन हो सकेगा। मूल राशि कॉरपस के रूप में जमा रहेगी, सिर्फ उपार्जित ब्याज की राशि का ही उपयोग किया जा सकेगा। विभाग/प्रवृत्ति के संयोजकों को संबंधित विभाग/प्रवृत्ति का मासिक आय–व्यय का हिसाब प्रेषित किया जायेगा। संबंधित विभाग/प्रवृत्ति के आय–व्यय का हिसाब ध्यान में रखते हुए उसके सुव्यवस्थित संचालन का दायित्व संबंधित विभाग/प्रवृत्ति के संयोजक का रहेगा।
- **भंवरलाल रायकंवरी देवी जैन विद्या विकास निधि** : चाड़वास निवासी सण्डूर–बैंगलोर प्रवासी श्रीनवरत्नमल–कुमुद बच्छावत द्वारा वर्ष 2009 में अपनी माताजी की 75वें जन्मदिवस पर जैन विश्व भारती को जैन विद्या के विकास हेतु रु. 75 लाख की राशि अनुदान स्वरूप प्रदान की गई थी। यह राशि जैन विश्व भारती के अन्तर्गत 'भंवरलाल रायकंवरी देवी जैन विद्या विकास निधि' के नाम से गठित एक विशेष कोष में जमा है, जिससे प्रति वर्ष उपार्जित ब्याज की आय को जैन विद्या के विकास संबंधी कार्यों में खर्च किया जाता है। अनुदानदाता परिवार के उदार सहयोग हेतु हार्दिक आभार।
- **कोठारी परिवार, राजनांदगांव (छत्तीसगढ़) द्वारा विशिष्ट सहयोग** : राजनांदगांव (छत्तीसगढ़) के प्रतिष्ठित व संघनिष्ठ कोठारी परिवार के श्री प्रकाशचंद कोठारी द्वारा वर्ष 2014 में एवं वर्ष 2015 में जैन विश्व भारती की गतिविधियों के विकास हेतु सहयोगस्वरूप अपनी राजनांदगांव स्थित दो अचल सम्पत्तियां जैन विश्व भारती को अनुदानस्वरूप प्रदान की। किसी अनुदानदाता द्वारा स्वैच्छिक रूप से इस प्रकार का बड़ा अनुदान वास्तव में आचार्य तुलसी के विसर्जन के सूत्र का बहुत अच्छा उदाहरण तथा समाज के लिए प्रेरक प्रसंग है।
  श्री प्रकाशचंद कोठारी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती साधना कोठारी की निःस्पृह भावना का सम्मान करते हुए उनके इतने बड़े उदार सहयोग के लिए हार्दिक आभार–साधुवाद। अचल सम्पत्ति के पंजीयन, विक्रय संबंधी समस्त औपचारिकताओं की पूर्ति में जैन विश्व भारती कोषाध्यक्ष श्री प्रमोद बैद एवं संचालिका समिति सदस्य श्री दानमल पोरवाल, भिलाई व श्री संजय कोठारी, रायपुर के विशेष सहयोग हेतु हार्दिक आभार।
- **जैन विश्व भारती की भूमि नियमन संबंधी कार्यवाही** : जैन विश्व भारती की भूमि नियमन संबंधी वैधानिक औपचारिकताओं की कार्यवाही संतोषजनक रूप से गतिमान है। उक्त कार्य में जैन विश्व भारती के न्यासी श्री भागचंद बरड़िया, श्री मूलचंद नाहर एवं संयुक्त मंत्री श्री गौरव जैन मांडोत के सक्रिय सहयोग हेतु हार्दिक आभार।
- **जैन विश्व भारती में 108 फीट ऊंचा जैन ध्वज स्थापित करने का निर्णय** : जैन विश्व भारती परिसर में 108 फीट ऊंचा जैन ध्वज स्थापित करने का निर्णय किया गया है। इस कार्य में देश के प्रमुख औद्योगिक घराने जिन्दल समूह सहयोग प्राप्त हो रहा है। जिन्दल परिवार तेरापंथ धर्मसंघ का आस्थाशील परिवार है। परिवार से श्रीमती सावित्री जिन्दल, श्री नवीन जिन्दल आदि समय–समय पर पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में दर्शन–सेवा हेतु उपस्थित होते रहते हैं। धर्मसंघ की अनेक गतिविधियों में इस परिवार का उदार आर्थिक सहयोग प्राप्त होता है। जिन्दल परिवार के इस सहयोग हेतु हार्दिक आभार। इस कार्य में जैन विश्व भारती के संचालिका समिति सदस्य श्री प्रमोद जैन, बरवाला की उल्लेखनीय भूमिका हेतु हार्दिक आभार।

श्रद्धाप्रणति

जैन विश्व भारती की प्रत्येक गतिविधि के सशक्त आधार हैं हमारे पूज्यवर आचार्यश्री महाश्रमणजी। पूज्यश्री द्वारा प्रदत्त मार्गदर्शन और संप्रेषित ऊर्जा ही हमें निरन्तर विकासोन्मुख रखती है। पूज्यप्रवर के असीम अनुग्रह के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए हर शब्द अल्प है। हम पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अपनी अनंत–अनंत श्रद्धा समर्पित करते हैं। श्रद्धेया महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के पावन पथ प्रदर्शन एवं कृपादृष्टि हेतु हार्दिक कृतज्ञता। श्रद्धेय 'मंत्री मुनि' मुनिश्री सुमेरमलजी 'लाडनूं', आदरास्पद 'मुख्य नियोजिका' साध्वीश्री विश्रुतविभाजी, आदरणीय 'मुख्य मुनि' मुनिश्री महावीरकुमारजी एवं आदरणीय 'साध्वीवर्या' साध्वीश्री संबुद्धयशाजी के प्रेरक मार्गदर्शन हेतु हम उनके प्रति कृतज्ञ हैं। जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक आदरास्पद मुनिश्री कीर्तिकुमारजी का विभिन्न गतिविधियों के विकास हेतु सम्यक् चिंतन एवं प्रेरक मार्गदर्शन निरन्तर प्राप्त होता रहता है, इस हेतु मुनिप्रवर के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। जैन विश्व भारती की आध्यात्मिक गतिविधियों के सम्यक् संचालन व इसको गतिमान रखने के लिए 'शासनश्री' मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन', 'प्रेक्षा प्राध्यापक' प्रो. मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी, 'शासनश्री' मुनिश्री किशनलालजी, 'शासनश्री' मुनिश्री धर्मरूचिजी, मुनिश्री दिनेशकुमारजी, मुनिश्री कुमारश्रमणजी, मुनिश्री जयकुमारजी, मुनिश्री रजनीशकुमारजी, मुनिश्री जम्बूकुमारजी, मुनिश्री विश्रुतकुमारजी आदि मुनिवृंद एवं साध्वीश्री जिनप्रभाजी, साध्वीश्री कल्पलताजी, 'शासन गौरव' साध्वीश्री राजीमतीजी, साध्वीश्री कनकश्रीजी, साध्वीश्री निर्वाणश्रीजी आदि साध्वीवृंद का हमेशा मौलिक चिंतन प्राप्त होता रहता है, एतदर्थ सभी चारित्रात्माओं के प्रति हार्दिक कृतज्ञता।

जैन विश्व भारती सेवाकेन्द्र में वर्तमान में प्रवासित सेवाकेन्द्र व्यवस्थापक 'शासनश्री' मुनिश्री विमलकुमारजी तथा पूर्व चाकरी में प्रवासित 'शासनश्री' मुनिश्री सुखलालजी एवं मुनिश्री मोहजीतकुमारजी आदि मुनिवृंद का संस्था की विभिन्न प्रवृत्तियों में मार्गदर्शन तथा कार्यक्रमों में सान्निध्य प्राप्त हुआ, इस हेतु सभी मुनिवृंद के प्रति हार्दिक कृतज्ञता। समणी नियोजिका ऋजुप्रज्ञाजी, पूर्व समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी, विश्वविद्यालय की तत्कालीन कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञाजी, समणी कुसुमप्रज्ञाजी, समणी अक्षयप्रज्ञाजी आदि समणीवृंद का विशेष दिशा–निर्देशन समय–समय पर प्राप्त होता रहता है, एतदर्थ कृतज्ञता। इनके अतिरिक्त समस्त चारित्रात्माओं एवं समण–समणीवृंद के प्रेरक मार्गदर्शन हेतु कृतज्ञता।

विनम्र श्रद्धांजलि

आलोच्य वर्ष में अनेक चारित्रात्माओं ने अपनी संयम यात्रा संपन्न कर पंडित मरण को प्राप्त किया है। मैं सभी दिवंगत चारित्रात्माओं को जैन विश्व भारती परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए उनके उतरोत्तर आध्यात्मिक विकास की मंगलकामना करता हूं।

आलोच्य वर्ष के दौरान दिवंगत हुए तेरापंथ धर्मसंघ के वरिष्ठ श्रावक एवं जैन विश्व भारती के कुलपति **'शासनसेवी' स्व. बच्छराजजी नाहटा** का विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूंगा, जो एक श्रद्धालु एवं संघनिष्ठ श्रावक थे। संघ व संघपति के प्रति उनकी गहरी निष्ठा थी। उनकी विशेषताओं के कारण उन्हें तेरापंथ धर्मसंघ के तीन महान् आचार्यों– आचार्यश्री तुलसी, आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एवं आचार्यश्री महाश्रमणजी का विश्वास अर्जित कर सतत आशीर्वाद का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जैन विश्व भारती की स्थापनाकाल से ही स्व. बच्छराजजी नाहटा का इस संस्था के साथ सक्रिय रूप से जुड़ाव रहा एवं विभिन्न रूपों में अपनी विशिष्ट सेवाएं प्रदान करते हुए वे जीवन के अंतिम समय तक **'कुलपति'** के रूप में संस्था के सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित थे। जैन विश्व भारती के निर्माण एवं विकास में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। अपनी प्रतिभा व बौद्धिक क्षमता से उन्होंने धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, प्रशासनिक आदि सभी क्षेत्रों में निष्ठा के साथ उल्लेखनीय कार्य किए तथा अपने व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व से समाज में एक विशेष प्रतिष्ठा अर्जित की। लाडनूं नगर की अनेक संघीय व सामाजिक संस्थाओं के उच्चस्थ पदों पर अपनी विशेष सेवाएं प्रदान की। लाडनूं नगरपालिका के चेयरमैन पद पर दो बार बहुमत से निर्वाचित होना उनकी लोकप्रियता का स्वयंभू प्रमाण है। नगरपालिका के चेयरमैन के रूप में उन्होंने नगर के चहुंमुखी विकास में अहर्निश योगदान दिया।

आलोच्य वर्ष के दौरान दिवंगत हुए तेरापंथ धर्मसंघ के वरिष्ठ श्रावक एवं जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष **'भारती भूषण' स्व. खेमचंदजी सेठिया** का विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूंगा, जो एक श्रद्धालु एवं संघनिष्ठ श्रावक थे। संघ व संघपति के प्रति

उनकी गहरी निष्ठा थी। स्व. खेमचंदजी सेठिया का जैन विश्व भारती की प्रारंभिक भूमिका से लेकर संस्था की प्रत्येक गतिविधि के साथ सक्रिय रूप से जुड़ाव था। उन्होंने दस वर्ष तक अध्यक्ष के रूप में तथा दस वर्ष तक प्रधान न्यासी के रूप में जैन विश्व भारती को कुशल नेतृत्व प्रदान किया। अपने कार्यकाल में उन्होंने संस्था की अनेक गतिविधियों व योजनाओं को प्रगति के पथ पर अग्रसर किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ की सर्वोच्च संस्था जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के शीर्षस्थ पद सहित अनेक पदों पर अपनी दीर्घकालीन सेवाएं प्रदान की। उनकी विशिष्ट सेवाओं को ध्यान में रखते हुए जैन विश्व भारती के सर्वोच्च सम्मान **'भारती भूषण'** एवं जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के सर्वोच्च अलंकरण **'समाज भूषण'** से अलंकृत किया गया।

संस्था के उक्त दो उच्च पदस्थ व्यक्तित्वों का निधन न केवल परिवार के लिए अपितु संस्था एवं समाज के लिए एक बड़ी क्षति है। मैं जैन विश्व भारती की ओर से दोनों विशिष्ट महानुभावों को सादर श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए दिवंगत आत्माओं के निरन्तर आध्यात्मिक आरोहण की कामना करता हूं।

आलोच्य वर्ष के दौरान दिवंगत हुए जैन विश्व भारती के सदस्यगण को सादर श्रद्धांजलि समर्पित करता हूं।

आभार ज्ञापन

जैन विश्व भारती का वार्षिक प्रतिवेदन संपन्न करने के साथ मैं उन सभी महानुभावों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहूंगा जिन्होंने अपना अमूल्य समय और श्रम देकर संस्था की प्रवृत्तियों को उत्तरोत्तर उन्नत बनाने में अपना पूर्ण योगदान दिया।

मैं सर्वप्रथम जैन विश्व भारती के ऊर्जाशील, कर्मठ अध्यक्ष श्री धरमचंद लुंकड़ के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं। जिनके कुशल मार्गदर्शन में संस्था का विकास कार्य निरन्तर गतिमान रहा और गतिविधियों को विकास का नया आयाम मिला। कुलपति 'शासनसेवी' श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी के सहयोग भाव हेतु हार्दिक आभार। प्रधान न्यासी श्री प्यारेलाल पितलिया के उल्लेखनीय सहयोग हेतु हार्दिक आभार। वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री मनोज कुमार लूनिया, उपाध्यक्ष श्री गौतमचंद सेठिया, श्री जीवनमल जैन (मालू), श्री मदनचंद दूगड़ 'जौहरी', श्री संजय खटेड़ हमारी विभिन्न प्रवृत्तियों के साथ सक्रिय रूप से जुड़े रहे, सभी के प्रति हार्दिक आभार। संयुक्त मंत्री श्री गौरव जैन मांडोत एवं श्री राजेश एम. जैन मरलेचा का विभिन्न कार्यों हेतु निरन्तर सहयोग मिलता रहा, एतदर्थ आभार। पूर्व न्यासी श्री सुकनराज परमार के समय–समय पर प्राप्त सहयोग व सहभागिता हेतु हार्दिक आभार। न्यासी श्री रमेशचंद बोहरा का जैन विश्व भारती की प्रत्येक गतिविधि और आयोजनों आदि में सक्रिय सहयोग, श्रम व सहभागिता रही, एतदर्थ हार्दिक आभार। न्यासी श्री भागचंद बरड़िया के सतत मार्गदर्शन एवं उल्लेखनीय सहयोग हेतु हार्दिक आभार। न्यासी श्री मूलचंद नाहर के सक्रिय सहयोग एवं सेवाओं हेतु आभार। अन्य सभी न्यासीगण एवं पंचमण्डल के सदस्यों के सहयोग हेतु हार्दिक आभार।

जैन विश्व भारती के कोषाध्यक्ष एवं वित्त नियोजन विभाग के राष्ट्रीय संयोजक श्री प्रमोद बैद का लेखांकन संबंधी कार्यों एवं सभी गतिविधियों में विशेष मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा। उनके निष्ठापूर्ण श्रम एवं सहयोग हेतु हार्दिक आभार। वित्त नियोजन विभाग के राष्ट्रीय सह–संयोजक एवं वित्त सलाहकार श्री राजेश कोठारी का लेखांकन संबंधी कार्यों में निरन्तर सहयोग प्राप्त हुआ, एतदर्थ उनके प्रति हार्दिक आभार।

परामर्शक मण्डल के सदस्यों के मार्गदर्शन हेतु हार्दिक आभार। जैन विश्व भारती की संचालिका समिति के सभी सदस्यों के सहयोग व सेवाओं हेतु हार्दिक आभार। विभिन्न विभागों यथा– शिक्षा विभाग के राष्ट्रीय संयोजक श्री मनोज लूनिया, राष्ट्रीय सह–संयोजक श्री अमरचंद लुंकड़, जीवन विज्ञान विभाग के चेयरमैन श्री ख्यालीलाल तातेड़, राष्ट्रीय संयोजक श्री सुरेश कोठारी, प्रेक्षा फाउण्डेशन के चेयरमैन श्री रमेशचंद बोहरा, राष्ट्रीय संयोजक श्री राजेन्द्र मोदी, समण संस्कृति संकाय के विभागाध्यक्ष श्री मालचंद बेगानी, निदेशक श्री निलेश बैद, साहित्य विभाग के राष्ट्रीय संयोजक श्री मदनचंद दूगड़ 'जौहरी', राष्ट्रीय सह–संयोजक श्री मांगीलाल छाजेड़, मीडिया एवं प्रचार–प्रसार विभाग के राष्ट्रीय संयोजक श्री महावीर सेमलानी, राष्ट्रीय सह–संयोजक श्री संजय वेदमेहता, महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर के संयुक्त संयोजक श्री गौरव जैन मांडोत व श्री पन्नालाल पुगलिया, महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर के चेयरमैन श्री रणजीतसिंह कोठारी एवं जैन विश्व भारती के अन्तर्राष्ट्रीय संयोजक श्री राकेश बोहरा के उल्लेखनीय सहयोग, श्रम, सेवाओं व सहभागिता हेतु हार्दिक आभार।

तेरापंथ विकास परिषद् के संयोजक आदरणीय श्री कन्हैयालाल छाजेड़, जैन विश्व भारती के निवर्तमान अध्यक्ष श्री ताराचंद

रामपुरिया आदि का समय–समय पर बहुमूल्य मार्गदर्शन एवं सहयोग प्राप्त हुआ, एतदर्थ हार्दिक आभार। सभी केन्द्रीय एवं स्थानीय संघीय संस्थाओं से प्राप्त सहयोग के लिए हार्दिक आभार।

जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों, इकाईयों, आयोजनों आदि में समाज के उदारमना महानुभावों ने मुक्तहस्त सहयोग प्रदान कर संस्था की विकास यात्रा को गति प्रदान की है। उन सभी अनुदानदाताओं के प्रति बहुत–बहुत आभार–धन्यवाद जिनके उल्लेखनीय सहयोग से संस्था ने विकास के नये पायदान पर आरोहण किया।

जैन विश्व भारती के अंकेक्षक के रूप में एन. के. बोरड़ एण्ड कंपनी, जयपुर की सेवाओं हेतु हार्दिक धन्यवाद।

राजस्थान सरकार, नागौर जिला प्रशासन, नगरपालिका मण्डल, लाडनूं, स्थानीय प्रशाासन, रजिस्ट्रार ऑफ सोसायटी, लाडनूं के सभी सरकारी एवं गैर सरकारी विभागों, लाडनूं की सभी संघीय एवं सामाजिक संस्थाओं एवं स्थानीय व्यक्तियों के सहयोग हेतु हार्दिक धन्यवाद। केन्द्रीय राज्यमंत्री एवं नागौर सांसद श्री सी. आर. चौधरी तथा लाडनूं विधायक ठाकुर मनोहरसिंहजी के सहयोग हेतु विशेष रूप से आभार। जैन विश्व भारती संस्थान विश्वविद्यालय परिवार के सहयोग हेतु आभार।

जैन विश्व भारती के निदेशक श्री राजेन्द्र खटेड़ का विभिन्न प्रवृत्तियों एवं व्यवस्थाओं के सुचारू संचालन में महत्त्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यालय के विभिन्न कार्यों की सुचारू व्यवस्था तथा विधिक व मानव संसाधन कार्यों में डॉ. विजयश्री शर्मा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। लेखा संबंधी कार्य में लेखा विभाग के प्रमुख श्री दिनेश सोनी, श्री जयप्रकाश सांखला एवं श्री बृजमोहन शर्मा, कार्यालय सहायक एवं कैशियर के रूप में श्री संजय बोथरा, कम्प्यूटर संबंधी कार्यों में श्री मनीष भोजक, श्री राहुल पाण्डेय, परिसर की व्यवस्थाओं में श्री सुशील मिश्रा, श्री संपतराज खटेड़, श्री अमीलाल चाहर, भोजनशाला संबंधी व्यवस्थाओं में श्री चंदनमल भोजक, भण्डार संबंधी कार्यों में श्री जोगेन्द्र सिंह सांखला, बिजली–पानी संबंधी व्यवस्थाओं में श्री राजेश भदौरिया आदि ने निष्ठापूर्वक अपने दायित्व का निर्वहन किया है। कोलकाता कार्यालय में कार्यरत श्री संपतमल बैंगानी एवं श्रीमती मधुमिता गुहा ने भी सम्यक् दायित्व निर्वहन किया है। सभी कर्मीगण प्रदत्त दायित्व का निष्ठाभाव से निर्वहन करते हैं, जिनसे संस्था की गतिविधियों को गति प्राप्त होती है। सभी कर्मीगणों को कुशलतापूर्वक दायित्व निर्वहन हेतु हार्दिक धन्यवाद।

केन्द्र के साथ संवादों के संप्रेषण में श्री हेमन्त बैद, श्री आकाश सैन एवं श्री बबलू का भी निरन्तर सहयोग मिलता रहा, इस हेतु आभार। जैन विश्व भारती की सूचनाओं एवं समाचारों के संप्रेषण व्यवस्थित और नियमित रूप से करने हेतु स्थानीय सभी दैनिक समाचार पत्रों एवं अखिल भारतीय तेरापंथ टाईम्स, विज्ञप्ति, अणुव्रत आदि सभी संघीय एवं सामाजिक पत्र–पत्रिकाओं के प्रति आभार। संस्कार चैनल व पारस चैनल पर सूचनाओं व कार्यक्रमों के प्रसारण में सहयोग हेतु अमृतवाणी के प्रति आभार। जैन विश्व भारती की विभिन्न गतिविधियों व कार्यक्रमों की जानकारी सोशल मीडिया नेटवर्क JTN (जैन तेरांपथ समाचार 'जैतस') के माध्यम से वृहद् रूप में प्रसारित करने हेतु JTN की पूरी टीम के सहयोग हेतु आभार।

जैन विश्व भारती सेवाकेन्द्र में विराजित मुनिवृंद की अपेक्षानुसार चिकित्सा में डॉ. विजयसिंह घोड़ावत पूर्ण जागरूकता के साथ अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। डॉ. घोड़ावत की सेवाओं हेतु हार्दिक आभार। मंगलम चिकित्सालय के पूरे प्रबंधन एवं डॉक्टरों व नर्सिंग स्टाफ की पूरी टीम के सहयोग एवं सेवाओं हेतु हार्दिक आभार।

मैं उपर्युक्त सभी तथा ज्ञात–अज्ञात रूप से अनेक रूपों में सहयोगी समस्त महानुभावों एवं संपूर्ण श्रावक–श्राविका समाज को हार्दिक धन्यवाद देता हूं, कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं एवं आशा करता हूं कि जैन विश्व भारती को आप सबका सक्रिय सहयोग, सद्भावना एवं मार्गदर्शन निरन्तर मिलता रहेगा।

द्विवर्षीय कार्यकाल की संपन्नता के अवसर पर प्रतिवेदन समाप्ति के साथ मैं परमपूज्य आचार्यप्रवर एवं समस्त चारित्रात्माओं तथा समण–समणीवृंद से मेरा द्वारा कार्यकाल के दौरान हुए किसी भी प्रकार के अविनय–आशातना के लिए विनयपूर्वक क्षमायाचना करता हूं। जैन विश्व भारती की पूरी टीम, विभिन्न केन्द्रीय व स्थानीय संघीय संस्थाओं तथा संपूर्ण श्रावक–श्राविका समाज से मेरे द्वारा हुई किसी भी प्रकार की कोई भूल के लिए सहृदय क्षमायाचना करता हूं।

आप सभी के प्रति हार्दिक मंगलकामनाओं के साथ–

ओम अर्हम्

अरविन्द गोठी
मंत्री